देव भूमि सोलन (विशेषताएं)

डॉ. लेखराम शर्मा दर्शनाचार्य
एम.ए. (संस्कृत हिन्दी) पी.एच.डी.

हरि: इलेक्ट्रो कम्प्यूटर्स
दी माल – सोलन (हि.प्र.) 173212
फोन : 01792 – 222228, 226228, 98050 – 22028

वैज्ञानिक परम्परा सुमन–5

देव भूमि सोलन

आराधनम्

डा. लेखराम शर्मा, दर्शनाचार्य,
एम.ए.पीएच.डी.

गांव धाला, डा. देवठी, तह. व जिला सोलन, (हि.प्र.) पिन 173 211
संपर्क : 9805017550 एवं 01792–243950

वैज्ञानिक परम्परा सुमन–5

देवभूमि सोलन

आराधनम्
डा. लेखराम शर्मा, दर्शनाचार्य,
एम.ए.पीएच.डी.
गांव धाला, डा. देवठी,
तह. व जिला सोलन, हि.प्र.
पिन 173 211
संपर्क – 01792–243950, 9805017550

गीता जयन्ती, 23–12–2012

मूल्य–पचहत्तर रूपए

डिजाईनिंग व प्रिन्टिंग :–
हरिः इलैक्ट्रो कम्प्यूटर्स
विपरीत ऑरियन्ट इन्शोरैन्स, दी माल सोलन (हि.प्र.) 173212
फोन : 01792–222228, 226228, 98050–22028

प्रकाशन :–
नंदी प्रकाशन
नंदी ग्राम, सुबाथू रोड,
धर्मपुर, जिला सोलन,
हिमाचल प्रदेश–173209
फोन : 01792–265060
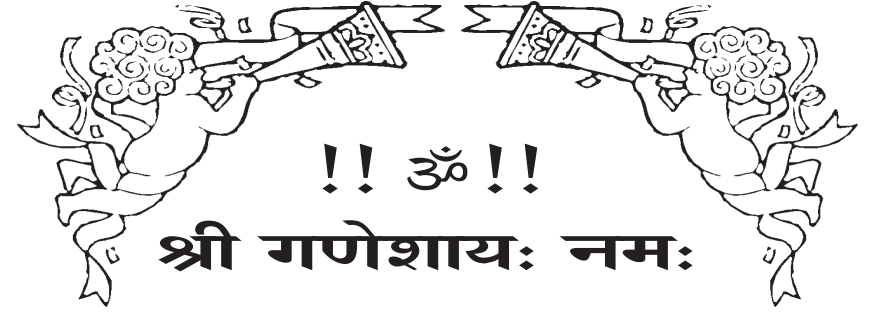
सादर समर्पित

उन समस्त परंपरागत वेद विद्याओं और करूणा से संपन्न अध्यवसायी गुरू रत्न महानुभावों के पावन करकमलों में जो मातृवत् अपने शिष्यों को अध्यात्मविद्या रूप गर्भों में धारण करके तथा वेदजननी गायत्री मंत्र की शिक्षा और दीक्षा देकर निरंतर सनातन संसार रूप परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं।

लेखक

—: हार्दिक आभार :—

विविध ग्रन्थों एवं पुस्तकों के लेखकों, दिव्य हिमाचल आदि समाचार पत्रों और अनेक विद्वान् सज्जन महानुभावों का जिन से प्राप्त महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का सदुपयोग इस रचना में किया गया है तथा पर्याप्त लेखन अवसर देने वाले मेरे परिवार सहित मुद्रण आदि के विशेषज्ञों का जिनके अमूल्य योगदान से यह रचना प्रकाश में आ सकी।

शूलिनी बुक स्टोर सोलन से प्राप्त
मेरे द्वारा पूर्व लिखित पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
क्षेत्रपति बीजेश्वर महादेव *(सोलन क्षेत्र के पारंपरिक प्रधान देवता की जानकारी)*	60/-
जय बघाटेश्वरी मां शूलिनी *(सोलन क्षेत्र की पारंपरिक प्रधान देवी की जानकारी)*	95/-

शूलिनी बुक स्टोर, राजगढ़ रोड, सोलन (हि.प्र.)
फोन : 92180-32892

विषय-सूचिका

क्र. विषय पृष्ठ

"पुस्तक प्रेमी भाई–बहनों से"

सोलन के आस–पास के इलाकों में जीने की कला को एक धर्म माना जाता है। हर जीव के जीवन का एक विशेष प्रयोजन है। हमारा जीवन परमात्मा की एक अमूल्य भेंट है। इसके पीछे का मुख्य प्रयोजन है–अपने, दूसरों के और सबके काम आना। हम किस तरह से दूसरों के काम आएं, इसकी खोज और अभ्यास हर एक आदमी के अपने अपने हैं। यह जीओ और जीने दो के नियम की नींव पर चलता है, जो एक पारस्परिक सहयोग पूर्ण व्यावहारिक प्रक्रिया है। सबके लिए जीने वाला व्यक्ति अनायास ही सबके काम आ जाता है। यही जीवन का धर्म, स्वाभाविक प्रवृत्ति या जीने की कला है। जीवन धर्म एक सर्व जनोपयोगी विज्ञान है। जो अपने जीवन के प्रयोजन को पहचानता है वह सबके जीवन के प्रयोजनों को भी पहचानता है। इसी पहचान में देवत्व समाया है। हम लोगों में से हर एक का जीवन विश्व के सुख और सौन्दर्य के लिए अनिवार्य है। हमारी श्रेष्ठता की साधना सबके जीवन को कैसे मंगलमय बनाए–इसी बात को केन्द्र में रखकर इस रचना को परोसने का विनम्र प्रयास

यहां किया जा रहा है।

मैं नहीं जानता कि किस अदृश्य प्रेरणा से मेरे जीवन के छोटे–छोटे प्रयास हर आम आदमी और उपेक्षित लोगों की चिंताओं के प्रति आर्द्र होते रहते हैं। इस दिशा में बढ़ते हुए मुझे अपने प्रयासों की कमियों का भी भान नहीं रहता। लगता है कि अगर मैं सचमुच सत् लक्ष्यपूर्ण दिशा की ओर बढ़ रहा हूं तो पारखी पाठक मेरी कमियों की भी परवाह नहीं करेंगे, स्वाद–स्वाद हजम कर लेंगे और बेस्वाद को यथावत् छोड़ देंगे। ठीक मधुकर वृत्ति की तरह, रसिक को केवल रसामृत से मतलब होता है, थोथा देय उड़ाय। हमारे आस पास बहुत से ऐसे लोग हैं, जो दिन रात कठोर मेहनत करने पर भी अपने जीने लायक प्राणवायु से भी वंचित रह जाते हैं। सर्वहितार्थ

उन जैसा पसीना न बहा सकूं, फिर भी कुछ उपयोगी भावों को लेकर मुझे आपकी सेवा में उपस्थित होते हुए हर्ष हो रहा है।

जयतु बघाट भारती

देव भूमि सोलन
(विशेषताएं)

देव भूमि हिमाचल प्रदेश के नौणी (सोलन) के पास धरजा गांव में कभी किसी पूर्वज को काली मां का सपना आया था कि वह वहां उसका मंदिर बनवाए। उसने बड़ी श्रद्धा के साथ वहां मदिर बनवाया और आज वह स्थान काली मां का स्थान माना जाता है तथा हर साल आश्विन नवरात्र की पड़वा को वहां मेला लगता है। काली मां को नया अनाज भेंट करके मन्नतें मांगी जाती हैं जो कि अक्सर पूरी भी हो जाती हैं। पूरे गांव और भक्तों पर मां की अवश्य कृपा होती है—ऐसी मान्यता है।

श्राद्धपक्ष में माना जाता है कि इन दिनों हमारे दिवंगत पूर्वज किसी न किसी रूप में हमारे घरों में उपस्थित होकर हमसे सात्विक भोजन की अपेक्षा करते रहते हैं। हमारी पूर्व पीढ़ियां खेती आदि के कामों में व्यस्त रहने पर भी इन दिनों पड़वा के दिन अपने समस्त पितरों को निमंत्रण देते थे और फिर हर दिन कम से कम एक कन्या को विधिवत् जिमाया करते थे। गाय, चींटी, कौआ, कुत्ता और जलीय जीवों को पका भोजन बिखेरा जाता है। इसे पंच बलिदान कहा गया है। बलि जीवों को दी जाती है, उनकी बलि (जान) ली नहीं जाती।

आम लोगों की राय होती है कि दूसरों को कुछ देना बहुत कठिन होता है, अपना गुजारा तो कौए और कुत्ते भी कर लेते हैं। दिव्य हिमाचल के अनुसार सोलन क्षेत्र के श्री जगत्राम सर्पदंश चिकित्सा करके दुःखियों की सेवा करते हैं। कहते हैं इन्होंने लगभग 5500 व्यक्तियों को लाभ पहुंचाया है। ये फोन पर ही केवल मंत्र शक्ति से यह सब करते हैं। 15 मिनट में रोगी ठीक हो जाता है। इस निःशुल्क सेवा का उन्हें 22 वर्षों का अनुभव है।

सोलन के ही श्री के.सी. कल्याण को संभवतः महर्षि वेद व्यास जैसी दिव्य दृष्टि की सिद्धि प्राप्त है, जो महाभारत के युद्ध के समय महर्षि वेद व्यास ने संजय को दूर से ही युद्ध देखने के लिए प्रदान की थी। श्री के.सी. कल्याण ने अपने गुरू श्री श्री पं. शशिमोहन बहल जी से यह विद्या प्राप्त की है तथा गत 32 वर्षों से जनसेवा में रत हैं।

सनातन वैदिक सिद्धान्त जोकि विश्व को जोड़ने में विश्वास रखता है को अपनाने से हमारे सभी काम सफल होते चले जाते हैं। अपनी प्रकृति को छोड़ने से हमारे स्वभाविक विकास में रोड़े पैदा होते हैं। जिस पौधे का जो धर्म होता है उसी से उसका विकास होता है। मनुष्य अपने धर्म या प्रकृतिको छोड़ नहीं सकता। वैदिक सनातन धर्म सृष्टि का संचालक और नियामक है।

तुलसी और सौंफ अपनी प्रकृति के अनुसार तीनों दोषों अथवा समस्त रोगों का शमन करते हैं। भस्म या राख प्रकृति के सूक्ष्म गुणों को धारण करती है। पौष्टिक औषधियों की भस्म हो तो बात ही कुछ और है। इसलिए यज्ञीय भस्म को अपने पास सुरक्षित रख लेने का रिवाज है। भगवान् शिव और प्राचीन ऋषि शीत निवारण हेतु इसको शरीर पर मलते थे। इसमें सूक्ष्म अग्निकण विद्यमान होते हैं। इसको हृदय पर धारण करने से अज्ञान दूर होता है। इससे विष भी दूर होता है और जख्म भरने लगता है। भस्म में एल्युमिनियम, पोटाश, सोडा बाइकार्ब, लोहा और मैग्निशियम आदि पोषक तत्व पाए गए हैं। आयुर्वेद विज्ञान ने यों ही विविध पदार्थों की भस्में नहीं बनाई हैं। त्रिपुंड्र पृथिवी, अंतरिक्ष और भगवान् शिव से जुड़ाव का प्रतीक है।

अपनी ईश्वरीय देन का विकास करने वाले हमारे क्षेत्र के पं. रमेशदत्त 15 साल की उम्र में अपनी नजर खो चुके थे। अंग्रेजी कवि मिल्टन ने सत्य ही कहा था कि प्रभू तूने मेरी नजर छीन कर अच्छा ही किया क्योंकि इससे मैं कुछ विलक्षण कर सका। रमेश ने भी प्रभाकर, एम.ए., एम.फिल आदि करके स्व. गुरू राजगायक अनंतराम चौधरी से संगीत विद्या प्राप्त की, ये पिछले 28 वर्षों से संगीत के पटियाला घराने की निरंतर सेवा कर रहे हैं।

वैदिक परम्परानुसार हमारे समाज में पुरोहित

को साक्षात् देवगुरू बृहस्पति का स्थान प्राप्त है। ये यज्ञों में देवताओं को लाते हैं। यजमान और देवताओं का परस्पर वार्तालाप करवाते हैं। ये योद्धा भी होते हैं। भगवान् परशुराम और द्रोणाचार्य इसके उदाहरण हैं–शस्त्रे शास्त्रे च कौशलम्। पुरोहित हमें भूत–पिशाचों या मनोरोगों से भी छुटकारा दिलाते हैं।

पहाड़ भारत का मस्तक है। जब शासक का सिर फिरता है तो पहाड़ कैसे नादानी करता। दूसरे विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की मदद करने के लिए सिरमौर के राजा को नए सैनिकों को भरती करने की जरूरत पड़ी। उसने इसके लिए अपनी शक्ति का दुरूपयोग किया। पझौता क्षेत्र की किसान सभा ने इस ज्यादती का विरोध किया। वैद्य सूरत सिंह इस आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता थे। 1939 में इनको प्रजामंडल में सफलता मिली। 1941 में भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए। आम जनता ने अत्याचारों के विरोध में आवाज उठाने वाले वैद्य को 1953 में अपना नेता चुन कर विधान सभा में भेजा। वे दो बार खादी ग्रामोद्योग के अध्यक्ष रहे। इस प्रकार एक महान् पहाड़ी वीर ने भारत का मस्तक ऊंचा किया।

हमारे जीवन का विकास सकारात्मक या रचनात्मक सोच और कार्यों पर निर्भर करता है। अपनी असफलता के सामने घुटने टेकने वाला कभी आगे नहीं बढ़

सकता। रचनात्मक सोच हमें हमारी मुश्किलों को भी सरल बना देती है। जन्म से कोई भी नकारात्मक नहीं सोचता। परिस्थितियों से हारने वाला आदमी नकारात्मक सोच वाला हो जाता है। अपनी सुनीति पर सदा विश्वास रखना जरूरी है। सही उसूल ही हमें सही दिशा की ओर ले जाते हैं।

बघाटी सृजन की दिशाओं को देखकर लगता है कि बघाट या सोलन कोई स्थानवाचक शब्द नहीं बल्कि पूरी पहाड़ी जीवन शैली को अपने साथ में समेटे हुए है। कालका–शिमला तथा बिलासपुर–सिरमौर के बीच बोली और खेती–बाड़ी आदि के तौर तरीके और पारिवारिक जीवन शैली एक से नजर आते हैं।

हमारे यहां आम आदमी और जनसमाज के लिए काम करने वालों तथा शासकों के अत्याचारों का जमकर विरोध करने वाले व्यक्तियों को अपना नेता या शासक चुनने की परम्परा रही है। आज इस परम्परा पर निठल्ले और तिकड़मी लोग हावी हो रहे हैं। राजनीतिक दलों में ऐसे लोग शामिल हो जाते हैं का संगठन हो गया है जो आम आदमी को धोखा देने में चतुर हों। हम व्यक्ति और वादों की बजाए सर्वोपयोगी सिद्धान्त को चुनें।

घृणा भाव के प्रति सहनशीलता के लिए पार्वती माता का एक रूप अलक्ष्मी माना गया है। इन्हें धूमावती भी कहते हैं। ये ज्येष्ठा या बड़ी हैं। ये भिक्षा, दरिद्रता, भूख,

भूकंप, सूखा, बाढ़, रूदन, वैधव्य, पुत्रसंताप और कलह की प्रतीक या प्रतिमा मानी जाती हैं। यहां तक कि भूखी होने पर भगवान् शिव को ही निगल गई। ये माया से बाहर हैं तथा बगला या पीतांबरा कहलाती हैं। अमंगल की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनके केश खुले तथा हाथ में शूप लिए हुए हैं। ये शत्रुओं को भयभीत करती हैं। मन से दयालु हैं। मलिन वस्त्र पहन कर दरिद्रता के साथ ताल–मेल बनाए रहती हैं। संभवतः कुकर्म का फल देने के लिए ऐसे रूप की अनिवार्यता हो। पुनरपि सत्कर्मियों पर इनकी निरंतर कृपा बनी रहती है।

संपूर्ण जिला सोलन के समस्त भागों को आपस में जोड़ने वाला एक सुंदर स्थान कहीं है तो वह कुनिहार है। यह पांच विधानसभा क्षेत्रों को आपस में जोड़ता है। यह एक समतल स्थान और मुख्य व्यावसायिक कें‍न्द्र है। इसके चारों ओर की सुंदर पहाड़ियां इसकी शोभा को बढ़ाती हैं। इसके समुचित विकास के लिए लगभग बेकार पड़ी इसकी विस्तृत शामलात जमीन काफी है। इस स्थल का उपयोग अगर प्रदेश की संस्कृति के संरक्षण और अनुसंधान हेतु किया जा सके तो बहुत लाभदायक होगा। संस्कृत या कर्मकांड विश्वविद्यालय के लिए भी यह निस्संदेह एक उपयुक्त जगह है।

वास्तव में हमारा जीवन एक दृष्टि या नजरिया

है। नजरिया ठीक है तो सब कुछ ठीक है। हमारा नजरिया ठीक नहीं तो हमने अपना सब कुछ खो दिया। हमारी आंखें ही तो सब कुछ हैं। शरीर यात्रा विना आंखों के ठप हो जाए। जीवन चलने का नाम है, चलें कैसे? रास्ता देखकर। अगर नजर साफ है तो रास्ता कठिन नहीं होता। हमारी सारी जीवन यात्रा हमारे नजरिये पर निर्भर करती है। हमें अपना रास्ता अपने आप चुनना और देखना पड़ता है। जो कुछ हम अपनी मोटी आखों से देखते हैं वह तो केवल मिट्टी–पानी से बनी हमारी इंद्रियां देखती हैं। हमारे अंदर का जो पदार्थ इन इंद्रियों को भी देख सकता है वह असली देखने वाला है। जब हम देखने का सारा काम उस अंदर के देखने वाले के ऊपर छोड़ देते हैं तब दुनियां को असली देखने वाला मिल जाता है। उसकी नजर की सुंदरता को जिसने पा लिया वह मानो निहाल हो गया।

उपरोक्त प्रकार का नजरिया पाने वाले लोगों में गांव नहरा–खंडोल में एक पूर्वजन पंडित श्री राम दयाल जी हुए जिनके संस्कारों से सराबोर उनके सुपौत्र पं. श्री मुनिलाल जी अभी तक समाज सेवा के लिए समर्पित हैं। विडम्बना यह कि ये उस समय केवल चार साल के थे जबकि उनका प्रयाण हो गया था। कहा जाता है कि आज से लगभग सौ साल पहले इस गांव में इनका आश्रम (पाठशाला) चलती थी। उस पाठशाला की समय परिचायक घंटी आज

भी पूर्वजनों की स्मृति के रूप में श्री गिरिराज के पास है जिसे ये अपने ठाकुर (पंचायतन देवता) के पास रखते हैं तथा विशेष पूजाओं के अवसर पर बजाते हैं। उस काल में इस गांव को छोटी काशी माना जाता था और दूर–दूर से संस्कृत और पौरोहित्यादि विद्याएं सीखने के लिए उनके पास विद्यार्थी आते थे। परम्परानुसार शांगड़ी के ब्राह्मण इस (हमारे) गांव के पुरोहित होते हैं। एक बार रामदयाल जी ने महसूस किया कि पौरोहित्य के लिए मशहूर शांगड़ी के ब्राह्मण वेदज्ञान की अल्पता के कारण पौरोहित्य कार्य में निर्बल होते जा रहे हैं। उन्होंने उस हालत में उस गांव से एक बालक देवीदत्त को अपने पास वेदादि पढ़ने हेतु अपनी पाठशाला में रखा था। आज भी ब्राह्मणसभाओं के आयोजनों में शांगड़ी के ब्राह्मणों की विशेष भूमिका रहती है।

आचार्य रामदयाल जी ने उसे शिक्षा–दीक्षा देते समय नवार्ण मंत्र देकर कहा था कि यह मंत्र केवल यहीं तक सीमित नहीं है। बालक की जिज्ञासा बढ़ी और नवार्ण के व्यापक रूप की खोज में निकल पड़ा। कहते हैं कि वे रेल में टिकट लेकर बैठ तो गए लेकन अपनी मंजिल के पते के बगैर ही। दिल्ली से पूर्व किसी साथ के यात्री ने पूछा कि कहां जाओगे? उत्तर मिला, कोई पता नहीं। यात्री हैरानी से बोला, क्या जानते हो? उतर मिला, वैद्य हूं। यात्री ने उपकार स्वरूप बताया, सीधे अहमदाबाद चले जाओ।

वैद्य जी अहमदाबाद पहुंच तो गए लेकिन नयी जगह पर ठहरने का ठिकाना मुश्किल से ढूंढकर वहां केवल भूने चने खाकर आठ महीने गुजार दिए। उस आड़े वक्त में पास में केवल चार दवाएं थी और बाकी दिखाने के लिए चार रंगीन पानी की बोतलें, भला बेपहचान परदेसी से कौन बुद्धू दवा लेता। आखिर एक दिन गांधी जी के आश्रम का कोई गरीब सेवक अपनी बीमारी की समस्या लेकर उनके पास पहुंचा। सौभाग्यवश उनकी वह दवा निशाने पर लग गई। उससे उनकी मशहूरी बढ़ने लगी। ज्यों ज्यों ग्राहकों की संख्या बढ़ी त्यों–त्यों उनका कारोबार बढ़ने लगा। उन्हें तो अपने जीवन हेतु किसी और चीज की तलाश थी। उस तलाश में वे देश के मशहूर शाक्त उपासकों की शरण में पहुंच गए, जिनमें से अमृतसर के किसी संस्कृत महाविद्यालय के एक मशहूर प्राचार्य भी थे जो ठेठ वाममार्गी थे परन्तु विद्वत्ता में अद्वितीय थे। संभवतः उन्हीं से उन्हें तथा शत्तल गांव के स्व. पं. शोभा राम को शाक्त दीक्षा मिली थी। दीक्षा गुरू से जुड़ी ये घटनाएं बनारस से जुड़ी भी मानी जाती हैं। यहां तक कि काशी वाले विद्वान् भी उनकी उपासना और विद्या का लोहा मानते थे। खैर।

मैं लभगभ तीस साल पहले चंडीगढ़ में (अब स्व.) वैद्य देवीदत जी के पास उनके निजी मकान में ठहरा था। वे अजीब कुशाग्र बुद्धि होने पर भी व्यवहार बिल्कुल

शिशुओं जैसा अति सरल करते थे। ठेठ बघाटी बोली में बात करते। मुझे उनके यहां बिल्कुल अपने घर जैसा लगा था। शास्त्र या अध्यात्मविज्ञान पर मैंनें उनकी अद्भुत पकड़ देखी थी जो उनके सरलतम व्यवहार में अनायास ही झलक उठती थी। बात–बात में परोक्षतः शक्तिमंत्र की दीक्षा लेने के लिए प्रेरित करते रहते थे। वे कहते थे कि समस्त शास्त्र तभी फलीभूत होते हैं जब पास में शक्तिमंत्र की उपासना का बल हो। मुझ से मिलने पर इतने उत्साहित हुए थे कि गांव नहरा खंडोल की प्राचीन उपासनात्मक गतिविधियों और उपासकों का गुणगान किए बिना न रह सके। आदरणीय चाचा पण्डित श्री मुनिलाल जी के पूर्वजों के द्वारा नदी के जल में खड़े होकर कठोर उपासना परम्परा के बारे में सुनकर तो मैं स्वयं भी हतप्रभ सा रह गया था। मैं समयाल्पता और संकोचवश उनकी गहन विद्या का तनिक भी लाभ न उठा सका। अपने जीवन के अंतिम समय में वे किसी कारण सोलन के समीप आकर रहने लगे थे, जहां से उन्होंने अनेक विद्वानों को अपनी मंत्र दीक्षा से लाभान्वित करके अपने जीवन को सार्थक बनाया। उनका कहना था कि अपने गुरू श्री राम दयाल जी से विसर्गों के सही उच्चारण को सीखने के लिए कई बार खड़ांऊ तक की मार खानी पड़ी थी। गुरू–शिष्य की यह कठोर परम्परा परिणाम में खाली नहीं गई। आज भी उसका प्रभाव गांव नौरा खंडोल और शांगड़ी

में समान रूप से देखा जा सकता है, जहां के लोग जीवन के वास्तविक लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर हो रहे हैं।

इस दिशा में मैं गायत्री युवा मंडल नौरा खंडोल के प्रयासों की सराहना किए विना नहीं रह सकता। यह कर्मठ नौजवानों का मंडल है। गायत्री मां के प्रति इनका समर्पण देखते ही बनता है। सभी उपयुक्त समय देखते हैं और गायत्री मंदिर में यज्ञ या भंडारे का आयोजन करते रहते हैं। श्रीमद्भागवतकथा यज्ञ की ठानी तो वह भी सफलता पूर्वक कर डाला। भगवान् की कथा या इतिहास अपने आप में एक प्रेरक यज्ञ है। इसके सुनने से जीवन को सार्थक बनाने का रास्ता मिलता है। अपने हाथों से खोदकर मैदान बना डाला। वर्षा रोधी मजबूत पंडाल की रचना देखकर लोग दंग रह गए थे। अपनी ताकत का सर्वोपकारी दिशा में उपयोग करने वाले नौजवान ही सदा प्रशंसनीय होते हैं। सबसे पहले उन्होंने अपने आयोजन का प्रस्ताव अपने पड़ोसी लोगों के पास रखा। भरपूर समर्थन मिलना शुरू हुआ तो मिलता ही चला गया। समर्थकों ने तन, मन या धन में से कुछ न कुछ जरूर दिया। भगवत्प्रेमियों की शक्ति जुड़ती चली गयी और एक बड़ी शक्ति बन गयी। सहयोग दाताओं में आठ यजमान आठ दिनों तक क्रमशः एक–एक कर के पूजा में भाग लेते रहे। आयोजन के संकल्प में समस्त जनों, ग्रामों और विश्वकल्याण के लिए भगवान् से प्रार्थना की

जाती थी। प्रातः सायं तो कथास्थल पवित्र तीर्थ जैसा आनंद देता था। व्यास युवकमंडल द्वारा शोधी से एक नवयुवक चुना गया। आज से पच्चीस साल पहले तक व्यासों के लिए स्पाटू ने खूब नाम कमाया था। वे स्वतंत्र रूप से लोकविख्यात कथावाचक रहे। उसके बाद कथा वाचकों के लिए लगभग अब तक सोलन क्षेत्र विख्यात रहा, जिनमें अंशकालिक कथावाचक अधिक रहे। अब स्वतंत्र रूप से कार्य करने वालों का गढ़ शोधी बन गया है। वहां के व्यासों की यह विशेषता है कि वे या तो किसी पुराणप्रशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त हैं या फिर अपने पूर्वजों की परंपरा से ही दीक्षित और प्रशिक्षित हैं। उनकी कथा शैली में कथा के अंदर ही संगीत जैसा रस होता है। कुछ व्यासों ने वाद्यादि संगीत को भी अपनी कथा के साथ जोड़ दिया है परन्तु वह संगीत तभी तक सुखद रहता है जब तक वह कथा का अनुज बन कर चले अगर वह अग्रज बन जाए तो मूल कथा के रस को घटा देता है। देवभूमि से जुड़े हम सभी लोग इस बात के लिए बहुत भाग्यशाली हैं कि यहां की पुराण कथाएं यथापरंपरा ठेठ शास्त्रीय विधि और ईमानदारी से मूल संस्कृत पाठ के साथ सम्पन्न की जाती हैं। सामूहिक धार्मिक उत्सव सुखद भविष्य की नींव बनते जा रहे हैं।

दैववश अपनी संस्कृति और परम्पराओं से

भूले–भटके नौजवान उससे जीवन में होने वाले नुकसान से निरन्तर परिचित होते जा रहे हैं। उनके जीवन के लिए सम्पूर्ण वेदों का सार श्रीमद्भागवत् कथा यज्ञ निरन्तर संबल बनता जा रहा है। इस यज्ञ के प्रभाव से उनके जीवन से छल, नशा, पापाचार और व्यभिचार दूर होते जा रहे हैं। सबके अंदर अपनी दिव्य भारत भूमि के प्रति स्वाभिमान जाग रहा है। यह हमारे लिए गौरव की बात है।

आजकल अपने तक ही सीमित छोटे परिवारों को पुराणयज्ञ करवाना कठिन होता जा रहा है। धन ही सब कुछ नहीं होता। इस पवित्र आयोजन के लिए तो श्रद्धा, समर्पण और प्रेम या मिलनसारता चाहिए। हमारे नवयुवक भाइयों ने सामूहिक रूप से इस प्रकार के आयोजनों का जो आदर्श पेश किया है, वह सबके लिए एक सुंदर प्रेरणा है। ऐसे ही प्रसंगों में वास्तव में प्रेम की गंगा बहती है। अनेक श्रद्धालु श्रोताओं ने इनके सेवा भाव को हृदय से सराहा है। आयोजन में सम्मान्य पंडितमंडली की आशीष रूप सेवाएं भी सराहनीय बनी रही। ध्वनि और पंडाल का प्रबंधन सबेरे पांच बजे भजन बजा देता तो सभी पंडित, यजमान और भगवत् प्रेमी नहा–धोकर संध्यादि नित्यकर्म करके छः बजे पूजन में लग जाते और व्यास मूल पाठ में। निमंत्रित श्रोतागण बारह बजे विश्राम के समय कथास्थल पर पहुंच जाते। एक बजे व्याख्यान आरंभ हो जाता। हर श्रोता इस बात का ध्यान

रखता कि समस्त व्यस्तताओं के बावजूद भी आठ दिनों में से कम से कम एक दिन भगवत्कथा श्रवणार्थ समर्पण करना ही है। इससे व्यास का भी उत्साह बढ़ जाता और कथाप्रेमियों को कथा के रसग्रहण में बाधा न पड़ती। सपर्पित विद्वान् पिता, गुरू और संस्थान विलक्षण संस्कार देते हैं। प्रशिक्षित नवयुवक व्यासों का कार्य इसलिए भी स्तुत्य हो गया है कि बहुत ही नपे–तुले सारग्राही शब्दों में वे सब कुछ कह जाते हैं जो कुछ भी उन हजारों श्लोकों में समाया है। समस्त वैदिक विद्याओं की तरह पुराणों का मूल तात्पर्य भी मुक्ति या परमानन्द का अनुभव करवाने में है। गोमुख से प्रकट होती हुई गंगा मां की तरह भगवान् की कथा प्रकट होती हुई सागर में मिलन की तरह परमानन्द में जाकर मिल जाती। हर कथा का यही अंजाम होता और श्रोता विशेषानंदानु भूति के साथ सानंद घर लौटता तथा अपने जीवन व्यवहार को भी वही कथा वाला अंजाम देते हुए अपने अमूल्य जीवन को सार्थक बनाने लगता। अपने स्वाभाविक कामों को अपने इष्ट देवता को समर्पित करने में ही तो हमारे जीवन की सार्थकता है।

अपने दैनिक जीवनव्यवहार में हम इतने परदेसी हो गए हैं कि न अपने देशी महीनों के नाम जानते हैं और न उनकी दिन संख्या। जनवरी–फरवरी आदि पर ही हमारा सारा कारोबार निर्भर होने लगा है। जबकि कालपुरूष के

देसी चैत्र–मासादि महीने नितांत प्राकृतिक हैं और निरंतर प्रकृति के साथ जीने की प्रेरणा देते रहते हैं। हमारे सारे सामाजिक व्यवहार और वैदिक यज्ञ–कर्मकांडादि तो सर्वथा उसी पर निर्भर होते हैं। हमारे अपने देसी महीनों की दिन संख्या निम्न प्रकार से है :–

मास	दिन
चैत्र	30
वैशाख	31
ज्येष्ठ	31
आषाढ़	32
श्रावण	31
भाद्रपद	31
आश्विन	30
कार्तिक	30
मार्गशीर्ष	30
पौष	29
माघ	30
फाल्गुण	30

हमारे मासों में सबसे बड़ा **आषाढ़** और सबसे छोटा **पौष** होता है।

अपने देश के जलवायु को निर्धारित करने वाली

घूमती हुई पृथ्वी की स्थिति को भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। पृथ्वी के दो भाग हैं, उत्तरी गोलार्ध और दक्षिणी गोलार्ध। उत्तर गोल उत्तरी ध्रुव की ओर तथा दक्षिण गोल दक्षिणी ध्रुव की ओर है। निम्नांकित चार महत्त्वपूर्ण दिनांकों से हम इसे अनुभव कर सकते हैं :–

(क) 20 मार्च–सूर्य का उत्तर गोल में जाना आरंभ, सूर्य उत्तरायण, बसंत ऋतु, दिन–रात समान

(ख) 20 जून– वर्ष का सबसे लंबा दिन और सबसे छोटी रात, सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु आरंभ

(ग) 22 सितम्बर–सूर्य किरणें दक्षिण गोल पर समीप से पड़ना आरंभ, सूर्य दक्षिणायन, वर्षा ऋतु, दिन–रात समान

(घ) 21 दिसम्बर–वर्ष का सबसे छोटा दिन और सबसे लम्बी रात, सूर्य दक्षिण गोल में, उत्तरायण

20 मार्च और **22 सितम्बर** के दो दिनांकों में सूर्य क्रमशः भूमध्य रेखा और उत्तर ध्रुव तथा भूमध्यरेखा और दक्षिण ध्रुव की मध्यरेखाओं के निकट होता है। इन्हीं रेखाओं पर जलवायु भी समशीतोष्ण रहता है जबकि 20 जून और 21 दिसम्बर को क्रमशः उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव की ओर जाकर सूर्य क्रमशः अत्यधिक समीपता और दूरी बनाकर चरम गर्मी और शीत पैदा करता है। धरती के धूमने की इस क्रीड़ा की अनुभूति सचमुच हृदय में आनंद भर देती

है। कभी कभी लगता है कि हमारा जन्म मरण चक्र भी इसी क्रीड़ा का परिणाम है। शायद जन्म–जीवन–मरण की इसी क्रीड़ा के दर्शक या साक्षी बनना ही परमानंद या परमेश्वर की प्राप्ति है। इसी क्रीड़ा के नियामक क्रमशः भगवान ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं। यही संसार में आने और जाने का केन्द्रबिन्दु है।

स्नेहपूर्ण वात्सल्य से परिपूर्ण हमारी माताओं की हमारे जीवन के विकास में कोई कम भूमिका नहीं है। कार्तिक कृष्णाष्टमी को यही माताएं हमारी सुरक्षा खुशहाली, कल्याण मय जीवन और दीर्घायु के लिए व्रत लेती हैं। उपवास में हमारी सद्भावना प्रबल होती है। इसी अष्टमी को अहोई अष्टमी भी कहते हैं। धर्मसिंधु और विविध पुराणों में इसका विवरण है। यह बेटे या बेटी की संतान के हितार्थ भी लिया जाता है। यह निराहार और निर्जल होता है। अहोई माता की बच्चों सहित गन्ने और भोजनादि की पूजा की जाती है तथा मिट्टी के बर्तन में जल मिष्ठान और उपहार रखे जाते हैं। शाम को तारों सहित बेटा या बेटी की आरती, तिलक और पूजन करके उनको उपहारादि देकर व्रत खोला जाता है। यदि बेटा या बेटी घर से दूर हो तो उनके प्रति निधि रूप अखरोट का तिलकादि किया जाता है। बच्चों को प्रसन्न रखा जाता है। इस व्रत के माध्यम से हम उपकारी जीवों का सफल आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

व्रत का इतिहास : एक साहूकार के सात बेटे और बहुएं तथा एक बेटी थी। उस बेटी द्वारा जंगल में मिट्टी खोदते समय एक सेई के बच्चे की मौत हो गई। उसके दंड स्वरूप सबसे छोटी बहु को अपनी कोख बंधवानी पड़ी। उसने स्याऊ (अहोई) माता की सेवा की जिसने उसकी कोख खोल दी। स्याऊ माता का धन्यवाद करने के लिए समस्त माताएं उस दिन से अपने बेटे–बेटी की खुशहाली, दीर्घ और कल्याणमय जीवन के लिए अहोई माता का व्रत रखती हैं। संसार परोपकारी जीवों का खजाना है।

सोलन क्षेत्र में मनाए जाने वाले मुख्य त्योहार निम्न अंग्रेजी महीनों में आते हैं :–

चैत्र नवरात्रारंभ लगभग 20 मार्च को

बिशु	अप्रैल मध्य	बैसाखी
अक्षय तीज	अप्रैल अंत	भगवान् परशुराम जयंती
निर्जला एकादशी	मई अंत	
व्यास पूजन	जुलाई आरंभ	गुरू पूजन
राखी	अगस्त आरंभ	
जन्माष्टमी	अगस्त आरंभ	
गुग्गा नवमी	अगस्त मध्य	मेला स्पाटू–गगैड़ी
कुशोत्पाटिनी अमावस	अगस्त मध्य	
कलंक (पत्थर) चौथ	सितम्बर मध्य	
ऋषि पंचमी	सितम्बर मध्य	स्त्री पाप निवारक व्रत

शरद नवरात्रारंभ	अक्तूबर मध्य	
दशहरा	अक्तूबर अंत	
शरद् पूर्णिमा	अक्तूबर अंत	औषधीय खीर निर्माण
धन तेरस	नवम्बर मध्य	भगवान् धन्वतरि का पूजन
भाई दूज	नवम्बर मध्य	
विश्वकर्मा पूजा	नवम्बर मध्य	इंजीनियरिंग व कारीगरी के देवता
देवठन	नवम्बर अंत	भगवान् विष्णु का जागना
कार्तिक पूर्णिमा	नवम्बर अंत	मेला बोहच (बघाट की राजधानी)
माघी	जनवरी मध्य	

हर तीसरे साल आने वाले अधिक चंद्रमास में ऊपरोक्त सभी त्योहार लगभग 30 दिन विलंब से आते हैं। हमारे यहां काल, समय या वर्ष को भी मनुष्याकार माना गया है। संसार में हर चीज का सिर–पैर होता है। चैत्र के नवरात्र उसका सिर, वर्षा ऋतु का आरंभ उसकी छाती, शारदीय नवरात्र कमर और दिसंबर–जनवरी पैर माने गए हैं।

उपरोक्त त्योहारों के अलावा अनेक त्योहार विभिन्न देवताओं से संबन्धित ऐसे हैं जिन्हें कोई बिरले ही लोग मनाते हैं। कोई भी त्योहार मुख्य हो या गौण, वह विशिष्ट देवता से जुड़ा होने के कारण किसी भी शुभ कार्यारंभ के लिए उसका पूजन उत्तम माना जाता है। किसी

भी देवता के निमित्त किए जाने वाले अनुष्ठानदिवसों के बीच कोई त्योहार भी आता हो तो उसकी शुभता बढ़ जाती है, विशेषकर हवन त्योहारदिवस पर ही रखा जाता है। देवी के अनुष्ठान देवी के त्योहार में, देवता के अनुष्ठान देवता के त्योहार में और ब्रह्मा–विष्णु–शिव आदि के अनुष्ठान उन्हीं से जुड़े त्योहारों में विशेष शुभ माने जाते हैं। यह युक्तियुक्त भी है क्योंकि सजातीय चीजें सजातीय चीजों से और विजातीय चीजें विजातीय चीजों से मेल खाती हैं। इस काल के कार्यों के परिणाम भी सुन्दर और अनुकूल होते हैं।

हमारे कुछ गौण त्योहार निम्न प्रकार से हैं :–

नागपंचमी	मार्च अंत	
स्कन्द षष्ठी	मार्च अंत	कार्तिकेय से जुड़ा
दुर्गाष्टमी	मार्च अंत	
रामनवमी	अप्रैल आरंभ	
गंगा जन्म	अप्रैल अंत	देवी से जुड़ा
सीता जयंती	अप्रैल अंत	
कूर्म जयंती	मई आंरभ	विष्णु अवतार
बुद्धपूर्णिमा	मई आरंभ	विष्णु अवतार
भद्रकाली एकादशी	मई मध्य	काली
वट–सावित्री अमावस	मई मध्य	देवी–देवता
गंगा दशहरा	मई अंत	देवी

रथ यात्रा	जून अंत	जगन्नाथ
कुमार षष्ठी	जून अंत	कार्तिकेय
विष्णु शयनोत्सव	जून अंत	
शिव शयनोत्सव	जुलाई आरंभ	
गोकुलाष्टमी	अगस्त मध्य	श्री कृष्ण
गौरी तीज	सितम्बर मध्य	दुर्गा
सूर्यषष्ठी	सितम्बर अंत	
राधाष्टमी	सितम्बर अंत	देवी
वामन जयंती	सितम्बर अंत	विष्णु अवतार
अनंत चतुर्दशी	सितम्बर अंत	विष्णु
हनुमान् जयन्ती	नवम्बर मध्य	
नरक चतुर्दशी	नवम्बर मध्य	यमराज

इस प्रकार सभी त्योहारों के साथ अपने आराध्य अनुष्ठान के अधिष्ठातृ देवता का संबंध जोड़ कर पूजा के आरंभ और अंतिम दिवस का निर्धारण किया जाता है। यजमान के नामाक्षर के अनुसार कार्यारंभकालिक शुभ चंद्र के साथ भद्रारहित समय देखना भी जरूरी है।

हमारे शरीर, मन और आत्मा की स्वच्छता के लिए हमारे पूर्वजों ने त्योहारों और तीर्थों का निर्धारण किया है। इन्हीं में से कुंभ का मेला विश्वविख्यात है। इस मेले की अपार भीड़ को देखकर किसी विदेशी विद्वान् ने एक

तीर्थयात्री से पूछा था कि इन सब लोगों को निमंत्रण की व्यवस्था कैसे की गई। प्रश्न स्वाभाविक है परन्तु सृष्टि के विकास से जुड़ी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं से हम कैसे जुड़ें हैं, इसका उत्तर हर कोई विद्वान्, भी नहीं दे सकता, मेरे जैसे साधारण आदमी की तो बात ही क्या। ये हर बारह साल के बाद हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग और नासिक में क्रमशः आयोजित होते रहते हैं। ये हमारे मेलों की रीढ़ हैं। कुंभ के मेले में विश्व का सबसे बड़ा जनसागर उमड़ता है। यह विश्व भर के मेलों का पिता है। यहां कुंभ का मतलब है अमृत का कुंभ, जो देवासुरों के सांझे प्रयत्नों से समुद्रमंथन से निकला था। विश्वोपकारार्थ किए गए प्रयत्नों में से ऐसे ही रत्न निकलते रहते हैं। इस अमृत को बांटने के लिए देवताओं और असुरों में बारह वर्षों तक आपस में युद्ध चलता रहा। देवराज इंद्र का पुत्र जयंत देवानुमति से अमृतकुंभ को ऊपरोक्त चार तीर्थ स्थानों पर छिपाता फिरा था। सूर्य, बृहस्पति और चन्द्रमा ने इस कुंभ को असुरों के हाथ लगने से बचाया था। स्वार्थियों या असुरों के हाथ अमृत या दीर्घायु लगने से विश्व का विनाश निश्चित था। विश्व का कल्याण उसी अवस्था में है जिसमें कि अमृत परोपकारी देवताओं के संरक्षण में रखा रहे। इसी परोपकार की वृत्ति रूप अमृत को देवताओं के संरक्षण में रखने की परंपरा को हर चौथे साल कुम्भ के मेले के रूप में निभाया जाता है।

इन्हीं ऊपरोक्त तीन ग्रहों (देवताओं) के विशेष राशियों में आने पर यह मेला मनाया जाता है। कुंभ मेला हमारे सांसारिक और आंतरिक दुःखों को दूर करता है।

विश्वकल्याण के प्रति हम कितने सावधान हैं, इसका पता जल, जंगल और जमीन के संरक्षण के प्रति किए गए हमारे प्रयासों से चलता हैं। जंगलों को बेरहमी के साथ उजाड़ने से वहां के जीव–जंतु अपनी भूख और प्यास को बुझाने के लिए हमारे खेतों और घरों पर हमला कर देते हैं। पानी की बर्बादी हमारी आदत को बिगाड़ देती है। पहले जहां एक बाल्टी पानी से परिवार भर के बर्तन मांजे जाते थे वहां अब हम उन पर नल्के से कई बाल्टियां बहा देते हैं। इस बुरी आदत से हमारे लिए पानी कम पड़ गया तो दूसरों को कोसते हैं। विना साबुन लगाए नहाने के लिए चार बड़े मग्गे पानी काफी होता है। जबकि हम 15–20 मग्गे अपने सिर पर ही उंड़ेलने से बाज नहीं आते। अधिक पैसों की चाह में हम सड़कों की ओर भागने लगे हैं। पास पड़ी हुई जमीन और चीजों का हम आदर नहीं करते। हमारे जीवन का लक्ष्य केवल पद, पैसा और पावर ही नहीं है, इनके पीछे भागकर हम मानसिक तनाव के साथ शारीरिक रोग भी मोल ले लेते हैं। लोकतंत्र के नाते हमें ऐसे नेताओं को ही मतदान करना चाहिए जो जल, जंगल और जमीन की रक्षा और विकास में हमारा सहयोग करें। मतदान का मतलब है,

अपने विचार का दान करना। विचार का दान सुपात्र को किया जाता है, कुपात्र को नहीं। सुपात्र वही हो सकता है, जिस उम्मीदवार के साथ हमारे विचार मेल खाते हों। इस बारे में सबसे बढ़िया विचार समस्त गरीब–अमीर भारतवासियों के लिए समान रूप से आर्थिक आधार पर आरक्षण हो सकता है। हमारे विचारों का आधार हमारी चेतना या आत्मा है, जिस पर हमारा जीवन टिका है। अपने विचारों या चेतना को डर या प्रलोभनवश बेच देने से हम अपने मूल्यवान् जीवन को खतरे में डाल देते हैं। ऐसा हो जाने से हमारा जीवन धीरे–धीरे क्षीण होकर नष्ट हो जाता है और एक दुर्लभ मानव शरीर डर या प्रलोभन की भेंट चढ़ जाता है।

हम सभी श्रेष्ठ विचारों के मालिक बनें, इसके लिए हमें श्रेष्ठ देवमंत्र की उपासना करनी होगी। मंत्र एक ध्वनि है। ध्वनि देवता का रूप या गुण है। ध्वनि साक्षात् ब्रह्म है। यह भगवान् का अप्रकट रूप है। मंत्र एक या अधिक अक्षरों का समूह है। ध्वनि के प्रभाव के कारण मंत्र में भी प्रभाव पैदा होता है। रोने की ध्वनि से दया और जयकार की ध्वनि से उत्साह पैदा होता है। ध्वनि की तरंगों व किरणों से समस्त विश्व व्यवहार नियंत्रित होता है। मंत्रोपासना हमारे अंदर देवत्व या श्रेष्ठ गुणों को बढ़ाती है।

हमारे घरों में सदा सफाई रहे तथा ज्ञान

(विवेक) का प्रकाश बना रहे, इसके लिए पुराणकथाएं हमें सचेत करती रहती हैं। स्वच्छता और ज्ञान के समीप ही स्वास्थ्य और समृद्धि पनपते हैं। एक बार किसी बात से नाराज होकर विष्णु भगवान् ने लक्ष्मी को शाप दिया कि तुम पृथ्वी पर किसान के घर में एक साल तक निवास करो। वे एक अतिनिर्धन किसान के घर जा कर बस गई। किसान ने उनकी पूरी सफाई के साथ सेवा की। उनकी कृपा से किसान भी खूब फला–फूला। उचित समय पर विष्णु जी उन्हें लेने किसान के घर आए तो न तो किसान लक्ष्मी जी को त्यागना चाहता था न सेवा से प्रसन्न लक्ष्मी किसान को त्यागना चाहती थी। किसान के आग्रह को देखते हुए लक्ष्मी ने किसान को एक उपाय बताया कि अगर मेरी उपस्थिति सदा अपने घर में चाहते हो तो कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन घर की सफाई करके एक घी का दीपक जलाया करो। लक्ष्मी का मतलब है, जीवन का सर्वविध सुख और वह तभी मिलता है जबकि घर में हर दिन सफाई होती रहे और लक्ष्मी (भगवान्) के निमित्त गाए के प्राकृतिक घी का दीपक (ईश्वरीय प्रकाश) जलता रहे।

खासकर हमारे धार्मिक किसान आजीवन रोटी–रोजी के चक्कर में यदा–कदा ही तीर्थयात्रा का मौका पा सकते हैं। वे इस प्रसंग में प्रायः पुष्कर राज (राज्यस्थान) जाना नहीं भूलते। पुष्कर का मतलब है पोखर या तालाब।

यह तीर्थ जलरूप है। इसके भूगर्भ में भी जल माना जाता है। यह सदा जल से भरा रहता है। समीप के नाग पर्वत से आकर इसमें वर्षा का जल जमा होता रहता है। कहते हैं राजा भर्तृहरि ने यहां तप किया था। श्रावण मास की हरियाली अमावस को यहां विशाल मेला लगता है।

सोलन के श्री जियालाल ठाकुर पारम्परिक हिमाचली गीत–संगीत कला के संरक्षण के लिए सर्वथा समर्पित रहते हैं। लोकताल, लोकवाद्य और लोक गीतों पर इनका गजब का अधिकार देखा जाता है। पहाड़ी धुन में 'वंदे मातरम्' और 'जनगण मन' और 'सारे जहां से अच्छा' सुनते ही बनते हैं। पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम भी इनकी साधना की प्रशंसा किए बिना न रह सके। इनके गीतों के साथ शहनाई, करनाल, दमामु, नगाड़ा, ढोल, खंजरी और बांसुरी का कमाल का मेल बैठता है। इनके द्वारा जारी की गई सी.डी. में ठंडी–ठंडी हवा चलदी, लागा ढोलो रा ढमाका, भवाना रूपिए, हाय मामा रे, मंडिया तेकाली बदली, आज खेले श्याम, नीली चिड़िए, मामटिया बोलो दया रामा और बिहागड़ा आदि तथा मुजरा ताल और पंजाबी कहरवे के साथ हिमाचल के सुन्दर दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है। ये बघाटी सामाजिक संस्था से भी जुड़े हैं।

स्थानीय परंपरा में लोगों का श्रीमद्भागवत्

पुराण की कथाओं के प्रति अपार लगाव देखा जाता है। पुराणकथा में शरद् पूर्णिमा की रात को भगवान श्री कृष्ण के साथ गोपियों के महारास का प्रसंग एक महान् आध्यात्मिक घटना मानी जाती है। जो रस या आनंद पैदा करे उसे रास कहते हैं। हमारे देश में नाटक–नृत्यादि के रूप में रास का प्रचलन रहा है। रास गोपी–कृष्ण के महारास (आत्म मिलन)ञका ही प्रतिरूप है। महारास की शरत् पूर्णिमा की रात का चांद सोलह कलाओं से पूर्ण, सर्वाधिक प्रकाश वाला और प्रकृतिगत औषधीय गुणों से परिपूर्ण माना जाता है। इस रात को भगवान् कृष्ण ने अपनी बांसुरी की मधुर तान (अनहद प्राकृतिक नाद) से गोपियों का आह्वान किया था। उस मधुर स्वर से गोपियां (जीवों की आत्माएं) इतनी भावविह्वल हो गई थी कि अलौकिक आनंद में अपनी गृहस्थी तो क्या शरीर तक की सुध–बुध खो बैठी थी। जो गोपी गाए को दुह रही थी उसके थनों का दूध बर्तन की बजाए धरती पर गिरने लगा। किसी का काजल आंखों की बजाए माथे में लग रहा था। सभी (आत्माएं) कृष्ण (परमात्मा) का संग पाने के लिए आतुर हुई जा रही थी। वास्तव में तो भगवान् उनके मनोभावों और सतीत्व की परीक्षा ले रहे थे। भगवान् उनको उपदेश देते हुए कहते हैं कि अपना पति दुश्चरित्र, भाग्यहीन, वृद्ध, मूर्ख, रोगी और गरीब कैसा भी हो उसे नहीं छोड़ना चाहिए। वह भगवान् स्वरूप होता है। कुलीन स्त्री (व्यक्ति) के किसी

अन्य पुरूष (परकर्म) को अपनाने से लोकनिंदा और नरक भोगना पड़ता है। इस पर गोपियां (जीवात्माएं) बोली कि हे परमात्मन्, आप हमारे लिए जन्मान्तरों के लिए पति और पुत्र से भी अधिक सम्मान्य हो। निस्संदेह कुलीन स्त्रियों (जीवात्माओं) के लिए उनके पतियों (सहज कर्मों) में ही परमात्मा का निवास है। पतिः स्त्रीणां परमो गुरूः। जो स्त्री पति के लिए समर्पित है वह, निस्संदेह परमात्मा के लिए समर्पित है। जो स्त्री पतिप्रेम से विमुख होती है वह परमात्मप्रेम से भी विमुख है। पति स्त्री के लिए परमात्मा का प्रतिनिधि है। इसके बाद श्री कृष्ण (परमात्मा) अनेक रूप होकर हर गोपी (जीवात्मा) के साथ हाथ पकड़ कर (एक हो कर) गोलाई में नाचने लगे। चांदनी के अलौकिक सौन्दर्य में अद्भुत महारास होने लगा। हर जीवात्मा को जैसा भी जीवन मिला है, वह परमात्मा का ही एक विशेष रूप है, उसे परमात्मा से कम कैसे आंका जा सकता है। हमें जो सहज कर्म मिला है, उसी के प्रति हार्दिक निष्ठा ही हमारा परम ध ार्म है। नियतं कुरू कर्म त्वम्। स्व धर्मे निधनं श्रेयः। परधर्मे भयावहः। अपने प्रकृतिप्रदत्त स्वभाव को छोड़कर दूसरे के स्वभाव को अपना पति (धर्म) बनाना पतनकारी है। हर जीवात्मा का उसका अपना सहज कर्म या वस्तु ही उसका पति या रक्षक है। पाति रक्षति इति पतिः। हमारा स्वाभाविक नियम या वस्तु ही हमारी रक्षा करती है। धर्मो रक्षति

रक्षितः। हमारे अपने सहज नियम की रक्षा के अंदर ही हमारी रक्षा भी निहित है। स्त्री के लिए भी उसका प्राकृतिक सामाजिक नियमों से प्राप्त पति ही सर्वविध कल्याण करता है। परवस्तु के प्रति हमारा आग्रह दुःख दायक होता है। समस्त स्त्रियों, जीवात्माओं और पतियों पर भी यही नियम लागू होता है। हर पति के लिए भी सहज सामाजिक नियमानुसार प्राप्त पत्नी ही उसकी रक्षक होती है।

पहाड़ों का दिव्य आनन्द

(सोलन के विशेष संदर्भ में)

सोलन (बघाट) आदि छोटे छोटे पहाड़ी राज्यों पर कभी नेपाल और कांगड़ा की क्रूर दृष्टि भी रही। सन् 1000 से 1009 तक बार बार गजनवी ने भारत पर अपने आक्रमण के दौरान कांगड़ा को भी जी भर लूटा। राजा संसार चंद के आक्रमण से पहाड़ी राज्य स्वयं आतंकित रहते थे। कहलूर के राजा महान् चंद की अध्यक्षता में पहाड़ी राजाओं ने संसार चंद पर आक्रमण करने के लिए गोरखों को निमन्त्रित किया। गढ़वाल, कुमाऊं और सिरमौर पर गोरखे पहले ही छाए हुए थे और वे आगे कश्मीर तक बढ़ना चाह रहे थे। गोरखों ने सन् 1804 में निमन्त्रण को स्वीकार कर संसार चंद पर आक्रमण कर दिया लेकिन उनको मुंह की खानी पड़ी। एक संधि के मुताबिक गोरखों ने सतलुज के पार शिमला, सोलन और बिलासपुर के इलाकों में रहना स्वीकार किया था। संधि का पालन न होने के कारण गोरखा सेनापति अमरसिंह थापा ने कांगड़ा पर आक्रमण कर दिया। सन् 1805 में हमीरपुर में संसार चंद गोरखों के साथ लड़ते हुए हार गया। सन् 1809 में महाराजा रणजीतसिंह ने गोरखों को सतलुज के उस पार खदेड़ दिया। सन् 1823 में संसार चंद की मृत्यु हो गई। इतिहास के इस प्रसंग से पता चलता है कि बघाट या सोलन क्षेत्र को बड़े राज्यों की

शक्तियों के बीच ही झूलना पड़ा, फिर भी इस छोटी सी रियासत ने अपनी मूल परम्पराओं को आज तक यथापूर्व बनाए रखा है।

सोलनादि पहाड़ी क्षेत्रों में जिस तरह से शैवपरम्परा का विकास हुआ वह अपने आप में एक सुन्दर उदाहरण है। विश्व का जन्म और विकास वैसे भी प्रकृति और पुरूष से हुआ बताया गया है। प्राकृतिक घटनाओं को यहां पुरूष–प्रकृति या शिव–शक्ति के रूप में देखा जाता है। सोलन–नाहन सड़क पर सराहन से पीछे एक पहाड़ी चोटी पर एक सुन्दर मन्दिर भूरेश्वर महादेव के नाम समर्पित है। यहां देवोत्थान एकादशी की रात को हजारों सालों से एक सौतेली मां से सताए गए भाई–बहन के युगल का मिलन बड़े समारोह के रूप में मनाया जाता है। हमारा देश मानवीय संबंधों को महत्त्व देने वाली भूमि है। हमारे यहां के पर्व–त्योहार उन संबंधों को दृढ़ करने के लिए ही मनाए जाते हैं। विभिन्न प्रकार के प्रेम–संबंध ही हमारे जीवन को शक्ति और गति देते हैं। पहाड़ों के सभी देवता साक्षात् महादेव और देवियां पार्वती माताएं हैं। भूरेश्वर देवता भी यहां महादेव कहलाते हैं। ये हमारे संबंधों की प्रगाढ़ता के प्रतीक हैं। यह भी मान्यता है कि भगवान् शिव–पार्वती ने यहां से महाभारत का युद्ध देखा था। शिव–पार्वती तो सनातन हैं, वे तो सदा सब कुछ देख रहे हैं फिर भी हमारी

श्रद्धावश वे यहां भी सदा उपस्थित रहते हैं। मन्दिर के साथ लगे गहरे ढांक वाले धी–दूध से चिकने पत्थर पर सर्द अंधेरी रात में जब दैवी शक्ति से संपन्न पुजारी उस पर नाचते हैं तो उन में साक्षात् शिव–शक्ति का ही आवेश माना जा सकता है। वास्तव में एक प्राचीन घटना के अनुसार यहां से दो दुःखी भाई बहन लुप्त हो गए थे, उन्हीं की पुण्य स्मृति में यहां मेला लगता है। मंदिर कमेटी की ओर से यहां भंडारा यज्ञ भी होता है। भूरेश्वर सेवा समिति द्वारा यहां एक संस्कृत महा विद्यालय भी संचालित हो रहा है। हम प्रयास करें तो यह स्थान एक आदर्श पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो सकता है।

अपने भक्तों की अभिलाषाएं पूरी करने वाली दशमहाविद्याओं में प्रसिद्ध मां तारा या महालक्ष्मी क्योंथल रियासत के राजवंशियों की कुलेष्ट देवी रही है। रियासत की स्थापना राजा गिरिसेन ने की थी। कभी मुहम्मद गौरी के आक्रमण से आक्रान्त राजा लक्ष्मण सेन बंगाल को छोड़कर पहाड़ी प्रदेशों की ओर चले आए थे। वे अपनी कुलदेवी की मूर्ति भी साथ लाए थे। एक बार राजा भूपेन्द्र सेन को जुग्गर के जंगल में शिकार करते हुए अपनी कुलदेवी के दर्शन हुए थे, जिसने उन्हें उस स्थान पर एक मंदिर बनाने का आदेश दिया था। हमारे पारम्परिक इष्ट देवी–देवता अपने भक्तों से लोकोपकारी काम करवाया करते हैं, उन्हीं

में से एक काम यह भी था। जमीन का एक विशाल भाग मंदिर के नाम किया गया। मंदिर संबंधी कामों की जिम्मेदारी शिलगांव वासी निभाते हैं। उस समय मंदिर के साथ वाले शिखर पर एक सिद्ध महात्मा ताराधिनाथ रहते थे। जिनकी धूनी को वर्षा कभी भिगोती नहीं थी।

हमारे आंगन में पूजी जाने वाली मां तुलसी केवल एक पौधा ही नहीं बल्कि पौराणिक पतिव्रता स्त्री के आदर्श का प्रतीक है। ये हमारी संसार भर की समस्त देवी माताओं के लिए एक महान् आदर्श पेश करती हैं। अतः साक्षात् भगवती स्वरूपा हैं। परम्परानुसार स्त्रीमात्र का सर्वस्व उसका पतिदेव होता है। वह सज्जन, दुर्जन अनपढ़ या असुर कैसा भी हो, उसका परमेश्वर वही होता है। कहते हैं देवठन की एकादशी के दिन भगवान् विष्णु अपनी चार महीने की नींद के बाद जब जागते हैं तो सबसे पहले सती माता तुलसी की ही प्रार्थना सुनते हैं। भगवान् विष्णु ने उन्हें अपना दिव्य सान्निध्य प्रदान किया है। पुराणकथानुसार प्राचीन समय में जालंधर नामक दैत्य अपनी पत्नी वृन्दा के सतीत्व की आध्यात्मिक शक्ति से देवताओं को निरंतर आक्रान्त कर रहा था। इस विपत्ति में समस्त देवताओं ने जाकर भगवान् विष्णु से सहायतार्थ प्रार्थना की। समाधान के रूप में भगवान् विष्णु ने वृंदा के साथ एकांत चर्चा कर उसका सतीत्व भंग करके देवताओं को जालंधर का वध करने का अवसर प्रदान

देवभूमि सोलन

किया। यद्यपि सती वृंदा का कोपपूर्ण शाप भगवान् को स्वयं भी सहना पड़ा, फिर भी उन्होंने समर्पित सती वृंदा को वह दिव्य स्थान प्रदान किया, जिसके बिना भगवान् विष्णु की पूजा आज भी पूरी नहीं मानी जाती। जिस स्थान पर वह अपने पति के साथ सती हुई थी उस स्थान पर तुलसी का जो पौधा पैदा हुआ था, वह विष्णुप्रिया के नाम से आज भी सर्वत्र पूजा जाता है। तभी से शालिग्राम रूप विष्णु के साथ तुलसी के विवाह की परम्परा आरंभ हुई।

देखने में अनोखा सा लगने वाला दो प्राकृतिक पदार्थों का यह विवाह वास्तव में सृष्टि के संचालक प्रकृति–पुरूष का सनातन विवाह है, जिसमें सृष्टि के सब जीवों के विवाह समा जाते हैं। यह दिव्य विवाह हमें विवाह परंपरा को सनातन बनाए रखने की प्रेरणा देता रहता है। मानवीय विवाहों की तरह दोनों का आकर्षक श्रृंगार किया जाता है। यजमान स्वयं वर शालिग्राम को तथा यजमान की पत्नी वधू तुलसी को लेकर उनके अग्नि के फेरे करवाते हैं। बारात का स्वागत, टीका और भोज आदि सब आम विवाहों की तरह संपन्न किए जाते हैं। तुलसी के विवाह का फल शास्त्रों में परिवार की सुख–समृद्धि बताया गया है। स्पष्ट है कि एक स्त्री के लिए उसका पति ही परमेश्वर का प्रतिनिधि है, भले ही वह जालंधर क्यों न हो। वह अपने पति के प्रति संपूर्ण समर्पण भाव से ही परमेश्वर का नित्य

या सनातन संग प्राप्त करती है, जिस तरह कि महासती वृंदा ने किया। दूसरे यह भी कि देव–संस्कृति (परोपकार भाव) की ही सदा विजय होती है। सत्यमेव जयते। नारी का सतीत्व भी इस संस्कृति का प्रधान अंग होने से उसकी भी नित्य विजय होती है। सतीत्व भी देवत्व है। देवता संसार को कुछ देते हैं। असुर संसार से कुछ छीनते हैं। स्त्री की सब से बड़ी धर्मसाधना उसके अपने सतीत्व की रक्षा है। उसके सतीत्व में ही उसका देवत्व निहित है। वृंदा के सतीत्व या देवत्व के प्रति उसके समर्पण भाव ने ही देव संस्कृति को अमरता प्रदान की है, जिसकी स्मृति में तुलसी विवाह बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। इस प्रकार का अविस्मरणीय विवाह इसी वर्ष गांव शील (देवठी) में धूमधाम से संपन्न हुआ।

तपे का टीला या जामुकोटी सिरमौर जिले का वह पवित्र स्थान है, जहां जमदग्नि ऋषि सपरिवार रहकर तपस्या करते थे। यह स्थान नाहन से थोड़ा पीछे सोलन–रेणुका सड़क पर स्थित है। प्राचीन समय में आर्यावर्त में हैहय वंशी क्षत्रियों का राज था। उनके राजपुरोहित भृगुवंशी ब्राह्मण ऋचिक से जमदग्नि का जन्म हुआ था। जमदग्नि का विवाह इक्ष्वाकु वंश के ऋषि रेणु की कन्या रेणुका से हुआ था। भगवान् परशुराम का जन्म जामुकोटी में वैशाख शुक्लपक्ष की तृतीया या अक्षय तृतीया को हुआ

था। ये भगवान् विष्णु के छठे अवतार हैं, जिन्होंने मां धरती को पापियों या अत्याचारियों के भय से मुक्त किया था। राजा सहस्त्रबाहु ने सर्वकामना पूरक कामधेनु को पाने के लिए जमदग्नि का वध कर दिया। शोकग्रस्त मां रेणुका ने रामसरोवर (वर्तमान रेणुका झील) में छलांग लगा दी। महेन्द्र पर्वत पर तपस्या में मग्न परशुराम ने यह दुःखद समाचार पाकर सहस्त्रबाहु का अंत कर दिया। अपनी योग शक्ति से अपने माता–पिता को पुनर्जीवन देकर मां से वायदा किया कि वे हर वर्ष देवठन की एकादशी को मां से मिलने अवश्य आया करेंगे। तब से लेकर पुत्र के माँ से मिलने के इस शुभदिवस को मेले के रूप में मनाया जाता है। मां–बेटे का इस जैसा दिव्य मिलन धरती पर शायद ही कहीं अन्यत्र मनाया जाता हो। अच्छी पुस्तकें हमें अच्छी राह दिखाती हैं। ये हमारे लिए अच्छे मित्रों जैसा काम करती हैं। हमारे दिलों में सांस्कृतिक संस्कार भरने का काम करती हैं। महान् व्यक्ति अपने घरों में सुव्यवस्थित पुस्तकालय भी रखते हैं। महान् लेखक टॉल्स्टॉय ने पुस्तकों से बहुत कुछ सीखा और पाया था। कहते हैं कि पुरानी पुस्तकें कभी बूढ़ी नहीं होती। एक महान् विचारक ने कहा है कि जब उन्होंने पहली बार आंख खोली तो वे अपने चारों ओर पुस्तकों से घिरे हुए थे। काश कि हम भी ऐसा वातावरण दे सकें। इस प्रकार स्पष्ट है कि पुस्तकें हमें अच्छी राह दिखाने में बहुत

मदद करती हैं। यह बात अलग है कि उनमें से अपना रास्ता चुनना, बनाना और उस पर चलना हमें खुद ही पड़ता है।

जब हमारे विचारों या पुस्तकों से कोई लाभान्वित होता दीखता है तो हमें बड़ा संतोष मिलता है। राह में चलते हुए मुझे एक अनजान व्यक्ति ने अपने घर के समीप रोक कर आदरपूर्वक चाय पी कर जाने का आग्रह किया तो मैं बहुत हैरान हुआ। मैं उस प्यार भरे आग्रह को अस्वीकार नहीं कर सका। प्रसंगवश उन्होंने मेरी लिखी पुस्तक की याद दिलाई तो मेरी प्रसन्नता बढ़ गई। उससे चाय का स्वाद और भी बढ़ गया था। मैं उस परमात्मा का हृदय से कृतज्ञ हुआ जा रहा था जिसकी प्रेरणा पाकर रचित मेरी छोटी सी रचना का अल्प सा अंश किसी के काम आया। शायद हमारे किसी के काम आने का नाम ही जीवन है। निःसंदेह शब्दब्रह्म भी ब्रह्म के विविध रूपों में से एक है।

संसार भर में जो विषमता दिखाई देती है वह हमारे अपने किए कर्मों के फलों पर आधारित है। जैसा जिसका कर्मफल, वैसा उसका जीवन। अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। चोरी करते हुए किसी की टांग टूटना उसके कर्म का फल ही तो है। आकाशीय ग्रह (प्रकृति) हमारे जीवन को कर्म फलानुसार जीने के लिए मजबूर करते हैं। ग्रह हमारे देवता हैं। ये डंडा लेकर हमें हांकते नहीं बल्कि हमारी बुद्धि में प्रवेश कर हमें विशेष कर्मफल भोगने

के लिए मजबूर करते हैं। परमेश्वर से आ रही ऊर्जा के साथ जुड़कर हमारे जीवन की सार्थकता बढ़ रही होती है। उस अवस्था में ग्रह हमारे अनुकूल होकर हमारे मनोबल को ऊंचा रखते हुए शुभ फल प्रदान करते है। जब हमारी वही ऊर्जा बुरे कामों की ओर लगती है तो हमारे जीवन के बुरे दिन चल रहे होते हैं, मनोबल नीचा रहता है और हमारे ग्रह पूर्वकृत बुरे कर्मों के फल को भोगने के लिए हमें मजबूर करते रहते हैं। इस कमजोर अवस्था में किसी ग्रहफलवेत्ता की शरण लेना हमारी मजबूरी बन जाता है। वह ग्रहशक्तियों की छानबीन करके हमारे कमजोर ग्रहों (शक्ति) को प्रसन्न और सबल करने के तरीके बताता है। उन तरीकों में कमजोर ग्रहों के प्राकृतिक दान पदार्थ और उनकी विशेष प्रार्थनाएं शामिल होती हैं। ग्रहीय प्रकृतिक उपायों के साथ सदैव प्रत्यक्ष दवा आदि उपायों को भी करते रहना चाहिए। हमारी औषधीय चिकित्सा का प्रभाव ग्रहों के उपायों से बढ़ जाता है। प्रत्यक्ष उपायों को हम नकार नहीं सकते। ग्रहचिकित्सा एक जन्मान्तरीय उपाय है। कई बार हमारे सुदूर जन्मान्तर के बुरे कर्म उतना बुरा फल नहीं देते जितना कि इसी जन्म के बुरे कर्म। अतः वर्तमान में बुरे कर्मों से सर्वथा बचे रहना बहुत जरूरी होता है। इसके लिए नित्य संध्योपासनादि कर्म को उसका पूरा अभिप्राय जानकर करना बड़ा कारगर सिद्ध होता है। उससे न केवल हम अनेक जन्मों के बुरे फल के

भोगों से बच जाते हैं बल्कि जीवन के चरम लक्ष्य ईश्वरीय आनंद को भी प्राप्त करते हैं। सचमुच वे लोग कितने भाग्यशाली हैं जो गायत्री मंत्र का अर्थ जानकर जप कर सकते हैं। काश उनमें से हम भी एक हो सकें।

सोलन के आस–पास के इलाकों में कभी मावी नामक शासकों का राज था। कहते हैं लगभग तीन हजार साल पहले मध्य एशिया से यहां एक खश नामक जाति का आगमन हुआ था। इन्होंने यहां कोल जाति से मिलकर एक शक्तिशाली संगठन बनाया। इन्हें मवाना या मावी कहते थे। मावी का अर्थ होता है–शक्तिशाली पुरूष वाला संगठित कबीला। भागवत् पुराण और मार्कन्डेय पुराण में खस का उल्लेख बताया जाता है। शिमला, सिरमौर और कुल्लु जिलों में आजकल ये लोग मिलते हैं। मनु ने इनको क्षत्रिय बताया है। दास (शूद्र) और किन्नरों पर इनका शासन था।

अगर हम कभी यह जान सके कि पुस्तकें हमारे जीवन की किस कमी को पूरा करती हैं तो वह दिन कितना सुखद होगा। हम बेहतर तरीके से जानते हैं कि अच्छे कपड़े, अच्छे जूते, अच्छा साबुन, अच्छा तेल और अच्छा झोला हमारे लिए कितने उपयोगी हैं। यह जानने की शायद हमने कभी जरूरत नहीं समझी कि सभी वस्तुओं की तरह एक अच्छी पुस्तक हमारे जीवन को संवारने में कितना काम कर जाती है। पेट भूखा हो तो वह रोटी मांगता है और उसे हम

लाजवाब भोजन भेंट करते हैं। अगर हमारी चेतना या आत्मा भूखी हो तो हमने कभी उसका दुःख नहीं समझा। जीवन के वृक्ष रूप शरीर को हम दिन–रात सजाते फिरते हैं परन्तु जीवन की बीज चेतना या आत्मा रूप देवता को यों ही तरसने देते हैं। जबकि सत्य यह है कि 'जो सींचे तू मूल को फूले फले अघाय'। क्यों न हम उसे भी कभी अच्छी सी पुस्तक चुनकर भेंट करें ताकि वह हमारे इस अमूल्य जीवन को और अधिक सुंदर बना सके।

हमारे यहां जंगलों या पर्वतों पर देव पूजा या यज्ञ करने की परंपरा थी, जिसे भाटी कहते थे। गो पालक इसे मिलकर करते थे। शायद इसकी परंपरा श्री कृष्ण ने ही चलाई थी। पहले ब्रज में अनेक प्रकार के पकवानों से देवराज इन्द्र की पूजा की जाती थी ताकि वह समय–समय पर वर्षा करता रहे। कृष्ण ने लोगों को बताया कि हमें उस देवता की पूजा करनी चाहिए जो प्रत्यक्ष रूप से हमारी सहायता करे। इन्द्र से शक्तिशाली देवता तो गोवर्धन पर्वत (प्रकृति) है, जो हमारे लिए वर्षा लाने में सहायक है। इन्द्र ने इसे अपनी मानहानि समझकर बादलों को गोकुल को नष्ट करने की आज्ञा दी। बेचारे ब्रजवासी भयंकर वर्षा से घबराने लगे। श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत (प्राकृतिक जीवन) को स्वयं धारण करके उन्हें उस आपदा से बचाया। इन्द्र (शासकीय अहंकार) को अपनी गलती का एहसास हुआ तो

उसने कृष्ण (परमशक्ति) से आकर माफी मांगी। सातवें दिन कृष्ण ने पर्वत (प्रभाव) को नीचे रखकर ब्रजवासियों से कहा कि अब से वे हर वर्ष दीवाली के बाद गोवर्धन पूजा का उत्सव मनाया करें। यही कारण है कि हमारे सबसे समीप के पर्वत वर्षा लाने में सहायक साक्षात् गोवर्धन पर्वत होते हैं। वैदिक परंपरानुसार वृक्ष साक्षात् देवता हैं और वैज्ञानिक रूप से वर्षा लाने में सहायक बन कर हमारे अन्न–दूध को बढ़ाते रहते हैं।

आम तौर पर हमारे सामाजिक यज्ञों में सजा मंडप दर्शकों के दिलों को खींचता है लेकिन हमें यह भी ज्ञात होना चाहिए कि मंडप के ऊपरी आवरण में अरूंधती माता सहित सात ऋषि पूजित और प्रतिष्ठित होते हैं। मंडप के चारों ओर सजे चार केले के स्तंभ चार वेदों के प्रतीक हैं। वेद साक्षात् भगवान का वाणीरूप या मूर्ति है। मंडप के अंदर वैदिक विधि–विधान से रचे गये रंगीन सर्वतोभद्रमंडल में तेतीस करोड़ या तेतीस प्रकार के देवताओं का निवास होता है। हमारे पूर्वज ऋषियों द्वारा खोजे गए इस प्रकार के यज्ञ से भला क्यों न 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का सपना साकार हो।

परमात्मा की संगिनी प्रकृति को चुनौती देने का काम उसी तरह हास्यास्पद है जिस तरह से अमेरिका ने वैज्ञानिक अनुसंधानों के लिए चांद पर ऐटमिक धमाकों की असफल योजना बनाई थी। धरती पर इससे होने वाले

(संभावित) नुकसान के अनुमान से परिचित अमरिकी सेना ने उस योजना को रूकवा दिया था। प्रकृति को चुनौती देने वाले लोगों की योजनाओं को ईश्वरीय योजना स्वयं ध्वस्त किया करती है। राजा बलि त्रिलोकीनाथ वामन से पूछने लगे कि मैंने असुर कुल में उत्पन्न होने पर भी कोई बुरा काम नहीं किया है फिर आप मुझे सजा क्यों दे रहे हैं। भगवान् बोले कि तुमने मेरी प्रकृति को अपने वश में करने की अनधिकार चेष्टा की है, इसलिए अपने यज्ञस्थल की पाकशाला में तुमने सूर्य, चांद और तारों से बंधुआ काम (शायद ऊर्जा का अत्यधिक दोहन) किया है। हो सकता है उस समय वैज्ञानिक तरीकों से सूर्यादि आकाशीय पिंडों की शक्तियों को केवल स्वार्थसाधन में प्रयोग किया गया हो। केवल अपना पेट भरने के लिए काम करना वैदिक दृष्टि से पाप है। स्वार्थी लोगों या नेताओं के सामाजिक कार्य भी सर्वजनहित को बाधा पहुंचाते हैं। उससे समाज में असमर्थ आदमी का सांस लेना दूभर हो जाता है। फलतः सारी सृष्टि में अंधेरा छा गया। यज्ञ में भी सर्वजनहित देखा जाना अनिवार्य होता है। हम महायज्ञ रचाकर फाइबर की पत्तलें और गिलास हर कहीं फेंक दें तो यज्ञ के पुण्य से अधिक पाप अपने सिर पर उठाना पड़ेगा। भगवान् ने कहा कि यद्यपि तुम पापी नहीं हो फिर भी तुम्हारे इस दिशा में बढ़ते कदम को पस्त करना जरूरी हो गया है। दो कदमों से

ब्रह्मांड को नापकर तीसरा कदम वे बलि के सिर पर रखने ही वाले थे कि तभी बलि बोला कि जब मैं पापी नहीं हूँ तो मुझे भी मेरी प्रजा याद रखे, कृपया ऐसा कोई उपाय करो। भगवान् ने उसे वरदान देते हुए कहा कि हर वर्ष कार्तिक शुक्ल पड़वा को बूड़ (अलाव) जलाकर तुम्हें लोग याद किया करेंगे। शिमला और सिरमौर जिलों की सीमा पर एक गांव बल्ग या बलिग्राम है, जहां राजा बलि का निवास माना जाता है। वहां आज भी पांडवकालीन शैली के मंदिर मौजूद हैं। जनश्रुति के अनुसार अपने अज्ञातवास के दौरान पांडवों ने वेष बदलकर यहां समय बिताया था। बलि के लोकोपकारी शासन की याद में बलिराज (अलाव) जलाना प्रासंगिक ही लगता है।

सोलन जिला के सुन्दर केन्द्रीय स्थान कुनिहार में जिस तरह से प्राचीन परंपराओं को जीवित रखने का प्रयास किया जा रहा है, वह अपने आप में एक आदर्श है। प्राचीन रियासत कुनिहार में राजाओं के समय में देवठन के बाद शरद् पूर्णिमा के दिन राज दरबार से देवताओं के रथ को ढोल नगाड़ों के साथ वैदिक विधि से प्राचीन तालाब मंदिर तक ले जाया जाता था। रियासत के अंतिम शासक राजा संजयदेव की अगवाई में नारसिंह, दानो, बजरंगबली और मनसा देवी की मूर्तियों को पालकी में सजाकर राजदरबार से तालाब मंदिर तक ले जाया जाता है। लोग रथयात्रा का

गर्म जोशी से स्वागत करते हैं फिर दानो देवता के मंदिर में पूजा अर्चना करने के बाद रथ को चबूतरे में रखा जाता है। लोग देवता के दर्शन करके अपने जीवन के लिए मंगल कामनाएं करते हैं। राजकालीन प्रसिद्ध पुरोहित पं. गौरीशंकर उपाध्याय के अनुसार दानो देवता को खुश करने के लिए ठोडो नृत्य किया जाता था। उसी परंपरा को जीवित रखने के लिए किए जा रहे प्रयासों से लोग आज भी फूले नहीं समाते हैं।

सुदूर राष्ट्रीय स्तर तक काम करने वाले लोगों की देवधरती हिमाचल में भी कमी नहीं है। 85 वर्षीय लेखक श्री कृष्णकुमार नूतन का जन्म 30 नवम्बर 1928 को छोटी काशी मंडी में स्वतंत्रता सेनानी स्व. खेमचंद के घर हुआ था। ये बचपन से ही वैरागी और साधु स्वभाव के रहे। इन्होंने भारत वर्ष के मठों, मंदिरों आश्रमों का भ्रमण करते हुए विविध धर्मग्रंथों का अध्ययन किया। मंडी के तत्कालीन राजा जोगिन्द्र सेन उनसे प्रभावित होकर उनके शिष्य बन गए। दिल्ली से अब तक उनकी 20 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सन् 1999 में हिमाचल सरकार द्वारा भी सम्मानित हो चुके हैं। फिल्म नगर मुंबई में ये सहनिर्देशक के रूप में कार्य कर चुके हैं। ये कर्मचारी आंदोलन का भी दिशा निर्देशन करते हैं। आजकल ये पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। दैनिक दिव्यहिमाचल के अनुसार वर्तमान में ये

अपनी आत्मकथा भी लिख रहे हैं। मानवता की सेवा के लिए भगवान् इन्हें लंबी उम्र प्रदान करें।

अनेक प्रकार की समस्याओं के निवारण हेतु हमारे आस–पास के लोगों में नागदेवता माहूनाग के प्रति अपार श्रद्धा पाई जाती है। सांप के भय या ओपरे के भय से पीड़ित लोग माहूनाग की मानता करते हैं। कुनिहार से पीछे जाडला गांव तथा तारादेवी के समीप नीचे की ओर शघीण गांव में माहूनाग के मन्दिर हैं। मूल माहूनाग मंदिर करसोग के समीप बुखारी गांव में स्थित है। लोक विश्वासानुसार ये सूर्यपुत्र कर्ण हैं, जो सूर्यभक्त के रूप में यहां पूजित होते हैं। कहते हैं कि एक गुमशुदा युवक की मां ने माहूनाग देवता से मानता या प्रार्थना की कि वह उसके खोए बेटे को वापिस घर भिजवा दे। परिणाम स्वरूप खोए हुए युवक को परदेस में हर रात सपने में उसके शरीर से एक सांप लिपटने लगा। बेचारा सो न पाता। वह भय के कारण किसी गणने वाले के पास गया तो उसने बताया कि माहूनाग देवता के कारण यह सब हो रहा है अतः वह वापिस घर चला जाए। उसने वैसा ही किया तो वह अपने घर लौटकर सुख चैन से सोने लगा। माहूनाग देवता बहुत शक्तिशाली देवता माने गए हैं। उनसे की गई प्रार्थना खाली नहीं जाती–ऐसा लोक विश्वास है। कहते हैं बुखारी गांव का मंदिर सुकेत के राजा श्यामसेन ने सन् 1664 में बनवाया था।

कुछ सवाल कुछ जवाब (वस्तुनिष्ठ)

हमारा सर्वोत्तम गुरू – विवेक

बूढ़ा आदमी – अनुभव का खजाना

हमारे हर कार्य का लक्ष्य – भारत माता का सम्मान

सब्जी को काटकर धोने से नष्ट तत्त्व – आयोडीन आदि पोषक तत्त्व

– – –

धीमा जहर – मिठाई का सिल्वर बर्क

आत्मनाशक – प्रतियोगिता (दूसरों जैसा बनने की होड़)

– – –

हमारे लिए पोषक सूर्य किरणें – पूर्व दिशा से आने वाली

नीलकंठ – जो क्रोधरूप विष को होंठों और मन के बीच रखे

– – –

आशावादी – सकारात्मक चिंतक

उद्योग करना – एक आध्यात्मिक गुण

आरोग्यदायक – शाकाहार

त्रिदोष शामक – अल्पाहार

स्वास्थ्य और सफलतादायक – परिवार और समाज के साथ ताल–मेल

– – –

जीवन की शक्ति – अच्छा विचार

सर्वपरिचित औषधीय पौधा – बिच्छुबूटी या भाभर (विषैला)

मनुष्य मात्र के लिए सर्वविध सुखदायक – हर रोज प्रातः गीता के कम से कम एक श्लोक का अर्थ समझकर पाठ

– – –

टहनियां गाड़ कर लगने वाले बरसाती पौधे – बणा और ब्योंस .... आदि

– – –

बुखार में उपयोगी – तुलसी और काली मिर्च

पेट फूलना – अजवायन और नमक

कमजोर पाचन शक्ति में – हिंग्वष्टक चूर्ण

कटे घाव पर – ठंडे पानी की पट्टी

खुजली – त्रिफला मिले जल से स्नान

ब्राह्मण का लक्ष्य – ब्रह्मतेज (आत्मबल) की प्राप्ति

शिलान्यास से पूर्व आवश्यक – भूमिपूजन

वैदिक मंत्र के लिए समिधा – अरणी

अन्ना के पांच जीवन सूत्र – शुद्ध विचार, शुद्ध आचरण, निष्कलंक जीवन, त्याग, अपमान को सहने की शक्ति

– – –

– – –

वंशवृद्धि में बाधक – माता–पिता और पितरों की अप्रसन्नता

– – –

सनातन परंपराओं का गांव – रामपुर (कुठाड़)

पितरों को प्रसन्न करने वाला – सोमेश्वर शिव का पूजन तथा सोमवती अमावस को शिवलिंगाभिषेक

– – –

– – –

मंथरा को शत्रुघ्न के क्रोध से बचाने वाला – भरत (महान् भाई)

– – –

धर्म – जीवात्मा को ध्यान में रखकर प्रयुक्त नीति

– – –

समस्त तीर्थों के सेवन का लाभ देने वाली – गोसेवा

– – –

शुभ दरवाजा – ओम् या स्वस्ति के चिह्न वाला

खराब राहु के लिए जपनीय – ओम् रां राहवे नमः व ओम् भैरवाय नमः

– – –

धर्म – वेदोक्त कल्याणकारी काम

अधर्म – वेदवर्जित जनविरोधी काम

पाप से बचाने वाला – विना आसक्ति के भगवान् की खुशी के लिए काम करना

– – –

वामनावतार का कारण – प्रहलादपौत्र बलि से इन्द्र को अपने पद का खतरा

– – –

ब्राह्मण के 6 कर्त्तव्य – वेदाध्ययन व अध्यापन, यज्ञ करना व करवाना, दान देना और लेना

– – –

– – –

ब्राह्मणों के मुख्य दो वर्ग – उत्तर भारत के पंचगौड़ और दक्षिण भारत के द्रविड़

– – –

कर्मकांड (नित्यकर्म) का लाभ – लौकिक व पारलौकिक सुख

पर्यावरण मित्र – गमले में पौधे उगाना तथा

— — —		पानी और बिजली का
— — —		अनावश्यक खर्च रोकना आदि
सर्वकामना पूरक कामधेनु	—	गाए (जैविक खेती का मूल)
रोगनिवारक टोटका	—	काले कपड़े में उड़द की दाल
— — —		दान करना
पशुरोग निवारक टोटका	—	पशु का खूंटा बदलना
श्रेष्ठता का पारंपरिक सम्मान	—	माला, श्रीफल और शाल भेंट
— — —		करना
स्वभाव से ही कष्ट दायक ग्रह	—	शनि, मंगल, सूर्य और राहू
कुंडली में सुख या दुःख दायक	—	भाव विशेष की हालत
जैसा साथी ग्रह वैसा फल दायक	—	बुध ग्रह
खराब चन्द्रमा	—	कम प्रकाश वाली तिथियों में
वज्रपाणि	—	इंद्र (अन्यायकारी शक्तियों का
— — —		नियंत्रक)
5—9वें भावों पर पूरी दृष्टि	—	राहु , केतु
लग्नराशि	—	धरती या शरीर का विशेष
— — —		बारहवां हिस्सा (हम पृथ्वी के
— — —		पुत्र हैं)
उच्चराशिगत पाप ग्रह	—	अच्छा फल (कम खराब)
रैबीज होने के खतरे के दिन	—	काटने से 10वें दिन से 90
— — —		दिन के बीच
शिवपत्नी सती	—	ब्रह्मविद्या (अध्यात्म)

दक्ष	—	नितान्त भौतिकवादी दृष्टि
— — —		कोण (शरीर ही आत्मा)
भस्म	—	नीच मनोवृत्तियों की राख
त्रिपुरासुर	—	तीन गुणों में आसक्ति वाला
तीन गुणों से रहित पद	—	शिव (अनासक्त)
भगवान् की प्रियतम चीजें	—	गंगाजल जैसी नितांत
— — —		प्राकृतिक अवस्थावाली
पांच पवित्र गकार	—	गायत्री, गौ, गंगा, गीता और
— — —		गोविंद या कृष्ण
अध्यात्मसम्मत व्यावसायिकोन्नति	—	वैदिक वर्ण व्यवस्था (केवल
की आधार		भगवान् की सेवा के लिए)
रावणराज्य का नाशक	—	बंदी शनिदेव (देवापमान)
राम का प्रिय	—	निर्मल मन वाला आदमी
सर्वोपकारी काम	—	दिखावे और स्वार्थ से रहित
— — —		भगवदर्पण
वेदों का लक्ष्य	—	यज्ञों (दान) के द्वारा सर्वजीवोकार
ग्रीष्म ऋतु का सर्वोत्तम दान	—	जल (पौ)
आतंकवाद / दहशत के	—	काफर और जिहाद
उत्पादक शब्द		— — —
श्रीराम शर्मा का मुख्य नारा	—	हम बदलेंगे तो युग बदलेगा
संपत्ति के अधिष्ठातृ देवता	—	विष्णु (धैर्य) और लक्ष्मी (शांति)
पांच महापर्व	—	धन्वन्तरि तेरस, नरक चतुर्दशी,

– – –		दीवाली, गोवर्धन पूजा/भाईदूज
सर्वश्रेष्ठ बलि	–	घी से भरे गरी के गुट की
आसुरी आचार–व्यवहार का	–	रावण
प्रतीक मनुष्य		– – –
यमराज/संयम की पूजा का लाभ	–	यमराज के दंड से मुक्ति
– – –		(संयमी सदा सुरक्षित)
नरकासुर	–	गंदगी फैलाने वाले मनुष्य का
– – –		प्रतीक
पूर्व दिशा का पालक	–	इन्द्र
दक्षिण–पूर्व का पालक	–	अग्नि
दक्षिण का पालक	–	यम
दक्षिण–पश्चिम का पालक	–	सूर्य
पश्चिम का पालक	–	वरूण
पश्चिम–उत्तर का पालक	–	वायु
उत्तर का पालक	–	कुबेर
उत्तर–पूर्व का पालक	–	सोम
आकाश का पालक	–	ब्रह्मा
पाताल का पालक	–	शेषनाग
गर्ग संहिता का विषय	–	कृष्णचरित्
अजवायन के गुण	–	विटा.ए और बी, कैल्शियम,
– – –		सोडियम, आयरन, मोटापा
– – –		रोधक आदि

दर्दशामक	–	नमक की पोटली तवे पर सेंक
– – –		कर दर्दवाले स्थान पर यथा
– – –		सहनशक्ति लगाना
परनिंदक	–	पाप कमाने वाला
हमारा मन (सोच)	–	हमारी प्रकृति/स्वभाव की
– – –		उपज
भगवान् के लिए किया जाने	–	रामकाज (हनुमानवत्) या
वाला काम		सर्वहितार्थ या मानवीय
– – –		मर्यादा के रक्षार्थ
आत्मा का आवरण	–	प्रतियोगिता (परधर्म/परगुण)
विलासपुर का असली नाम	–	व्यासपुर
सृष्टि का सर्व प्रथम सनातन	–	शिव का विवाह
सम्मत विवाह		– – –
बुरे से बुरे समय की साथी	–	आशा की किरण
शाकाहार का लाभ	–	स्पष्ट और जल्दी समझ आना
प्रसिद्ध शाकाहारी	–	टॉल्स्टॉय, महात्मा गांधी,
– – –		सुकरात आदि
शिव की प्रियतम पूजावस्तु	–	बिल्व पत्र
श्वासरोग शामक	–	रूद्राभिषेक (असाध्यरोग
– – –		का भी)
रोग का कारण	–	पूर्वकृत अपराध या अज्ञानता
असाध्यरोग कारण	–	6 – 8 में बैठा नीच का शनि

शनि शामक	–	शनि का व्रत और गणपति
– – –		अथर्वशीर्ष का पाठ
आधुनिक आध्यात्मिक कवि	–	मसनवी रूमी
कमजोर पाचनशाक्ति	–	भोजन पूर्व हिंग्वष्टक चूर्ण घी
– – –		के साथ
बवासीर	–	सवेरे जागने पर गुनगुने पानी
– – –		से अर्शकुठार रस
शारीरिक/बौद्धिक कमजोरी	–	गुनगुने पानी से अश्वगंधा चूर्ण
खराब सूर्य का फल/उपाय	–	दरिद्रता, विष्णु की आराधना
खराब चंद्रमा का फल/उपाय	–	प्रजनन कष्ट, शिव की आराधना
खराब मंगल का फल/उपाय	–	संतान कष्ट, हनुमान को चोला
– – –		चढ़ाएं
खराब बुध का फल/उपाय	–	कमजोर बुद्धि, सिद्धकुंजिका
– – –		स्तोत्र पाठ
खराब बृहस्पति का फल/उपाय	–	नाना कष्ट, पीला तिलक
खराब शुक्र का फल/उपाय	–	पत्नी कष्ट, गो सेवा
खराब शनि का फल/उपाय	–	पीड़ा, छाया पात्र दान
खराब राहु का फल/उपाय	–	घाटा व मतिभ्रम, भैरव पूजा
खराब केतु का फल/उपाय	–	कष्ट, काली गाए को रोटी दें
शुभ आशीष् वचन	–	आरोग्यवान्/सौभाग्यवती भव
विवाह विच्छेदक	–	खराब शनि, सूर्य, राहु या
– – –		द्वादशेश से जुड़ी राशि

तीन गुणों का उत्पत्तिस्थान	–	शरीर (गुण एक नजरिया)
जन्म/मरण/बुढ़ापे से छुड़ाने	–	तीन गुणों से पार होना
वाला		(मेहनत का फल भगवान् पर
– – –		छोड़ना)
भारत में भूखे सोने वाले लोग	–	23 करोड़ (अनुमान)
भगवान् शिव की पसन्द	–	भांग, धतूरा और घोटा
– – –		(विषपान के प्रतीक)
उन्नति का उपाय	–	साथ उठना और फूलना–
– – –		फलना
बेश्क वालों का देवता	–	बडमू (पशु धन रक्षक)
क्षेत्रपति का स्थानीय नाम	–	थान या स्थानदेवता
बीजेश्वर और शिरगुल का	–	हिंसक प्रवृत्ति की भंग्याणी
वैमनस्य कारण		देवी में आस्था–अनास्था
भगवान् विष्णु का घरेलु नाम	–	ठाकुर (संसारपालक राजा)
कांगड़ू भारद्वाजों के गांव	–	घट्टी, हामणी, जेखड़ी और
– – –		हेऊं (इष्टदेवी और देवता
– – –		ज्वाला और बीजेश्वर)
हिडिम्बा का स्थानीय नाम	–	झाला रि देवि, टुंडि (छिन्न
– – –		हस्ता), घातक देवी
जनेऊ	–	विश्वोपकारार्थ यज्ञ द्वारा पवित्र
– – –		किया गया धागा (सृष्टि आरंभ
– – –		में प्रजापति ब्रह्मा से पैदा)

भगवान् राम के गायत्री गुरू	–	वशिष्ठ
भगवान् कृष्ण के गायत्री गुरू	–	संदीपनि
सर्वभयनाशक मंत्र	–	ओम् ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय नमः
जनेऊ के नौ धागों के देवता	–	ओम्कार, अग्नि, सर्प, सोम,
– – –		पितर, प्रजापति, वायु, यम,
– – –		विश्वेदेव (धारणार्थ पूजन)
जनेऊ की तीन गांठों के देवता	–	ब्रह्मा, विष्णु और शिव (पूजन)
दो कालों की संधिमें की	–	संध्या
जानेवाली उपासना		– – –
जपनीय गायत्रीमंत्रसंख्या	–	10 (दस)
मार्जन का मतलब	–	सफाई (मंजाई)
अघमर्षण	–	अपराध निवारण (भूलवश कृत)
अर्ध्य	–	जलार्पण
उपस्थान	–	देवता के पास हाजरी देना
ऋषि द्वारा अनुभूत मंत्र	–	भगवत्प्राप्तिदायक (समस्त
– – –		जीवों के प्रति प्रेमोत्पादक)
देवताओं के मृत्यु भय के आच्छादक	–	छन्द
मंत्र	–	देवता की ध्वनिरूप मूर्ति
गायत्री मंत्र द्वारा धारणीय	–	परमात्मा की भर्ग या तेजस्
– – –		नामक ऊर्जा (शक्ति)
जप करने वाले की प्राणरक्षक	–	मां गायत्री (सर्वविध इच्छापूरक)
संसार को प्रकाशित करने वाली	–	सूर्य की शक्ति सावित्री

वाणी का स्वरूप	–	सरस्वती (सृजन, रचना या
– – –		कला के लिए आराध्या)
द्विजत्व या ब्राह्मणत्व दायक	–	षोडश संस्कार (प्रयोजन के
		ज्ञानपूर्वक)
शूद्र (पवित्र सेवा भाव) से	–	गायत्री जप से रहित पहले
भी गिरा हुआ		तीन वर्ण वाला आदमी
गायत्री उपासना का लाभ	–	आत्मशक्ति की वृद्वि
गायत्रीके नाम	–	सत्–चित्–आनन्द, हिण्यगर्भ,
– – –		ब्रह्मतेज, परमात्मा, सर्वात्मा,
– – –		सोऽहम्, भोगदा, जगन्माता
– – –		और प्रकृति
अमरपद(स्वतंत्रता)का अधिकारी	–	निष्काम सहज कर्म करने वाला
आत्मदर्शन/अनुभव का अधिकारी	–	सत् कर्म करने वाला
गायत्री	–	पिता से श्रेष्ठ, हानिकारक
– – –		प्रेतादि योनियों से बचाने वाली,
– – –		ब्रह्मयोनि, वरदा, ब्रह्मवादिनी,
– – –		विश्वमाता
धूप के आठ अंग	–	जटामांसी, गुग्गल, चंदन,
– – –		अगुरू, कपूर, शिलाजीत, मधु
– – –		और कुंकुम
क्षीरसागर मथने की मथनी	–	मंदराचल पर्वत
पृथ्वी, अंतरिक्ष और स्वर्ग का	–	सूर्य

प्रकाशक		— — —
जप का लाभ	—	असत् कर्म के नाशपूर्वक
— — —		सत्कर्म में प्रवृत्ति, परमात्मतेज
— — —		से बुद्धि में चमक, अचूक
— — —		मनोबल की प्राप्ति
विश्वामित्र को जप का लाभ	—	इन्द्र पर विजय
गायत्री का ऋषि	—	विश्वामित्र (ब्रह्मा)
गायत्री का छन्द	—	गायत्री
गायत्री का देवता	—	सविता (परमात्मा)
गायत्री का गोत्र	—	सांख्यान
24 अक्षर	—	ब्रह्मांड की दिव्य 24 शक्तियां
उपासना	—	परमात्मा को जीवन में उतारना
हिण्यगर्भ	—	वेदात्मा ब्रह्मा
हंस	—	विवेक का प्रतीक पक्षी
प्राणायाम में श्वास बाहर छोड़ना	—	आसुरी शक्तियों को बाहर फेंकना
कपालभाति का लाभ	—	चित्त की निर्मलता
साधना	—	मन को वासना (स्वार्थ) से
— — —		मुक्त करना
ह्रीं श्रीं क्लीं	—	अध्यात्म, धर्म और संसार के
— — —		बीजाक्षर (क्रमशः)
गायत्री की अन्य विशेषताएं	—	मृत्युलोक की कामधेनु, कलियुग
— — —		का कल्पवृक्ष, ईश्वर का स्तुतिगान

गायत्री के एक चरण में अक्षर	—	8 (आठ)
गायत्री के महान् उपासक	—	महाराजा अश्वपति
तीन	—	गायत्री पद, गुण और वेद आदि
श्रेष्ठ जप	—	मंत्र के चरणों का अलग–अलग
— — —		उच्चारण (अर्थ समझकर)
सपादलक्ष जप का लाभ	—	दोषों और पापों की निवृत्ति
तेजस्	—	प्रतिभा या ब्रिलिएंस
गायत्री यंत्र हेतु श्रेष्ठ धातु	—	तांबा
पुत्रप्राप्ति हेतु माला	—	चंदन की
वातनाशक बीजमंत्र	—	हुं
कफ–पित्त नाशक मंत्र	—	ऐं
7 व्याहृतियां	—	भूः आदि
महाकाल	—	सूर्य के पुत्र यम
जलार्पण का लाभ	—	विनम्रता की प्राप्ति
नैवेद्य का लाभ	—	मधुरता की प्राप्ति
धूप का लाभ	—	सुगंध विस्तार (सद्गुण)
दीप का लाभ	—	प्रकाश (ज्ञान) विस्तार
अक्षत का लाभ	—	अखंडता या एकता
पुष्प का लाभ	—	प्रसन्नता
पूजोपचारों का लाभ	—	चैतन्य का प्रकटीकरण
चैतन्य शक्ति की नियामक	—	गायत्री
जड़ (भौतिक विज्ञान) की	—	सावित्री (परमाणु शक्ति)

नियामक		— — —
दुःख के तीन कारण	—	अज्ञान, अशक्ति और अभाव
देवताओं की नीति	—	कुछ देना
तीन चरणों का अभिप्राय	—	ब्रह्मचिंतन, ब्रह्मधारण और
— — —		सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना
आचमन का प्रयोजन	—	मुख प्रक्षालन
अन्य उपचार	—	हस्ते अर्ध्यम्, शिरसि पंचामृतम्
— — —		और यज्ञोपवीत पहनाना,
— — —		तिलक, अक्षत गले में,
— — —		पुष्पमाला आदि
सौभाग्य द्रव्य	—	सिंदूर
संध्या	—	परब्रह्म या परमेश्वर का ध्यान
— — —		(सर्वकामनापूरक)

नाम मंत्रों से सर्वसुलभ देवपूजन (विद्वत् सम्मत)

स्नानकाल, संध्या, देवमूर्ति पूजन, मन्दिर, हवन, शुभकार्यारंभ, पर्वकाल और मुहूर्त्त लगाते समय संकल्पपूर्वक नीचे लिखे नाममंत्रों के उच्चारण के साथ अक्षत और आहुति आदि चढ़ाने से समस्त देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है। ये देवता हमारे जीवन के लिए महान् प्रेरणा स्त्रोत हैं। हर देवता हमें अपनी अपनी शक्ति प्रदान करते हैं। हर देवता में परमेश्वर का निवास और परमेश्वर में समस्त देवताओं का निवास होता है। ये हमें एक में अनेक और अनेकों में एक की अनुभूति प्रदान करते हैं, जो कि विश्वसंस्कृतिका मूल है। इस सरल और संक्षिप्त पूजन विधि का लाभ पवित्र होकर कोई भी आम आदमी उठा सकता है :—

ओम् श्री गणेशाय नमः।

ब्राह्ममूहूर्ताय नमः।

पृथिव्यै नमः।

कराभ्यां नमः।

मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।

देशकालाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः।

शिखायज्ञोपवीताभ्यां नमः।

शिवपंचायतन देवताभ्यो नमः।

गुरूभ्यो नमः।
सर्वेषां जनानां कुलग्रामस्थानेष्टदेवताभ्यो नमः।
गृहवास्तुदेवाय नमः।
ड्यारशदेवाय नमः।
बीजेश्वराय नमः।
नगरकोट्यै नमः।
नर्मदेश्वराय नमः।
गणदेवताभ्यो नमः।
परहाड़ (पढार) देवाय नमः।
शूलिन्यै नमः।
तारादेव्यै नमः।
ज्वालायै नमः।
गायत्री परमात्मने नमः।
महाकालिकायै नमः।
महालक्ष्म्यै नमः।
महासरस्वत्यै नमः।
ब्रह्मणे नमः।
विष्णवे नमः।
शंकराय नमः।
गंगायै नमः।
यमुनायै नमः।
लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

द्वादश ज्योतिर्लिंगेभ्यो नमः।
सनकादि ऋषिभ्यो नमः।
कैलाशादि पर्वतेभ्यो नमः।
अतलादि पातालेभ्यो नमः।
वशिष्ठादिसप्तर्षिभ्यो नमः।
षष्ठीदेव्यै नमः।
अश्वत्थामादि चिरजीविभ्यो नमः।
हरिश्चंद्राय नमः।
बलरामाय नमः।
सीतारामाभ्यां नमः।
राधाकृष्णाभ्यां नमः।
नवदुर्गायै नमः।
अहिल्यादि पंचकन्याभ्यो नमः।
अयोध्यादि सप्तपुरीभ्यो नमः।
मत्स्यादि चतुर्विंशति अवतारेभ्यो नमः।
ब्राह्मणेभ्यो नमः।
अग्नये नमः।
वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।
उमामहेश्वराभ्यां नमः।
शचीपुरंदराभ्यां नमः।
धन्वन्तरये नमः।
ओम् काराय नमः।

यन्त्रमंत्रतंत्रेभ्यो नमः।
ब्रह्मगायत्र्याः चतुर्विंशति अक्षरशक्तिभ्यो नमः।
आद्यायै नमः।
ब्राह्मयै नमः।
वैष्णव्यै नमः।
शांभव्यै नमः।
वेदमात्रे नमः।
देवमात्रे नमः।
विश्वमात्रे नमः।
ऋतंभरायै नमः।
मंदाकिन्यै नमः।
अजयायै नमः।
ऋृद्ध्यै नमः।
सिद्ध्यै नमः।
सावित्र्यै नमः।
कुंडलिन्यै नमः।
प्राणाग्नये नमः।
भुवनैश्वर्यै नमः।
भवान्यै नमः।
अन्नपूर्णायै नमः।
महामायायै नमः।
पयस्विन्यै नमः।

त्रिपुरायै नमः।
ब्रह्मांडरूपाय कलशकुंभाय नमः।
अपां पतये वरूणाय नमः।
सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः।
गौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः।
सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः।
गणपत्यादि पंचलोकपालेभ्यो नमः।
इंद्रादिदश दिक्पालेभ्यो नमः।
रक्षाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः।
दिव्यादिचतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः।
वासुक्यादि अष्टकुलनागेभ्यो नमः।
चतुर्वेदेभ्यो नमः।
सर्वतोभद्रमंडलदेवताभ्यो नमः।
कार्तिकेयाय नमः।
हनुमते नमः।
परशुरामाय नमः।
मार्कण्डेयाय नमः।
द्वारमातृकाभ्यो नमः।
सिद्धपीठेभ्यो नमः।
वेदव्यासाय नमः।
विश्वोपकारिणे सनातनधर्माय नमः।
धर्माचार्येभ्यो नमः।

अर्यमादि पितृभ्यो नमः।
यमराजाय नमः।
शुकदेवाय नमः।
नारदाय नमः।
दशमहाविद्याभ्यो नमः।
महाभैरवाय नमः।
एकादशरूद्रेभ्यो नमः।
पुराणादिधर्मशास्त्रेभ्यो नमः।
वृंदावनप्रयागपुष्करादि तीर्थेभ्यो नमः।
बद्रीनाथादि चतुर्धामभ्यो नमः।
अश्विन्यादि नक्षत्रेभ्यो नमः।
प्राणाय नमः।
तुलस्यै नमः।
एकादश्यादि व्रतेभ्यो नमः।
सत्यादि युगेभ्यो नमः।
मनुशतरूपाभ्यां नमः।
विश्वकर्मणे नमः।
शेषनागाय नमः।
गर्गभारद्वाजादि ऋषिभ्यो नमः।
शिवपरिवाराय नमः।
भारतमात्रे नमः।
साकेतादि दिव्यधामभ्यो नमः।

ध्रुवप्रह्लादादि भक्तेभ्यो नमः।
कामधेनवे नमः।
कल्पवृक्षाय नमः।
महाकालाय नमः।
अकालाय नमः।
कुलपुरोहिततीर्थपुरोहितेभ्यो नमः।
महामृत्युंजयाय नमः।
विष्णवे नमः।
गरूड़ाय नमः।
वसिष्ठगौतमच्यवनादिभ्यो नमः।
भरतार्जुनबलिविभीषणेभ्यो नमः।
अंबरीषशौनकविदेहेभ्यो नमः।
द्रौपदीमंदोदरीभ्यां नमः।
कुरूक्षेत्रगयाप्रभासादिभ्यो नमः।
अश्विनीकुमार विश्वकर्माविश्वेदेवादिभ्यो नमः।
सप्तनीकसपरिवार सर्वेभ्यो देवभ्यो नमः।
जगन्नाथकुबेरनृसिंहबुद्धजिनेन्द्रादिभ्यो नमः।
वैद्यनाथपशुपतिनाथरघुनाथवेंकटेशादिभ्यो नमः।
मंगलाबालासुंदरीनैनादेवीचामुंडात्रिवेणीरेणुकादिभ्यो नमः।
गुग्गादिसर्वदेवताभ्यो नमः।
महाराणाप्रतापसुभाषगांधी विवेकानंदरामदेवअण्णादि महापुरूषेभ्यो नमः।

हरिद्वारे गंगासभासंस्थापकाय पं. मदनमोहनमालवीयाय नमः।
धर्मात्मने बघाटराजाय दुर्गासिंहाय नमः।
सनातनधर्मरक्षकेभ्यो नमः।
भारतवासिभ्यो नमः।
परशुरामादि अवतारेभ्यों नमः।

जीवन के पवित्र लक्ष्य की ओर (प्रेरक सूत्र)

उपनयन का अर्थ है गुरूकुल में प्रवेश दिलाना।
गायत्री जप–तीन गुणों में रहते हुए परमात्मा से जुड़ाव ।
दाएं कान में–देव निवास।
जनेऊ का धारण और विसर्जन–समंत्र।
अपात्र गुरू से दीक्षा–शिष्यहानि।
अपात्र शिष्य से–गुरू की हानि।
मन्त्र और गुरू का नाम–गोपनीय।
जनेऊ परिवर्तन–शवदाहोपरान्त, तीसरे महीने तथा श्रावणी आदि पर्वों पर।
समंत्र भगवान् को चढ़ाने से हर वस्तु पवित्र हो जाती है।
पहला तिलक या वस्तु–भगवान् को।
संध्या से –अज्ञानजनित दोषों का निवारण।
भूः भुवः स्वः–क्रमशः शरीर, मन और चेतना।
संस्कार–शरीर में अच्छे गुणों का प्रवेश करवाना।
गायत्री–ब्रह्माजी की पत्नी।
गर्भाधान–बीज और गर्भसंबन्धी दोषों का निवारक संस्कार।
पुंसवन संस्कार–पुत्र की प्राप्ति हेतु।
अन्नप्राशन–गर्भ में मलिनताभक्षणदोष का शामक।
आठवां संस्कार जनेऊ–वेदाध्ययन में अधिकार की प्राप्ति

हेतु।
ब्राह्मण या ब्रह्मज्ञाता के रूप में जन्म देने वाला गुरू (पिता) जन्मदाता से श्रेष्ठ होता है।
वेद या भगवान् रूप शरीर देने वाला–आचार्य का गर्भ या ब्रह्मज्ञान।
जनेऊ रहित ब्राह्मण–व्रात्य, अपने कर्म से पतित या असामाजिक।
शिष्य का भोजनवस्त्राधार–आचार्यकुल में गोचारण और भिक्षा आदि।
जनेऊ से प्राप्त दूसरा जन्म–ईश्वरीय प्रयोजनार्थ।
ईश्वरीय प्रयोजन–सर्वे भवन्तु सुखिनः या सर्वजीवोपकार।
गुरूकुलों की वैदिक शिक्षा का आधार–गृहस्थ लोगों से प्राप्त भिक्षान्न या चंदा।
शिष्यार्थ नियम–मांस, स्त्रीसंग, दुर्व्यसन और नदी से दूरी।
गायत्री के रूप–त्रिदेव, वेद एवं समस्त जीव–अजीव।
जल्दी बूढ़ा बनाने वाला–प्रकृतिविरोधी दिखावे वाला जीवन या विलासिता।
गायत्री की आदर्श प्रेरणा–सभी वर्णों द्वारा अपने स्वाभाविक काम से भगवान् की पूजा करना।
ज्ञान–मोक्ष या नित्य सुख में रूचि होना।
विज्ञान–शिल्पादि शास्त्र।
जनेऊ–ब्रह्मा का सगा भाई और यज्ञ करने का अधिकार देने

वाला।
जनेऊ–यज्ञ के द्वारा पवित्र किया गया और जीवन को परोपकार में लगाने वाला पवित्र धागा।
ब्राह्मण का अनिवार्य कर्त्तव्य–वेदाभ्यास।
श्रेष्ठतम ब्राह्मण–श्रोत्रिय (वेदज्ञ)।
युवकों के लिए हानिकारक–विदेशी जीवनशैली का मोह।
गुलामी की निशानियां–क्रिकेट का प्रेम और अंग्रेजी की अनिवार्यता।
द्विज–जनेऊ से प्राप्त दूसरा जन्म लेने वाला।
जनेऊ का अपमान–महापाप (परमात्मा का अपमान)।
शस्त्र और शास्त्रज्ञान के प्रेरक महापुरूष–गुरूनानक देव।
वेदान्तज्ञाता–निर्मले सिख (पौंटासाहब मूलक)।
गायत्रीमंत्र का उपासक शहीद–रामप्रसाद विस्मिल।
ग्यारहवें रूद्रावतार–हनुमान जी।
भगवत्प्राप्ति में सहायक–पवित्र भाव से किया जाने वाला नित्यकर्मपूर्वक कर्मकांड।
भगवान् शिव द्वारा खोजा गया सर्वप्राचीन पवित्र शहर–काशी।
अर्थ समझे विना, मजबूरी या अविश्वास से किया गया कर्मकांड और तीर्थयात्रादि–निरर्थक।
प्रत्यक्ष आरोग्यदायक देवी–तुलसी।
विष्णुस्वरूप शालिग्राम–गंडकी (पटना) नदी से प्राप्त।
विष्णुप्रिया नाम का कारण–अटूट दृढ़ सतीत्व या देवत्व।

हमारे कामों का लक्ष्य—इदं राष्ट्राय न मम या स्वदेशसेवा भावना (मेरे अमुक काम से भारत का भला हो)।
सर्वहितकारी संगठन में ईश्वरीय शक्ति का निवास होता है।
परोपकार या यज्ञ का प्रतीक—राष्ट्रध्वज का भगवा रंग।
ब्रह्मकपाली में अपने क्रिया—कर्म स्वयं करने वाला महापुरूष—गुरू गोलवल्कर।
स्वयं परम सात्विक होकर तमोगुणियों पर शासन करने वाले देवता—शिव।
भगवान् शिव को विशेष प्रिय—दूध, गंगाजल, बिल्वपत्र और शहद।
शिवलिंग का पृथ्वी पर प्रकटन दिवस—फाल्गुन कृष्ण 14 (शिवरात्रि)।
बारह ज्योतिर्लिंग—ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर शिव द्वारा धारित 12 रूप।
भगवान् शिव के तीन प्रधान शिष्य—रावण, मार्कण्डेय और परशुराम।
वेद और तंत्र के अधिष्ठाता—शिव।
स्त्री मात्र के लिए लोक—परलोक में सुख दायक सर्वोत्तमसाधन सतीत्व या पातिव्रत्य धर्म।
भगवान् शिव के दिव्य स्वरूप का मनन—नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय। नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मैनकाराय नमः शिवाय ।।

असुरों पर देव विजय का कारण—भगवान को साक्षी मानकर काम करना।
असुरों की पराजय का कारण—भगवान के साक्षित्व या देख—रेख के विना केवल अपने अहं के बलबूते पर स्वार्थ पूर्ण काम करना (बलिवत्)।
समुद्रमंथन के समय मंदराचल के डूबने का कारण—दैत्यराज बली के आसुरी अहं भाव वाला नेतृत्व।
मंदराचल का उद्धारक—गणेशपूजोपरान्त कच्छपावतार।
नित्य सन्यासी—द्वेष और आकांक्षा से रहित मनुष्य।
अदृश्य कष्ट निवारक—मोरपंख से शरीर का समंत्र झाड़ना।
जलप्रोक्षण हेतु—फूल, जूब या कुशा।
सर्वकामनापूरक—अपने से बड़ों और श्रेष्ठों का अभिवादन।
समस्त कष्टनिवारक—पवित्र सर्वजीवोपकारी जीवन।
3—6—11वें भावों में शुभ ग्रह—राहु, मंगल और शनि।
मंगल का मारक प्रभाव अपने ऊपर लेने वाला—घट या अर्क से विवाह (कन्या का)।
मनोविकार शामक—संसार पालन रूप ईश्वरीय प्रयोजनार्थ जीवनयापन।
हमारा शरीर—हमारे माता—पिता का दिया हुआ सर्वोत्तम उपहार।
पुंडरीक को भगवान् विट्ठल के दर्शन—मातृ—पितृ सेवावश।
वेदविज्ञान पाठशाला उज्जैन की बर्दी—पीली धोती और सफेद

कुर्ता।
गायों के संभावित नाम–देवी या नदी के नाम पर गंगायमुनादि।
वेदों को छिपाकर पाताल ले जाने वाले हयग्रीव के संहारक–भगवान मत्स्य।
सर्वोत्तम प्रबंधन गुरू–अपने सहयोगियों को अधिक महत्त्व देने वाला।
किसी भी भाव पर खराब ग्रह की स्थिति या दृष्टि–उस भाव के फल को खराब करने वाली।
सूर्य खराब–नियम तोड़ने वाला।
चन्द्रमा–अति विनम्र।
मंगल–कड़क।
बुध–बाल की खाल उतारने वाला।
बृहस्पति–भाग्यवादी।
शुक्र–बस मेरा काम बन जाए।
शनि–बहुत सोचकर काम करे।
राहु–शरारती।
केतु–आलसी।
मानवमात्र की उन्नति का आधार–अपने और सबके सहज गुणों को महत्त्व देना।
हमारे किसी भी धार्मिक काम में कुल पुरोहित का पूजन–आवरण अनिवार्य होता है, वह कुल का उद्धारक होता है।

तीर्थ यात्रा में भी अपने कुल के तीर्थ पुरोहित का दर्शन–पूजन अनिवार्य होता है।
बड़ोग–रेलवे ट्रैक को बनाने में असफल होने पर आत्महत्या करने वाले अंग्रेज इंजीनियर का नाम।
विवेक के प्रबल शत्रु–क्रोध और असहनशीलता।
शुभ परिवर्तन का आरंभ–हम से।
उपलब्धि से अधिक संतोषजनक–प्रयास।
सैन्यबल से भी प्रबल शक्ति–अहिंसा।
भीतर की शांत आवाज–दुनिया की शासक (चेतना)।
क्षमा न कर सकना–कमजोरी।
पतिव्रता धर्म का फल–परमात्मानुभूति (वृंदा या तुलसी वत्)।
विवेकनाशक–बदले की भावना।
भूखा श्रमिक–हमारे लिए शर्म।
कायरता का इलाज–खतरों का सामना। (कार्तिकेय वत्)
अस्पृश्यता का मूल–अस्वच्छता और अनैतिकता।
सच्चे आनंद का साधन–कथनी करनी में एकता।
रोगों का कारण–प्राकृतिक नियमों का त्याग (दवाइयों की गुलामी)।
हिंसाशामक–आत्मपीड़ा को सहना।
सर्वोत्तम समाज सेवा–स्वदेशी विचारों और वस्तुओं का प्रयोग (रामदेववत्)।
आर्थिक आजादी दायक–खादी का प्रयोग।

फसल का पहला हकदार–उत्पादक किसान।
यातुधान–राक्षसों का एक भेद।
विरोध योग्य–निरंकुश व्यक्ति।
स्वराज (वैदिकशब्द)–आत्मानुशासन।
उमाकुमारी–संसार को रचने वाली परब्रह्म की इच्छा शक्ति।
मूलाधारस्थ चक्राकार कुंडलिनी को जाग्रत करके नाड़ी द्वारा सहस्रारस्थ परमानन्द शिव तक ले जाने वाला–गुरूमंत्र (स्वधर्मानुसार)।
हमारे जीवन में कर्मफल का भोग ग्रहों द्वारा तय होता है।
हमारी जन्मदाता माँ प्रसन्न तो जगन्माता प्रसन्न।
अहंकार हमें कमजोर करता है।
महावीर हनुमान अहंकार रहित होने से बलवान्।
जीवन का सबसे बड़ा पुरूषार्थ अहंकार पर विजय पाना है।
समस्त वस्तुएं राममय हैं।
हमारे जीवन का उद्देश्य हनुमान जी की तरह राम (अपने आदर्श) के लिए काम करना है।
रामकाज करने में अनगिनत बाधाएं आती हैं।
हमारे जीवन का रास्ता हमारी आत्म चेतना तय करती है।
असुरसंहारिका माँ दुर्गा तमोगुणियों की शासक हैं।
दुर्गा की उपासना हमारी आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाती है।
सती माता (जीवात्मा) ने करखल में अपने पति शिव (परमात्मा) के अपमान से अपने शरीर को योगाग्नि में जला दिया था।

इकावन शक्तिपीठों का आधार–सती माता के अंगों और आभूषणों के गिरने के स्थान।
यदुवंशियों की कुलदेवी या शक्तिपीठ–देवीकूप (कुरूक्षेत्र)।
देवी–देवताओं की पूजा–उपासना के काल में चारपाई आदि सुखदायक चीजों का प्रयोग वर्जित होता है।
पूज्य कन्याएं–सभी वर्णों की 2 से 10 वर्ष के बीच की।
नौ कन्याओं के नाम क्रमशः–कुमारी, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, कालिका, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा। (नाममंत्रों से पूज्य)
हवन में मुख्य सामग्री–तिल, जौ, बूरा और गोधृत।
बलिदानी राजगुरू की योग्यता–वाराणसी में प्राप्त वेद, व्याकरण और व्यायाम के साथ शिवाजी वाला छापामार युद्ध कौशल।
आकाशचारी शत्रुनाशक देवता–सोम, त्वष्टा, प्रजापति, पूषा और भग।
शालिवाहन द्वारा दक्षिण में हूणों पर विजय का दिवस–वर्ष प्रतिपदा।
युधिष्ठिर के राज्य की स्थापना–इकावन सौ वर्ष पूर्व।
शिखाबंधन–सर्व जीव कल्याण रूप ईश्वरीय शक्ति का संग्रहण।
विष्णु का स्मरण–शरीर और मन का शोधक।
आचमन–मानसिक उत्तेजना का शमन।

प्राणायाम–प्राण या जीने की शक्ति की वृद्धि।
मार्जन–शरीर को मांजना या साफ करना (सफाई का प्रतीक)।
अधमर्षण–पापों या अपराधों को नष्ट करना।
अर्घ्य–जलार्पण द्वारा अपनी दृष्टि और बुद्धि की शक्ति बढ़ाना।
उपस्थान–देवता के दरबार में हाजरी।
हर गरीब, अमीर और उपेक्षित का गुरू–अर्थ समझकर गीता का पाठ।
भारतीय जीवन शैली के आदर्श प्रतिनिधि–पं. मदन मोहन मालवीय, विवेकानंद, स्वामी रामदेव और अण्णा हजारे।
विवाह का प्रमुख लक्ष्य–श्रेष्ठ गुणों वाली संतान की प्राप्ति।
देश के कलंक–मतदाताओं और निर्वाचित नेताओं के बीच के कुछ बिचौलिए कार्यकर्ता।
हिमाचल प्रदेश में सबसे आवश्यक–संस्कृत के सर्वाधिक व्यावहारिक रूप कर्मकांड विषय के लिए एक विश्वविद्यालय।
भारत की दुर्दशा का निवारक–संध्या के समय रामायण और गीता का कम से कम एक एक श्लोक का अर्थ समझकर पाठ।
गायत्रीमंत्र जप–परमात्मा की स्तुति गाना।
प्रदक्षिणा–घड़ी की सुई की दिशा में घूमना।
मंत्रों के वस्त्र–छन्द।
मंत्र–देवता की ध्वनिरूप मूर्ति।
ऋषि–मंत्र से सिद्धि प्राप्त करने वाला।

त्रिकालसंध्या की तीन मालाएं–त्रिशक्ति के लिए।
बलवती उपासना–मंत्रार्थ समझकर।
देवकार्य में दोनों हाथ–दोनों जानुओं के बीच।
अपवित्रता में जनेऊ–दाएं कान पर।
धारणीय जनेऊ–हल्दी में रंगा तथा पूजित–प्रतिष्ठित।
दुःखकारण–परमगुरू परमात्मा का विस्मरण।
संकटनिवारक–परमात्मनाम (गायत्री) जप।
हम सब तिनके से लेकर ब्रह्मा तक संसार की तृप्ति और शांति के लिए जल अर्पण करते हैं।
दुश्मनी के अंदर भी दोस्ती की संभावना होती है।
मेहनत का एक रूपया मुफत् के पांच रूपए से अधिक मूल्यवान् होता है।
अपने स्वाभाविक कर्मकौशल को जरूरतमंदों की सेवा में लगाया जा सकता है।
परोपकार का मार्ग कंटीला होता है मगर असंभव नहीं।
सफलता के तीन चरण–उपहास, विरोध और स्वीकृति।
सच्ची वीरता अपने स्वाभाविक काम को दृढ़ता के साथ करने में है।
सहनशीलता हम धरती माता से सीख सकते हैं।
सेवा करना नेतृत्व करने से बेहतर है।
शिक्षा का आरंभ और अंत मनुष्यता की प्राप्ति में है।
मनुष्यता तंगदिली का त्याग है।

हमारा अंतरात्मा ही परमात्मा है।
भारत में संस्कृत के विद्यार्थियों की कुल संख्या–70 लाख।
विश्व में संस्कृताध्ययन–35 देशों के 200 विश्वविद्यालयें में।
सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा–संस्कृत।
शिव–पार्वती–आत्मा और बुद्धि या सती माता।
तामसी मति रौद्रावतार रूप में शिवात्मा पर सवार होकर शरीर (सृष्टि) का विध्वंस करती है।
आनन्दमय परोपकारिणी माँ सरस्वती सात्विक बुद्धि या ज्ञान की देवी हैं।
माँ लक्ष्मी राजसिक धन–समृद्धि की देवी हैं।
तामसिक वस्तु एवं ज्ञान विध्वंसकारी होते हैं।
माँ गायत्री तीनों गुणों से परे परम चेतना रूपा हैं।
प्रार्थना मंत्र–हमारी बुद्धि तीन गुणों से परे विश्वकल्याणकारी परमचेतना द्वारा प्रेरित रहे।
माँ गायत्री निर्मल निर्विकार चित्त (मन) रूपा और समस्त समस्याओं, दुःखों और पापों को मिटाने वाली है।
हमको गिराने और उठाने वाला तत्त्व–अहम् रूप अणु।
प्रार्थना–हम ब्रह्मतेजो मय होकर सर्वोपकारी बनें।
त्रिगुण रहित ब्रह्म की उपासना से हम भी त्रिगुण रहित हो जाते हैं।
ब्रह्मतेजो मय ज्ञान या बुद्धि–कल्पवृक्ष या काम धेनु।
जप का लाभ–भूतप्रेतादिनष्ट और निरन्तर शुभ ही शुभ।

हम बघाट वासियों की रक्षणीय वस्तुएं–टोपी, रोटी और माटी।
टोपी–पारंपरिक सम्मान और वेष–भूषा।
रोटी–पारंपरिक रोटी–रोजी के स्त्रोत।
माटी–पारंपरिक जमीन और जायदाद की रक्षा (जमीन या मां को बेचा नहीं जाता)
ढोंग करने से नास्तिक होना अच्छा है।
गरीबों सहित सबका भला करने वाला हमारा आराध्य इष्टदेवता होता है।
अच्छाई हमेशा बुराई से अधिक शक्तिशाली होती है।
स्वार्थ से आदमी सिकुड़ता है, जबकि सर्वार्थ से फैलता है।
उपासना का फल–सर्वोपकारी बुद्धि।
शिवोपासना का फल–गरीबों और असहायों में शिव के दर्शन।
धार्मिकता की कसौटी–परदुःखकातरता।
'रती भर नहीं दूंगा' वाले की गर्दन को कुदरत दबाती है।
प्रथम और अंतिम सत्यरूपा परमचेतना के आगे सबको अंततः झुकना ही पड़ता है, चाहे खुशी से चाहे मजबूरी से।
हमारे व्यक्तिगत श्रम का फल अगर हमारे माता–पिता, समाज और देश को नहीं मिलता तो हमारा जन्म ही व्यर्थ है।
मनुष्य के दुःखों का कारण–गीतोक्त वर्णसंकररूप दोष

(व्यक्तिगत स्वभाव का तिरस्कार)।
तीर्थयात्रा का अभिप्रायः है केवल श्रेष्ठ चीजों का दर्शन।
माता–पिता और समाज की सहमति के बिना विवाह, विवाह नहीं व्यभिचार है।
हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य–असहाय की सेवा का अवसर मिलना।
शिक्षा का उद्देश्य–पहले से विद्यमान योग्यता को उभारना।
आदर्श विचार आदर्श काम को जन्म देते हैं।
हमारा शरीर हमारे पवित्र आदर्श को अपनाने का साधन है।
उपनयन संस्कार–वेदमंत्रों से अपने शरीर को स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ में लगाने के लिए
भगवान सूर्य का स्वागत–सत्कार उनके पधारने से पूर्व करना सर्वोत्तम है।
सूर्यकिरणों के अंदर दिव्य जगन्माता का निवास है।
उपनयन संस्कारोत्सव का स्थल एक पारंपरिक विश्वविद्यालय का रूप है (दयारशघाट वत्)।
माँ गायत्री भगवती से प्रार्थना–हमें भगवान सूर्य की तरह सबका भला करने की बुद्धि दो।
हम जटायु की तरह अनीति का विरोध करने में समर्थ हों। अनीति का विरोध न कर सकने से तो मौत बेहतर है।

प्रेम परमौषधि है। हमारा मूलस्वभाव प्रेम है।

प्रेमी में सहजता होती है। इससे अहंभाव से परे आनंद की अनुभूति होती है। 50 प्रतिशत लोग प्रेम के अभाव में शारीरिक और मानसिक रोगी हो जाते हैं। प्रेम मानसिक रोगों की उत्तम दवा है। प्रेमी विराट्, उदार हृदय तथा सकारात्मक दृष्टि के साथ व्यवहार कुशल होता है।

पहाड़ी शहर शिमला सन् 1864 से 1947 तक ब्रिटिश भारत की ग्रीष्म कालीन राजधानी रहा। सन् 1870 में यह पंजाब की राजधानी बना। श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी यहां प्रकृति की शरण में अपनी रचनाएं लिखी।

ब्राह्मणपुत्री झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में हुआ था। ये भारत विरोधी अंग्रेजों से बदले की भावना रखती थी। इनके अपने लोगों ने ही इनके साथ धोखा किया फिर भी इन्होंने तांत्या टोपे से मिलकर दमनकारी ह्युरोज का मुकाबला जमकर किया।

विश्वरूप भगवान् राम के काम के लिए समर्पित महावीर हनुमान अभिमान रहित होकर आजीवन ज्ञान–विज्ञान की साधना में लगे रहे। वे सूक्ष्म से लेकर विराट् व्यक्तित्व तक धारण कर लेते थे। ये चिरजीवी होकर दानवता के दमनकारी हैं। ये अपने निर्भय रूप से अपने भक्तों के समस्त भयों का नाश करते हैं।

हमारी केदारनाथ धाम की यात्रा में केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग के दुर्लभ दर्शन होते हैं। इस पवित्र पौराणिक

लिंग (सृष्टिकारण) के दर्शन करने हेतु पांडव अपने गुरू–गोत्रादि की हत्या के पाप से मुक्ति के लिए व्यास जी के कहने पर गए थे। भगवान् शिव उनके पापों से अप्रसन्न होकर भैंसे का रूप धारण करके उनसे दूर भागने लगे। उनका सिर पशुपतिनाथ के रूप में नेपाल में जाकर प्रकट हुआ। केदारनाथ में केवल धड़ रूप शिला में शिवदर्शन मोक्षदायक होते हैं। इनके दर्शन से शिवरूपता (सर्वजीव कल्याण रूपता) प्राप्त होती है। यह मंदिर ऋषिकेश से 230 कि.मी. दूर है।

ब्रह्मांड में व्याप्त मूल चेतना गायत्री ज्योतिरूप में विद्यमान है। वे जल, मंथन, फेन, अंड और पृथ्वी रूप में क्रमशः प्रकट होते हुए गायत्री रूप में प्रकट हुई। माँ गायत्री से जन्मे ब्रह्मा ने प्रकट होकर 100 वर्ष तक तप किया जिससे चार पुरूषार्थ रूप चार वेद प्रकट हुए। वे ही जीवन के चार उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हुए। उससे तीन धाराएं गायत्री (अध्यात्म), सावित्री (भौतिक) और सरस्वती (बौद्धिक) प्रकट हुई। इसी से तीन योग भक्ति (वरेण्य या धारणीय), ज्ञान (धीमहि या ज्ञेय) और कर्म (प्रचोदयात् या कर्म प्रेरणा) पैदा हुए।

दर्शनीय स्थल कसौली की एक पुलिस चौकी में 20 अप्रैल 1857 को सैनिकों ने आग लगा दी। दस मई को मेरठ में विद्रोह का आरंभ हो गया। अंग्रेजों ने स्पाटू,

डगशाई और जुन्गा की सैनिक बैरगों में शरण ली। कसौली में गोरखा सैनिकों ने अफसरों के आदेशों को मानने से इन्कार कर दिया। वे सोलह मई को विद्रोह की घोषणा तथा खजाने पर अधिकार करके जतोग की ओर बढ़ने लगे।

हमारे रसोई घरों के डिब्बों में रखी सौंफ पाचन, आयु और शक्ति को बढ़ाते हुए मुंह को भी साफ रखती है। यह पेट की गैस, कब्ज, पेटदर्द, दृष्टि दोष और कफ दोषों को शांत करती है। इसकी चाय से आंतों को फायदा मिलता है। इसके अंदर समस्त विटामिन और खनिज मौजूद हैं। धीमी आंच में इसको सेक कर मिश्री मिलाकर तथा शीशी में रखकर इसे भोजनोपरान्त लेते रहना फायदे मंद रहता है। यह भूख को बढ़ाती है तथा कालेस्ट्रोल में कमी लाती है।

हमारे विवाह संस्कार के गीतों के नायक विश्वरूप भगवान् श्री रामचंद्र जी से हमें माता–पिता को नित्य प्रणाम, आज्ञापालन, परिवार के संग भोजन, वेद–पुराण प्रसंगों को सुनना, लोगों को सुख पाने का अवसर प्रदान करना, लोगों से कोमल वचन बोलना, विद्वानों और ब्राह्मणों से आशीर्वाद पाना और हमारे प्रति अपराध करने वालों पर भी दया रखना आदि अनेक आदर्शों के पालन की शिक्षा मिलती है। अपने सचिव के प्रति सम्मान, कैकेयी के प्रति आदर भाव, पुत्र धर्म पालन, निश्छल शबरी के जूठे बेर

खाना, निषाद–कोल और भील जातियों से प्रेम और वैदिक विधि से विभीषण का अभिषेक करना आदि उनके महान् आदर्श हमें हृदयतल तक प्रभावित करते हैं।

जिला बिलासपुर के मार्कण्डेय तीर्थ में दर्शनीय तथा जन्मदिन में पूजनीय श्री मार्कडेय मुनि मृकंडु को शिव की तपस्या से वरदान स्वरूप प्राप्त हुए थे जिनको अल्पायु ही मिली थी। मार्कडेय ने स्वयं तपस्या करके भगवान् शिव को प्रसन्न करके मृत्युदेवता पर विजय प्राप्त की थी। भगवान् शिव ने इन्हें अमरता देकर हमें आठवां चिरजीवी दे दिया। हमारी नित्य उपास्या माँ गायत्री अमृत की बीज हैं। ब्रह्मा के मुख से पैदा होने वाली ये देवी हमें प्रसन्न होकर ब्रह्मशक्ति प्रदान करती हैं। ये पृथ्वी से स्वर्ग तक व्याप्त और प्रकाशित होकर सुंदर संसार की रचना करती हैं। हमारी बुद्धि को अच्छे कामों में लगाती हैं। गायत्रीमय यह संसार चार पैरों वाला है। एक पैर इनका धरती पर तथा शेष तीन चरण स्वर्ग में हैं। स्वयंप्रकाश गायत्री माँ के भजनीय तेज को स्वर्ग कहा गया है। सविता के ध्यान से आत्मस्वरूप के प्रकाशित होने पर समस्त विश्वप्रपंच हमारे लिए बाधित (मिथ्या) साबित हो जाते हैं। शक्तिरूपा ब्रह्मविद्या संपूर्ण वेदविद्या की सार शक्ति है।

सिरमौर जिले के पौंटा में बहने वाली नदी यमुना सूर्य की पुत्री और यमराज की बहन हैं। इनका वाहन

कछुआ है। यमुनोत्री से संगम तक इनकी दूरी 1385 कि.मी. है। ये वृंदावन की अधिष्ठात्री देवी हैं।

हमारी परंपराएं प्राकृतिक नियमों में बंधी हैं। इनका शाश्वत स्रोत हमारे माता–पिता, अभिभावक, गुरू और पिछली अनंत पीढ़ियां हैं। प्रातः अपने हाथों का दर्शन हमारे श्रम का प्रतीक है। माँ मदालसा द्वारा अपने पुत्रों को दी गई सत्यं वद और धर्म चर की शिक्षा को हम आसानी से अपना सकते हैं। महान् युधिष्ठिर, अर्जुन, सुभाष और विवेकान्द आदि इसी परंपरा के वाहक रहे हैं। गर्भिणियों के द्वारा भगवान् राम और कृष्ण के स्तोत्रपाठ से उनके शिशु अभिमन्यु जैसे वीर बनते हैं। गीता का पाठ हमारे जीवन को सार्थक बनाता है।
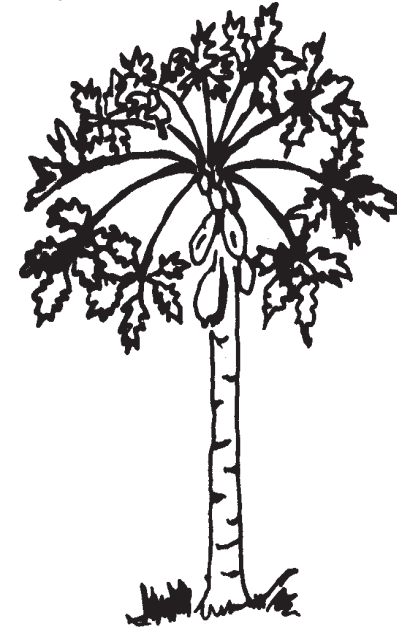
दुर्गाशक्ति विज्ञान (शक्ति की महिमा)

तमोगुण या अज्ञान के प्रतीक कलियुग में धर्म की हानि होना बताया गया है। इस युग में माँ दुर्गा की उपासना को सभी इच्छाओं का पूरक भी बताया गया है। सप्तश्लोकी दुर्गा और विश्वसार तंत्र मैं दुर्गा के एक सौ आठ नाम उपयोगी कहे गए हैं। दुर्गासप्तशती पाठ के छः अंगों कवच, अर्गला, कीलक और तीन रहस्यों में से कवच शती का बीज और अर्गला या आगल उसका ताला माना जाता है।

राजा हिमाचल की तपस्या से प्रसन्न होकर माता सती ने पार्वती के रूप में उनके घर जन्म लिया। ब्रह्म या परमेश्वर की प्राप्ति में संलग्न रहने के कारण इनका एक नाम ब्रह्मचारिणी पड़ा। देवताओं का कार्य सिद्ध करने हेतु ही इन्होंने जन्म लिया। इनका एक नाम कालरात्रि हुआ क्योंकि ये सबको मारने वाले काल (मृत्यु) की भी रात्रि या मृत्यु हैं। ये सिद्धिदात्री या मोक्ष देने वाली हैं। दुर्गा के तीन रूपों में से माहेश्वरी का वाहन वृष या बैल, लक्ष्मी का कमल और ब्राह्मी का हंस है। हमारी पूर्व, पश्चिम, उत्तर, ईशान, दक्षिण और समस्त दिशाओं की क्रमशः ऐन्द्री, वारूणी,

कौमारी, शूलधारिणी, वाराही और चामुंडा शक्तियां रक्षा करती हैं। हमारे घुटनों, रक्तादि सप्त धातु, आंत, पित्त, कफ और समस्त संधियों की क्रमशः विंध्यवासिनी, पार्वती, कालरात्रि, मुकुटेश्वरी, चूड़ामणि और अभेद्या नामक शक्तियां रक्षा करती हैं।

हमारे अंतः करण, त्रिगुण, आयु, धर्म, गोत्र, पशु, पुत्र, पत्नी और समस्त भयों से क्रमशः धर्मधारिणी, नारायणी, वाराही, वैष्णवी, इंद्राणी, चंडिका, महालक्ष्मी, भैरवी और विजया नामक शक्तियां रक्षा करती हैं। देवीकवच (शक्तिबीज) हमारी समस्त समस्याओं और संकटों का निवारण करता है।

क्योंकि मां काली प्रलयकाल में सब कुछ कलयति (भक्षयति) अर्थात् खा जाती हैं, इसलिए काली कहलाती हैं। अपने भक्तों का भद्र या कल्याण करने से यही भद्रकाली कहलाती हैं। उपासनारूप दुःख या क्लेश से पाने योग्य होने से दुर्गा कहलाती हैं। शरणागत के अपराधों को क्षमा करने से क्षमारूपा हैं। कल्याणकारिणी होने से शिवा हैं। धात्री रूप से समस्त संसार प्रपंच को धारण करती हैं। स्वाहा रूप से देवताओं का पोषण करती हैं। स्वधारूप से पितरों को प्रसन्न करती हैं। माँ दुर्गा का शरीर विशुद्ध ज्ञानरूप है। ये भगवान् शिव के मस्तक पर अर्ध चंद्राकार या अष्टमी तिथि रूपा हैं।

मंत्र की सिद्धि में कील रूप विघ्न उपस्थित करने वाले शाप के निवारक को कीलक कहते हैं। यह इसलिए देवताओं या ऋषियों ने बनाया है कि मंत्र का कोई दुरूपयोग न कर पाए। बिल्कुल वैसे ही जैसे आणविक शक्ति का सदुपयोग और दुरूपयोग दोनों संभव है। शक्ति कुपात्र के हाथों में नहीं पड़नी चाहिए। उस कील या विघ्न को दूर करने के लिए शास्त्रों ने विधि पूर्वक शापोद्धार या शापविमोचन की व्यवस्था की है।

दुष्ट या नीच प्रकृति के लोग ईर्ष्यावश दूसरों के प्रति उच्चाटन और अभिचार आदि हानिकारक कर्म या ओपरा कर बैठते हैं, जिसका निवारण दुर्गासप्तशती के विधिपूर्वक पाठ से संभव होता है। यह विधान हमारे ईमानदारी से प्राप्त भगवान के प्रसाद रूप धन से होना चाहिए। केवल इसी प्रकार का धन ईश्वर नैवेद्य रूप में ग्रहण करते हैं। पाठ में स्पष्ट और मधुर स्वर अधिक फलदायक बताया गया है।

वैदिक रात्रिसूक्त ऋग्वेद की आठ ऋृचाएं हैं। तांत्रिकसूक्त सप्तशती का पहला अध्याय है। प्रलयकालीन ईश्वररात्रि की अधिष्ठात्री देवी भुवनेश्वरी माँ है। जीवों द्वारा शुभकर्मानुसार प्राप्त जन्म को मोहरूप जीवरात्रि कहा गया है। पापकर्म और वासना को पशुवृत्ति बताया गया है। काम और क्रोधादि विकार तस्कर या लुटेरे होते हैं। देव्यथर्वशीर्ष अथर्ववेद का अंश है। देवी वेद और अवेद दोनों हैं। आत्मस्वरूप

को धारण करने वाली बुद्धि की वृत्ति में ही देवी का निवास है। वही चेतनावृत्ति जीव मात्र को अपने अपने कर्म में प्रवृत्त करवाती हैं। समस्त देवताओं की माता दक्ष की कन्या या महर्षि कश्यप की पत्नी अदिति हैं।

महात्रिपुर सुंदरी श्री महाविद्या सर्वतत्त्वमयी, विश्वविमोहिनी और परमशक्ति हैं। पाश, अंकुश और धनुष आदि महाशक्ति के शस्त्र हैं। ह्रीं देवी का बीज या प्रणव अक्षर है। ह+ई आकाश या इच्छा का प्रतीक है। ऐं वाणी या चित् स्वरूपा महासरस्वती हैं। ह्रीं माया या सत् स्वरूपा महालक्ष्मी हैं। क्लीं काम या आनंद स्वरूपा महाकाली हैं। ब्रह्मविद्या या आत्मज्ञान को पाने के लिए हम तीनों का ध्यान और प्रार्थना करते हैं — अविद्यारूपी रस्सी की मजबूत गांठ को खोलकर हमें बंधन से मुक्त कर दो।

अथर्ववेद में कुल पांच अथर्वशीर्ष हैं। मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा के समय अथर्वशीर्ष के पाठ से उसमें प्राणों का संचार होना माना जाता है। ब्रह्मविद्या या अध्यात्मविज्ञान अविद्या (अहंकार) की नाशक है। अंगन्यास से हमारे अंगों में मंत्रों की स्थापना होती है। मंत्र चेतन और मूर्तिमय होते हैं। व्यापक सिर से पैर तक किया जाता है। माला का मंत्र ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः है।

मंत्र का जप अर्थज्ञान पूर्वक फलदायक होता है। पुस्तक काष्ठासन पर रहे। पाठान्त में इति की जगह

ओम् तत् सत्........बोला जाए। देवी सूक्त की ऋषिका महर्षि अंभृण की कन्या ब्रह्मज्ञानिनी वागांभृणी हैं।

देवी सर्वविध सामर्थ्यरूपा हैं। ये रूद्रधनुष तानकर ब्रह्म या सज्जनों के द्वेषी हिंसकों और असुरों के वध के लिए सदा तैयार रहती हैं। ये शरणागत की रक्षा के लिए उसके शत्रु से युद्ध करती हैं। पृथ्वी और आकाश में भ्रमण करती रहती हैं। समुद्र व्यापक परमात्मा का रूप है। सर्वादिकारण शक्ति महालक्ष्मी हैं। मां का प्रिय फल मातुलिंग (कर्मराशि) अथवा बिजौरा नामक फल है।

तमोगुण रूपा महाकाली भयानक दाढ़ों वाली, पतली कमर और काजलवाली अपनी चार भुजाओं में ढाल, तलवार, प्याले और कटे सिर धारण किए रहती हैं। उनकी छाती पर धड़ों की माला और मस्तक पर मुंडमाला है। ये संसार की अवश्यंभावी तीसरी गति अर्थात् नाश या मृत्यु की प्रतीक हैं। महासरस्वती को भारती, वाक्, आर्या, ब्रह्माणी, कामधेनु, वेदगर्भा और धीश्वरी भी कहते हैं।

मां महालक्ष्मी ने अपने निर्मल ज्ञान से पुरूष–स्त्री का युगल पैदा किया। पुरूष को ब्रह्मा विधि और धाता कहते हैं। स्त्री को श्री, पद्मा, लक्ष्मी या कमला कहा गया। यह पहला युगल हुआ।

महालक्ष्मी की सलाह पर महाकाली ने दूसरा युगल पैदा किया। पुरूष रूद्र, शंकर, स्थाणु, कपर्दी और

त्रिलोचन कहलाया। स्त्री त्रयी, विद्या, अक्षरा कामधेनु कहलायी। महालक्ष्मी की सलाह पर महासरस्वती ने तीसरा युगल पैदा किया। युगल का पुरूष श्याम, विष्णु, कृष्ण, हृषीकेश, वासुदेव और जनार्दन कहलाया और स्त्री गौरी, उमा, सती, चंडी, सुंदरी और सुभगा कहलायी।

महालक्ष्मी ने सरस्वती को ब्रह्मा से ब्याहकर उन्हें ब्रह्मांड रचना के काम में लगाया। गौरीरूद्र का ब्याह कर उन्हें ब्रह्मांड के भेदन या विशरण के कार्य में लगाया। लक्ष्मी–विष्णु युगल को ब्रह्मांड के पोषणकार्य में नियुक्त कर दिया।

महालक्ष्मी स्वयं सर्वतत्त्वमयी हैं। सप्तशती के प्रथम प्राधानिक रहस्य में काली रूप में इनका वर्णन है। गदा इनकी क्रिया शक्ति, खेट ज्ञान शक्ति, पानपात्र त्रिगुणेतर तुरीय वृत्ति और नाग काल है। प्रकृति को योनि या गर्भधारिणी और पुरूष को लिंग अथवा बीजकारण बताया गया है। शिवलिंग का यही रहस्य है।

महाकाली भगवान् विष्णु की योगनिद्रा हैं। ब्रह्मा जी ने मधु–कैटभ नामक असुरों के वधार्थ इनकी स्तुति की थी। भगवान् विष्णु की दुस्तर माया स्वरूपा त्रिगुणमयी महिषासुरमर्दिनी महालक्ष्मी विशेष पूज्या हैं। सरस्वती शुंभनिशुंभमर्दिनी कहलाती हैं। नवधा शक्ति क्रमशः ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारायणी, ऐंद्री,

शिवदूती और चामुंडा कहलाती हैं।

बलिदान और मांसादि से पूजा करना विप्रों या तीन वर्णों के लिए वर्जित है। महालक्ष्मी के दक्षिण भाग में स्थित उनका वाहन सिंह भी पूज्य है। मध्यम चरित्र सप्तशती का सार माना जाता है। पुस्तक का हर श्लोक मंत्रस्वरूप है। दुर्गा मां हेतु नैवेद्य तिल और घी मिली खीर होती है। प्रथम चरित्र की देवी महाकाली हैं तथा मध्यम और उत्तम की क्रमशः महालक्ष्मी और सरस्वती।

महालक्ष्मी अपने दायीं ओर के नीचे से ऊपर तक नौ हाथों में क्रमशः अक्षमाला, कमल, बाण, खड्ग, वज्र, गदा, चक्र, त्रिशूल और परशु या कुल्हाड़ा धारण करती हैं। बाएं भाग में ऊपर से नीचे तक नौ हाथों में क्रमशः शंख, घंटा, पाश, शक्ति, दंड, ढाल, धनुष, पानपात्र और कमंडलु धारण किए हैं। महालक्ष्मी के दाएं भाग में महाकाली और बाएं भाग में महासरस्वती का आसन होता है।

नंद की पुत्री नंदा तथा अनेक वर्णों वाली भ्रामरी कहलाती हैं। भगवती सप्तशती के श्रद्धा एवं विधि पूर्वक पाठ से सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। यह सारा संसार देवीमय है। देवी का प्रिय फल आंवला समस्त सुगंधियों का सार है।

देवताओं या स्वर्ग के वाद्ययंत्र क्रमशः वेणु (बंसी), मृदंग, शंख और भेरी (नगाड़ा) आदि हैं। महिषासुर या

एकांगी भौतिकवादी दृष्टि (यह शरीर ही सब कुछ है) को तीनों लोकों (ब्रह्मांड) का शत्रु बताया गया है। दुर्गा माता के एकमात्र सिद्धकुंजिका स्तोत्र पाठ को सर्वविघ्न नाशक तथा सर्वसिद्धिदायक बताया गया है। यहां तक कि उसके पाठ के बिना सप्तशती के पाठ को भी निष्फल माना गया है।

दुर्गापाठ से काम–क्रोधादि शत्रुओं का मारण या नाश किया जाता है। मोहन का वास्तविक अभिप्राय अपने इष्टदेवता का आकर्षण है। वशीकरण अपने चंचल मन का होता है। स्तंभन का अर्थ है विषयरूपी अपने शत्रुओं के प्रति आसक्ति का अभाव। उच्चाटन का तात्पर्य मोक्ष से है। इस प्रकार दुर्गा मां के प्रति हमारी भक्ति हमें अखंड आत्मशक्ति प्रदान करती हैं। इसके विपरीत तमोगुणी वाममार्ग है।

आठवीं महाविद्या मां बगला या वल्गामुखी परमात्मा की भयानक संहारशक्ति का नाम है। ये शत्रु भय से हमारी रक्षा करती हैं। एक बार भगवान् विष्णु की तपस्या से भयानक तूफान पैदा हुआ जिसको रोकने के लिए उनका प्राकट्य हुआ था। धन्य हैं हम सब लोग जो मां शूलिनी दुर्गा की शरण में रहकर अपने जीवन को सर्वजनकल्याणकारी रूप देकर सफल बना रहे हैं।

महादेवत्व विज्ञान (शिव महिमा)

शब्दार्थ रूप वेदों की रचना द्वारा संसार में शब्दार्थरूप व्यवहार चलाने वाले भगवान् महादेव ही तो हैं। संसार रूप कार्य के कर्ता महादेव ही सिद्ध होते हैं। ये अपनी इच्छा से शरीर धारण करते हैं और अपनी इच्छा से शरीररहित हो जाते हैं। ये अपने बनाए संसार से ऐसे खेलते हैं जैसे बालक अपने खिलौनों से। अनंत शक्तियों वाली अपनी माया का सहयोग लेकर संकल्प (इच्छा) मात्र से सब कुछ करने में समर्थ हैं। ये अपनी माया (इच्छा) के अधीन न होकर उसे हमेशा अपने वश में रखते हैं। काश कि हम मनुष्य भी ऐसा कर सकें। माया के पति होकर भी वे उसमें आसक्ति नहीं रखते। ये परमयोगी हैं। भगवान् ब्रह्मा और विष्णु ने इनकी सेवा (लिंग या जगत्कारण की पूजा) करके ही उनका साक्षात्कार किया है। भगवान् महादेव का साक्षात्कार उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा से ही संभव है।

अपने इष्टदेव भगवान् महादेव की वरदान रूप कृपा से प्राप्त बलवाले रावण के प्रति उसके शत्रुओं ने शत्रु भाव त्याग दिया था। फिर भी उसकी युद्ध की लालसा न चुकी। उसकी उस खुजली को भगवान् राम ने सदा के लिए

मिटा दिया। सच ही कहा है कि मूर्ख का भला करने से उसकी बुद्धि ही नष्ट हो जाती है। इतना ही नहीं भगवान् शिव के निवासस्थान कैलाश पर्वत को ही उखाड़ने लगा था। उन्होंने अपने अंगूठे के सिरे (अल्पशक्ति) से पर्वत को हल्का सा दबाया तो रावण को पाताल में भी ठिकाना मिलना कठिन हो गया था। आशुतोष इतने कि तामसी जीवन जीने वाले अपराधियों के भी शरण में आ जाने पर उन्हें अपनी कृपा से निहाल कर देते हैं। भगवान् अपने प्रेमियों की अधीनता भी स्वीकार कर लेते हैं। प्रह्लाद के पोते अथवा राजा बलि के बेटे बाणासुर ने महादेव को अपनी भक्ति से प्रसन्न करके उनसे अपने नगर की रक्षा करवाई। राजा बलि ने भी तो अपनी भक्ति से विष्णु को प्रसन्न करके अपने अतल लोक स्थित दरबार में पहरेदारी का काम करवाया। उधर गुरू बृहस्पति का अपमान करने से श्रीहीन हुए इंद्र की जगह स्वर्ग पर बलि का राज हो गया। देवराज विष्णु जी की शरण में गए तो उन्होंने उसकी शक्ति की वृद्धि के लिए समुद्रमंथन करके प्राप्त अमृत का पान करने की सलाह दी। देवासुरों द्वारा वासुकि नाग को रस्सी बनाकर भगवान् कूर्म (कछुए) की पीठ पर मंथन आरंभ किया गया। पीठ पर जलीय अग्नि और विषदाह वश उनको मंथन त्यागना पड़ा। दशों दिशाएं जलने लगी। नारद जी की सलाह से देवता समाधानार्थ शिवजी की शरण में पहुंचे।

वे संसार के हितार्थ सहर्ष प्रसन्न मुद्रा में सागरतटीय विष का अपनी अंजलि से पान कर गए। नुकसान तो क्या, उनके तो कंठ की शोभा ही बढ़ गयी और नीलकंठ कहलाने लगे। अहोभाग्य हमारा कि नीलकंठ के भक्त भी उन्हीं की तरह दुनिया के हितों को मारने वाली जहरीली कड़वाहटों को अपने कंठ में धारण (सहन) किया करते हैं। विष को न तो अपने पेट (अंतःकरण) तक जाने देते न ही होंठों (वाणी) पर आने देते। नीलकंठ जी का आदर्श अपना कर संसार का उपकार करते हुए ही तीन गुणों से परे शिवमय या कल्याणकारी बना जा सकता है।

तारकासुर ने ब्रह्माजी की घोर तपस्या करके बड़ी चालाकी से उनसे वरदान पाया कि केवल शिवपुत्र के सिवा कोई उसे मार न सके, संन्यासी के पुत्र होगा नहीं और तारकासुर मरेगा नहीं। दुनिया दारी में निपुण तामसी लोग (असुर) ऐसा ही वरदान पाने की कोशिश किया करते हैं। जिससे वे भगवान् पर भी भारी पड़ जाएं। बुद्धि की सीमाओं को वे बेचारे लांघ नहीं सकते और बुद्धि से भी परे रहने वाले परमात्मा को वे अपने जीवन में दखल देने से रोक नहीं सकते। सोचा अब मैं अमर हो गया हूं। अपनी उपलब्धियों पर भला किसे अभिमान नहीं हो जाता। अति दर्पे हता लंका। अभिमान हो गया और विनाश की भूमिका तैयार हो गई।

उधर राजा हिमालय चाहते थे कि मां सती का अवतार उनके घर में हो। उनकी तपस्या के फलस्वरूप मां सती ने उनके घर पार्वती के रूप में जन्म लिया। पर्वतराजकन्या पार्वती ने अपने पिता से महादेव की शास्त्र सम्मत सेवा–पूजा की आज्ञा मांगी। असुर चाहते थे कि शिव विवाह न हो और देवता चाहते थे कि शिवविवाह हो, जिससे तारकासुर वध की भूमिका बांधी जा सके। पार्वती पिता की स्वीकृतिपूर्वक शिव आराधना हेतु जाने लगी। देवता संसार के हितार्थ शिव को पार्वती के सौन्दर्य पर मुग्ध करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने यह कार्य कामदेव को सौंपा, जो काम या विश्वसौन्दर्य के सार रूप हैं। ऋतुराज बसंत सदल–बल पधार गए। अप्सराओं और देवांगनाओं के मधुर नृत्य से सृष्टि में आनंद छा गया। देवदार वृक्ष के पीछे से काम (सौन्दर्य) देवता ने समाधिरत शिव पर अपना पहला कामबाण (प्रभाव) छोड़ा। पार्वती धतूरे और पुष्पहारादि सहित शिवपूजा कर रही थी। अचानक सामने पार्वती के सौंदर्य को देखकर सोचने लगे–मैं विरक्त शिव मोहित क्यों?

काम देव को दूसरा बाण छोड़ने हेतु तत्पर देख उस पर सर्वोपकारी शिव (परमात्मा) की क्रोधाग्निमय दृष्टि पड़ी तो वह तत्काल भस्म हो गया। विश्वकल्याण में लगे देवताओं में इससे हाहाकार मच गया। कामदेव का कसूर यह था कि उसे अपने काम या सौंदर्य की शक्ति पर

अभिमान हो गया था और वह भगवान् शिव (आत्मा) को अन्य देवताओं (इंद्रियों) के समान समझ बैठा था। इसी भूल ने उसे सदा के लिए अनंग (अंगहीन) या भावरूप बना दिया, अभिव्यक्त होने की शक्ति से वंचित कर दिया। गूंगे का गुड़ बन गया।

मां गंगा के अति तेज प्रवाह को भगीरथ की प्रार्थना पर भगवान् शिव ने अपनी जटाओं में एक बूंद की तरह धारण किया। आकाश में उतरकर वे मंदाकिनी कहलाईं, पृथ्वी पर भागीरथी और पाताल में भोगवती। जब राजा सगर का सौवां अश्वमेध यज्ञ चल रहा था तो इंद्र ने यज्ञ के घोड़े को पकड़कर चालाकी से कपिल मुनि के आश्रम में बांध दिया। अश्व की खोज में निकले राजा के छः हजार पुत्रों पर जब कपिल मुनि की कोप भरी दृष्टि पड़ी तो वे भस्म हो गए। सगरपुत्र असमंजस के पुत्र अंशुमान् ने अपने मृत पूर्वजों का बड़े प्रयत्नों से पता लगाया। उनके उद्धार के लिए गंगा मां को कपिलाश्रम में लाने के लिए राजा दिलीप ने आजीवन कठोर तपस्या (श्रम) की परन्तु वे असफल रहे। दिलीप के पुत्र भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न हो कर उन्होंने आना स्वीकार किया परन्तु उनके अतितीव्र वेग को धारण करने के लिए उन्हें भगवान् शिव की आराधना करनी पड़ी। शिव कृपा से मां गंगा के बीच उस समय संसार एक द्वीप की तरह लग रहा था।

शिव पुत्र कार्तिकेय के द्वारा तारकासुर का वध किए जाने के बाद उसके तीन पुत्रों ने तपस्या करके क्रमशः सोना, चांदी और लोहे के तीन नगर बसाए। स्वर्ग पर उनका अधिकार हो गया। असुरों से त्रस्त समस्त देवता भगवान् शिव की शरण में जा पहुंचे। भगवान् शिव ने समाधान स्वरूप उनको बताया कि अभिजित् नक्षत्र में जब तीनों नगरों पर एक साथ एक सीध में एक बाण से निशाना साधा जाएगा तब उनका नाश होगा। इस प्रकार विश्वरूप रथ के सारथी बने ब्रह्मा और भगवान् शिव ने सुमेरू को धनुष बनाकर विष्णु बाण से कार्तिक पूर्णिमा के दिन त्रिपुरासुर का वध कर दिया।

विष्णु जी सहस्र कमल पुष्पों को भेंट करते हुए शिव सहस्रनाम से महादेव की पूजा कर रहे थे। भगवान् शिव ने उनकी भक्ति की परीक्षार्थ आंख चुरा कर एक पुष्प छिपा दिया। पूजार्थ अंतिम पुष्प न मिलने पर उसकी पूर्ति के लिए विष्णु जी ने अपनी एक आंख उखाड़ी और भेंट कर दी। महादेव ने उनकी परमभक्ति से प्रसन्न होकर उनका फूल वापिस करते हुए उनका नेत्र भी यथावत् स्थापित कर दिया। साथ में उनको अमोघ सुदर्शन चक्र भी भेंट किया।

परमात्मा की आराधना के विना कर्म फलित नहीं होते। वे ही कर्मफल के दाता हैं। शिव हमारे कर्मों के साक्षी होते हैं। वे ही हमें शुभ कर्मों का फल देकर कर्मकांड

के प्रति भक्तों की आस्था जगाए रखते हैं। श्रद्धारहित यज्ञकर्म का नाश हो जाता है। यज्ञ का मूल परमात्मा पर विश्वास है। भगवान् के स्वरूप को जाने विना भगवान् में विश्वास पैदा नहीं होता।

एक बार ध्यानावस्था में शिव जी अन्य लोगों की तरह दक्ष के स्वागत में खड़े नहीं हुए। दक्ष ने इसे अपना अपमान समझकर उनके प्रति कटुवचन कहे। अपमान का बदला लेने के लिए दक्ष ने कनखल में महायज्ञ का आयोजन किया। श्रद्धा और विश्वास के रूप सती और शिव को यज्ञ में निमंत्रित नहीं किया, फिर भी सती वहां जाना चाहती थी। भगवान् शिव के बार–बार समझाने पर भी सती अपने पिता के यज्ञ में उपस्थित हुए विना न रह सकी। वहां अपने पिता द्वारा शिव के घोर अपमान को देख कर शिवतत्त्व का वर्णन करते हुए सती ने प्राण त्याग दिए। यह देखकर शिवाज्ञा से शिव के सेवक वीरभद्र ने यज्ञ का विध्वंस कर दिया।

ब्रह्मा जी जब अपनी पुत्री के ही प्रति आसक्त हो गए तो पुत्री मृगीरूप धारण कर भागने लगी। ब्रह्मा ने फिर भी मृग रूप धारण कर उस आसक्ति भाव का पीछा करना जारी रखा। महादेव जी यह दृश्य देख कर तब से लेकर धनुष तानकर मृग (ब्रह्मा) या कामवासना का पीछा कर रहे हैं। पार्वती के तप से प्रसन्न महादेव जी ने अर्धनारीश्वर रूप में उन्हें शक्ति–अद्वैत (शक्तिरूप ही संसार है) का

उपदेश दिया। शिव सर्वरूप हैं। क्योंकि दुर्जनों को रूलाते हैं, अतः रूद्र कहलाते हैं। दुर्जन उनसे भय खाते हैं।

आपकी महिमा का वर्णन केवल आपसे प्राप्त शक्ति से ही किया जा सकता है। आप सबसे बड़े देवता हैं। भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी को आपके अघोर रूप की पूजा होती है। समस्त सिर आपके सिर हैं। सभी शरीरों में आप निवास करते हैं। आप सर्वत्र व्याप्त हैं। सबके अंदर आप ही निवास करते हैं। आप ही महाप्रलय करते हैं तथा पुनः सृष्टि को पैदा करके जीवों को अपने कल्याण का अवसर देते हैं। मैं ब्रह्म (परमात्मा) एक से बहुत हो जाऊं का संकल्प करते हैं। इस प्रकार से ब्रह्म माया से युक्त होकर एकांश से स्थित होते हैं। इनके अमृत रूप तीन अंश स्वर्ग में स्थित होते हैं। ब्रह्म (परमात्मा) के ज्ञान से माया (अनेकत्व) नष्ट होती है। दुःख का कारण अनेकत्व दृष्टि है।

सृष्टि की उत्पत्ति के समय तीन गुणों में जीवों के कर्मसमूह के कारण स्पंदन होता है। परिणामतः समष्टि रूप बुद्धि तत्त्व पैदा होता है। सत्त्वगुण से तीन प्रकार के अहंकारों से क्रमशः सात्विक अहंकार से मन और ज्ञानेन्द्रियां, रज से प्राण और कर्मेंद्रियां और तम से तन्मात्राएं और पंचभूत पैदा होते हैं। पंचमहाभूतों के पंचीकरण (मिश्रणों) से समस्त संसार का निर्माण होता है। वायु में वेग पैदा होकर जलीय परमाणुओं से महासागर बनते हैं।

पृथ्वी तत्त्व प्रधान विशाल अंड के ईश्वरेच्छा से दो भाग होकर ऊपर वाले भाग से पृथ्वी आदि सात लोक और निचले भाग से भूमि के अंदर के सात लोक पैदा होते हैं। जीवों के कर्मानुसार चौरासी लाख योनियां और उनके योग्य भोग्य पदार्थों का निर्माण होता है। वायु, महावायु के रूप में संसार के अंदर तथा प्राणादि के रूप में शरीरों के अंदर स्थित होती है। फिर शिव (परमात्मा) की इच्छा से अनेक ब्रह्मांडों की रचना होती है।

संसार की व्यवस्था (अनुशासन) के लिए शिव रूद्र (भयानक) रूप धारण करते हैं। विष्णुरूप में वे संसार की रक्षा करते हैं। तमोगुण से संहार करने वाले देवता होने से उन्हें अमंगल रूप में दर्शाया गया है। वास्तव में इस रूप के द्वारा वे आवागमन के चक्र में थके प्राणियों को विश्राम देकर उनका सर्वथा मंगल ही करते हैं, अमंगल नहीं। वे अनंत पाप–संतापों से दुःखी जीवों का शयन स्थल हैं। प्रलयकाल में इनमें प्राणी सोते हैं। शांत, शिव और अद्वैत रूप शिव तीन मूर्तियों से परे चौथे (परमात्मा) रूप हैं। वे काल या मृत्यु के नियंता महाकाल हैं।

प्रलयरूप शिव से संसारोत्पत्ति होती है। हमारी नींद (लघु विश्राम) की तरह महानिद्रा रूप प्रलय एक लंबी नींद होती है। जिस तरह नींद से दिन भर की थकान दूर होती है वैसे ही प्रलय से संसार चक्र में घूमते रहने की

थकान दूर होती है। भगवान् शिव के श्वास बाहर छोड़ने से वेद पैदा होते हैं। इनके दृष्टि डालने से पंचभूत पैदा होते हैं। सारा संसार इनका मुस्कान रूप है। विश्वरूप शिव की नींद महाप्रलय है। त्रिदेव और अनंत जीवसमूह इनसे ही पैदा होते हैं। प्रलयावस्था हम जीवों पर इनकी एक कड़वी औषधिरूप कृपा है।

भगवान् शिव के भय से ही सूर्य और चंद्रमा हमेशा क्रियाशील रहते हैं। इनका भय वज्र के समान है। अज्ञानियों को उनके कुकर्मों के फल का भय देते हैं तो ज्ञानियों के लिए ये परमानंदरूप हैं। संसार में भोगियों को अपने भोगों के छिन जाने का भय सदा सताता रहता है। शिवनाम के श्रवण और मननादि से ब्रह्माकार वृत्ति (सोच) पैदा होती है। शिव ही त्रिमूर्तिरूप हैं। ये एक होकर भी उत्पादक और उत्पादन सामग्री दोनों हैं। ये चेतन होकर नियामक के रूप में सबके शरीरों में रहते हैं।

श्रावण का महीना भगवान् शिव को अति प्रिय है। सनातन संस्कृति के मूलतत्त्व भगवान् शिव सत्य, शिव और सुन्दर रूप हैं। ये सृष्टि के बीज और लयावस्था दोनों हैं। सृष्टि की रक्षा और पालन करने के लिए गंगा को धारण करने वाले शिव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन शिवलिंग का गंगाजल से अभिषेक करके किया जाता है। इससे हमारे जन्मान्तरों के पाप नष्ट होते जाते हैं। श्रद्धालु शिव भक्त

कांवड़े हर की पौड़ी से नंगे पैर गंगाजल लाकर अपने शिवालयों में पूजार्थ रखते हैं। ये गरीब अमीर सबके प्रियतम महादेव हैं। शिव की पूजा से शिव के महान् गुणों की पूजा होती है। संयम, परोपकार और अपरिग्रह आदि से ही शिव में शिवत्व है। श्रावण मास में पृथ्वी और जीवात्माएं जलमय या शिवमय रहती हैं। इस मास में स्वयं शिवाभिषेकमय रिमझिम भी होती ही रहती है।

सोमवार की पूजा अति शुभ मानी जाती है। श्रावणमास के व्रतों से ही पार्वती माता को मनोऽनुकूल पति परमात्मा की प्राप्ति हुई थी। मन के अनुकूल पति की प्राप्ति हेतु इस मास के व्रत सफलता देते हैं। इससे वैधव्य योग की भी शांति होती है। पंचामृत, दूध, दही, घी, शहद और शक्कर का स्नान शिव को अति प्रिय है। भांग, धतूरा, मंदारपुष्प, गंगाजल और बिल्वपत्र चढ़ाने से ये बहुत प्रसन्न होते हैं। इनको भांग चढ़ाने से चिंता और प्रेतबाधाएं नष्ट होती हैं। धतूरा चढ़ाने से विषैले जीव हमारा नुकसान नहीं करते। ये हमारी प्रतिकूलताओं के नाशक हैं।

भगवान् शिव को शमी पत्र चढ़ाने से ग्रहबाधाएं भी नष्ट होती हैं। त्रिशूल शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तीन प्रकार के दुःखों के निवारण का प्रतीक है। पौराणिक समुद्रमंथन की घटना भी श्रावण में ही घटी मानी जाती है। लुटरू महादेव में प्राकृतिक लिंगाभिषेक दर्शनीय है। सनौरा

में चांदी, पारा, पीतल, स्फटिकमणि और नादेश्वर मणि से बने पंचविध शिवलिंगों की पूजा होती है। इनकी अन्य पूजा सामग्रियों में मौली, वस्त्र, जनेऊ, चंदन, रौली, चावल, फूल, आंवला और कमल गट्टा हैं। पान, सुपारी, लौंग, इलायची और मेवा इनके नैवेद्य हैं। कालसर्पयोगनिवारण हेतु शिवलिंग पर रखे नाग–नागिन के जोड़े का पूजन किया जाता है। भगवान् शिव सदा अपने डमरू के नाद से ज्ञान–विज्ञान का प्रसार करते रहते हैं।

अनुसंधाताओं के अनुसार कैलाश पर्वतमाला में मध्यंकरी नामक स्थान पर भस्मासुर को भस्म किया गया था। मान्धाता और रावण ने मानसरोवर में तपस्या की थी। कैलाश पर्वतमाला ही समूची पृथ्वी की धुरी मानी जाती है। मेरूपर्वत ब्रह्मकेन्द्र है। यहां भी पर्वत की दो चोटियां गणेशध ाम और पार्वती धाम के नाम से प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में संभवतः केवल एक ही रास्ता उत्तराखंड होकर कैलाश तक जाता है।

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि की बजाए महादेव भूमि कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। मंडी जिला के बल्ह में आज भी भगवान् शंकर की स्मृति में बुड्ढा लोकनृत्य किया जाता है। शंकर की बारात का दृश्य निकाला जाता है। ससुराल में बारात पहुंचने का दृश्य अद्भुत होता है। शंकर बूढ़े दूल्हा का रूप लेते हैं। बारातियों को देखकर या

तो हंसी आती है। राजाओं के समय में यह नृत्य राजा और प्रजा के बीच मनोरंजन का साधन होता था। राजा लोग अपने प्रवास में इस नृत्य मंडली को साथ ले जाते थे। सबसे पहले बूढ़ा दूल्हा शंकर मंच का चक्कर लगाता था फिर तरह तरह के मुखौटों के साथ शिव गण या सेवक उसका चक्कर लगाते थे।

कुल्लु में अनेक महादेवों में बिजली महादेव काफी प्रसिद्ध हैं। भगवान् महादेव जड़–चेतन और देवों–असुरों सभी को प्रिय हैं। थोड़ी सी भक्ति से तथास्तु वरदान दे डालते हैं। विश्वकल्याण में बाधा पहुंचाने वाले पर तीसरा नेत्र खोलकर प्रलय मचा देते हैं। प्राचीनकाल में सागर के पुत्र जालंधर दैत्य ने तपस्या करके ब्रह्मा जी को भी पराजित कर दिया। अपने बल से उसने विष्णु को भी बंदी बना डाला। देवताओं को अधीन करके त्रिलोकी में उत्पात मचाने लगा। स्वयं त्रिलोकीनाथ बनने के लिए भगवान् शिव से ही युद्ध करने लगा। शिव ने उसका वध करके देवताओं को बंधन से मुक्त किया। उनकी मूर्ति सहित वध करने की गदा आज भी वहां मौजूद है। इंद्रदेव ने आकाशी बिजली गिराकर इसे छिन्न–भिन्न कर दिया था। भक्तों ने अपने घरों से मक्खन लाकर इसे जोड़ा। भादों के महीने में यह घटना प्रायः हर वर्ष घटती ही रहती है। आजकल भगवत् कीर्तनों में शिव बारात का रोचक प्रसंग दिखाया जाना काफी लोक

प्रिय हुआ है।

शिव ने अर्धनारीश्वर के रूप में सृष्टि की रचना की थी। पार्वती माता के प्रति उनका निःस्वार्थ प्रेम विश्व के लिए आज भी एक आदर्श है। ये गृहस्थों और नव निवाहितों के भी उपास्य हैं। अखंड सौभाग्य के लिए शिव–पार्वती की प्रसन्नता हेतु किया जाने वाला हरितालिका व्रत प्रसिद्ध है। इसमें निर्जल रहकर गणेश, शंकर और पार्वती का पूजन किया जाता है। अखंडदीप जलाया जाता है। पार्वती–परमेश्वर या श्रद्धा–विश्वास के विना हम अपने अंदर के परमात्मा का अनुभव नहीं कर सकते। उक्त व्रत से कुमारियों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

हमारे हिमप्रदेश में सागरमाथा, अन्नपूर्णा, गणेश, लांगतंग, गौरीशंकर और धौलगिरि आदि सैंकड़ों पर्वतचोटियां 6 पड़ोसी देशों को छूती हैं। यह 7200 मील तक फैला हुआ है। बारह हजार वर्ग कि.मी. दायरे में इसके ग्लेशियर फैले हैं। हमारे जंगल और महिलाएं पहाड़ों की रीढ़ हैं। विष्णुधाम बद्रीनाथ और शिवधाम केदारनाथ प्रसिद्ध धाम हैं। कैलाश में शिव का स्थायी वास माना जाता है।

हमारी सोलन और हिमाचल प्रदेश (सांझी संपदा)

नौणी (सोलन) के स्व. लोक गायक सुंकड़ियाराम का जन्म सन् 1928 के लगभग हुआ था। इस अनपढ़ लोकगायक ने पहाड़ी बोली में अनेक शिक्षाप्रद लोकगीत गाए। अपने शब्दों और आवाज से लोगों का मनोरंजन किया। अनेक सरकारी नसबंदी आदि योजनाओं का धाजा और करयाला के माध्यम से आम आदमी में प्रचार किया। इसे लोककला और हास्य कला के लिए सरकार द्वारा आजीवन प्रोत्साहित किया जाता रहा।

हमारा पहाड़ी प्रदेश जितना मनोहारी है उतना ही हमें प्राकृतिक आपदाओं से सावधान रहने के लिए जागरूक रहने को भी कहता है। वैज्ञानिकों के अनुसार मंडी–सुन्दरनगर में संभावित केन्द्र वाला भूकंप कभी भी आ सकता है। वैज्ञानिकों के अनुसार इसका संभावित रिक्टर 8 हो सकता है। इससे बचाव के लिए हमारे भवनों की ऊंचाई और भार कम होना चाहिए। साथ ही भवनों के बीच कुछ दूरी भी आपस में होनी चाहिए। किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा के आने पर बचाव के लिए सरकार की ओर से टॉलफ्री नं. 1077 का प्रबंध किया गया है।

बुराई या जुल्म के प्रति खीझ की सोच का हमारे पहाड़ों का अपना इतिहास रहा है। सन् 1857 में जतोग, डगशाई, कसौली और स्पाटु की अंग्रेजी सेना में अधिकतर सैनिक गोरखा और राजपूत थे। यहां बसे पहले जतोग के सूबेदार भीमसिंह की पलटन ने विदेशी शासकों के प्रति विद्रोह किया जिसे दबा दिया गया। 1938 में लुधियाना में हिमालयन रियासत प्रजामंडल की स्थापना हुई जिसके लिए बुशहर रियासत का नेतृत्व पं. पदमदेव ने किया था।

हमारे प्रदेश का परंपरागत प्राकृतिक उद्योग घराट आजकल लुप्त होने के कगार पर खड़ा है। इसका कारण है पानी की कमी, अनाज उत्पादन का कम होना और ग्राहकों के पास समय की कमी। आजकल केवल नकदी फसलों को उगाने पर जोर देना भी इसका एक कारण है। घराटों का आटा अनाज के छिलकों वाला होने के कारण पौष्टिक होता है।

कुल्लु, निर्मण्ड और गिरिपार के इलाकों में मार्गशीर्ष की अमावस को बूढ़ी दिवाली का त्योहार बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। इस मौके पर अग्निपूजा, रामचंद्र की याद, देवी–देवताओं की पूजा सहित सांझे आंगन में रासे, नाटक और बूढ़ा नृत्य किया जाता है। बूढ़ा नृत्य संभवतः वही है जो मंडी जिला के बल्ह में मनाया जाता है।

यह त्योहार सात दिनों तक चलता है।

हमारे पूर्वजों की खेती की परंपरा में कुल्थ की दाल के उत्पादन को विशेष महत्त्व दिया जाता रहा है। यह बरसात में उगाया जाता है। गुणों की दृष्टि से यह मधुर, भूखवर्धक, नेत्रशक्ति वर्धक, सुपाच्य, हल्का, पौष्टिक और पथ्य होता है। इसमें बिटामिन ए और बी, फास्फोरस और कार्बोहाइड्रेट शामिल होते हैं। स्त्रियों के प्रदर रोग में भी यह उपयोगी होता है। पुराने समय में शिरीष भोज का यह विशेष उत्पाद होता था।

संगड़ाह तहसील की स्व. दलित वीरांगना किंकरी का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। इन्हें भारत सरकार की ओर से महारानी लक्ष्मीबाई महिला शक्ति पुरस्कार से नवाजा गया था। इस महिला ने जिला सिरमौर में अवैज्ञानिक तरीके से पहाड़ों को छलनी करने वाले लोगों का सशक्त विरोध किया था। फलस्वरूप पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाली 107 खदानें बंद की गई। वीरांगना का सुपौत्र अशोक कुमार किंकरी देवी का स्मारक बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

हमारा प्रदेश न केवल मानवपर्यटकों के लिए अपितु पक्षी पर्यटकों के लिए भी आकर्षक है। दिसंबर मास में ठंडे देशों की झीलें जम जाने के कारण अनेक प्रकार के पक्षी रेणुका झील में आकर अपना डेरा डालते हैं। ये पक्षी

अधिकतर चीन, तिब्बत, अफगानिस्तान, कजाखिस्तान, दक्षिणी एशिया और यूरोप की ओर से आते हैं। मौसम बदलने पर ये वापिस लौट जाते हैं।

हमारे गांवों के आंगनबाड़ी केन्द्रों और प्राथमिक पाठाशालाओं की शिक्षा आम आदमी के लिए मजबूरी बनते जा रहे हैं। इनमें खाने–पीने की सुविधाएं तो बढ़ाई जा रही हैं परन्तु जिस उद्देश्य शिक्षा की पूर्ति के लिए यहां बच्चे आते हैं उसके लिए सुविधाएं कम होती जा रही हैं। अपने निजी भवनों के बिना पराए कमरों में चल रहे आंगनबाड़ी केन्द्र प्रायः रसोई, मैदान और टॉयलेट आदि की अनवार्य सुविधाओं से वंचित हैं। सरकारी संस्थाओं के अध्यापकों के द्वारा अपने बच्चे पब्लिक स्कूलों में पढ़ाए जाने से आम आदमी और उनके बच्चे शिक्षा के प्रति निरूत्साहित होते हैं। आम और खास सबके लिए प्रदेश या देश में शिक्षा का एक जैसा प्रबंध होना जरूरी है। इस प्रकार का भेद भाव सामाजिक अन्याय और सामाजिक असुरक्षा की भावना पैदा करता है। स्कूल प्रबंधन समितियां इसका समाधान कर सकती हैं।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे खेतों की मिट्टी में निरंतर अम्लता की वृद्धि तथा फास्फोरस और जिंक की कमी हो रही है। इससे फसलों के उत्पादन में भारी गिरावट आ रही है। कैल्शियम और मैग्नीशियम आदि

उपजाऊ तत्त्व मिट्टी में से बह गए हैं। इस अवस्था में फसलचक्र को देखते हुए तिलहन, दलहन, चना, अरहर, सोयाबीन, राजमाह, उड़द और मसर की बिजाई को बढ़ावा मिलना चाहिए। यूरिया खाद का अधिक प्रयोग फसल के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। वर्तमान में अच्छी फसल के लिए गोबर, बर्मीकंपोस्ट और ऑर्गेनिक खाद के प्रयोग को बढ़ावा देना जरूरी हो गया है। स्थानीय उत्पादों को अधिक महत्त्व मिलना चाहिए।

डा. यशवन्त सिंह परमार के निर्देशों पर बनी सोलन, सिरमौर और उत्ताराखंड को जोड़ने वाली सोलन–मीनस सड़क अभी तक कच्ची और मझधार में पड़ी है। तीन राज्यों को जोड़ने वाली इस सड़क पर 103 कि.मी. दूर हरिपुरधार तक ही बस द्वारा आठ घंटे लग जाते हैं। इस सड़क में मीनस से पूर्व चुनवी और रोनहाट आदि प्रमुख स्थान आते हैं। यह सड़क अपनी हालत पर आंसू बहाते हुए सरकार का ध्यान अपनी ओर खींचती रही है।

प्रदेश का प्रमुख लोकनाट्य करयाला संभवतः क्रीड़ा शब्द से निकलकर क्रेला या करयाला बना है। यह एक मनोरंजक पारंपरिक क्रीड़ा है। इसे पहाड़ी नाटक भी कह सकते हैं। इसके मुख्य स्वांगों या अभिनयों में चंद्रावली–नृत्य, साध, साहुकार, रांझा–फूल्मा, साहिब–मेम, साहब–नाई, रिड़कू और नंबरदार आदि मुख्य होते हैं।

चंद्रावली काली माता की प्रतिनिधि मानी जाती है। आजकल भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय की ओर से इसके प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

गिरि पार का इलाका जो कभी अधिकतर मांसाहारी होता था, निरन्तर बदलाव की ओर अग्रसर है। पहले यहां जो मांसाहारी परिवार नहीं होता था, उसे अपमानित किया जाता था। नौजवानों ने इस परंपरा को बदला है। शाकाहारी होना यहां अब प्रतिष्ठा का विषय बनता जा रहा है। इस तरह माघ के त्योहार पर अनेक जानवर बलि चढ़ने से बच जाते हैं। शाकाहार भारतीय परंपरा का एक विशेष गुण है।

चौपाल तहसील में त्यौहारों पर किए जाने वाले नृत्यों में पुरूषों और स्त्रियों के टोले अलग –अलग नाचते हैं। यहां किश्तीनुमा टोपी का रिवाज है। बिजट, शिरगुल और चूड़ेश्वर देवताओं की पूजा होती है। यहां की खश आदि सभी जातियां शाठी (कौरव) और पाशी (पांडव) की टोलियों में विभक्त हैं। अच्छाई और बुराई का भेद सभी वर्णों में समान रूप से पाया जाता है। कोई एक ही वर्ण बुरा या अच्छा नहीं होता। मनुष्य वर्ण की अपेक्षा गुण से श्रेष्ठ माना जाता है।

पद्म पुराण के अनुसार विष्णु ने जालंधर दैत्य का वध किया था। दैत्य के धड़ वाले भाग से जालंधर शहर

का और कान वाले भाग से कानगढ़ (कांगड़ा) का नाम पड़ा। त्रिगर्त या कांगड़ा का राजा सुशम चन्द्र कौरव पक्ष की ओर से लड़ा था। मंडी में पांगणा तथा कांगड़ा में भीमकोट नाम पांडवों के साथ संबन्ध होने से ही पड़े हैं। पांडवों द्वारा अश्वमेघ यज्ञ के लिए छोड़े गए घोड़े को ढूंढने के लिए अर्जुन इस समूचे प्रदेश में धूमा था। उस समय मंडी के राजा बिंदुसेन ने यहां अर्जुन का स्वागत किया था। ऋग्वेद के अनुसार यहां की प्राचीनतम जनजाति दस्यु, दास या कोल कहलाती है। ये व्यास और यमुना के बीच रहते थे।

हिमाचल प्रदेश का महान् योद्धा रत्न नामक यक्ष कौरव पक्ष की ओर से लड़ने का इच्छुक था। भगवान् कृष्ण ने नीति पूर्वक उसे मनवाकर उसकी युद्ध देखने की इच्छा पूरी करने के लिए उसे एक ऊंचे बांस पर रखवा दिया। युद्ध समाप्ति पर उससे अपने क्षेत्र को लौटना चाहा तो उस का आदर पूर्वक वापसी यात्रा का प्रबंध किया गया। जब वह अपने साथियों सहित कामरूनाग नामक स्थान पर विश्राम कर रहा था तो स्थानीय लोग उसकी आदरपूर्वक पूजा–अर्चना करने लगे। लोगों के इस आदर भाव से प्रसन्न होकर उसने वहीं रहना पसंद किया। आज भी उस का विश्राम स्थल चच्योट तहसील में कमराह नाम से जाना जाता है।

वैदिक काल में हिमाचल प्रदेश के किरात राजा शंबर ने आर्यों के राजा दिवोदास के साथ 40 वर्षों तक युद्ध किया। अंत में उद्भ्रज नामक स्थान पर शंबर का मृत शरीर पाया गया। व्यास और यमुना नदियों के बीच शंबर के निनानवें किलों के पाए जाने का उल्लेख भी मिलता है। उस काल में प्रदेश में चार जनपद होते थे–औदुंबर, त्रिगर्त, कुलूत और कुलिंद। औदुंबर के अंतर्गत कांगड़ा, पठानकोट, गुरदासपुर और होशियारपुर तथा त्रिगर्त में सतलुज, रावी और व्यास आदि क्षेत्र आते थे। उस समय कुलिंद में शिवालिक और तराई के क्षेत्र आते थे। कांगड़ा और हमीरपुर वीरभूमि के नाम से प्रसिद्ध हैं। वहां के सबसे बहादुर राजा संसार चंद का कार्यकाल सन् 1775 से सन् 1823 तक रहा। नगरकोट का निर्माण राजा सुशम चंद्र ने महाभारत काल में किया था। 15–04–1948 को प्रदेश की तीस रियासतों का एकीकरण हुआ। सन् 1949 में इसमें जहां केवल चार जिले थे आज यहां कुल बारह जिले हैं। सोलन जिले की स्त्रियों के पारंपरिक आभूषणों में चाक, लौंग, बालू, तिल्ली, झुमके, बालियां, बेसर और ब्रागर प्रसिद्ध हैं। बच्चों के आभूषणों में कांगणु, घुंघरू और चांदी के ताबीज लोकप्रिय हैं।

धरती पर हिमाचल प्रदेश उत्तरी अक्षांश 33–22 से 33–12 तक तथा पूर्व देशांतर 75–47 से 79–4 तक स्थित है। इसके पूर्व में उत्तराखंड, दक्षिण में हरियाणा और

पश्चिम में पंजाब स्थित हैं। सोलन प्राचीन काल में कुलिंद जनपद का एक भाग था।

1. प्रदेश की सबसे नीचे की शिवालिक की पहाड़ियां समुद्रतल से 1050–4500 फुट के बीच की ऊंचाई पर हैं। इसमें मक्की, गेहूं, अदरक, गन्ना, धान, आलू और खट्टे फल उगाए जाते हैं।
2. मध्य हिमालय में पछाद, रेणुका, करसोग, धौलाधार, पालमपुर और चुराह आदि समुद्रतल से 4500–1350 फुट के बीच की ऊंचाई लिए हुए हैं। इसमें बीज का आलू और सामान्य फल उगते हैं।
3. ऊंचे पर्वतों वाले इस भाग में किन्नौर, पांगी और लाहुल स्पिति आते हैं जो समुद्रतल से 14000 फुट ऊंचे हैं। अति कम वर्षा वाले इस भाग में बर्फीली ठंड होती है। इसमें सूखे फल और मेवे पैदा होते हैं।
4. जसकर नामक यह पर्वत श्रृंखला समुद्रतल से 21000 फुट ऊंची है जो कश्मीर और चीन तक फैली है।

मंडी में कोलसरा की चट्टान पर मांडव्य ऋषि ने तपस्या की थी, जिसके कारण इसे मंडी कहा जाता है। मंडन या श्रृंगार प्रधान क्षेत्र भी मंडी कहलाता है। यहां भी अन्य जिलों की तरह शिव–शक्ति की पूजा की प्रधानता है। यहां के राजपरिवार के इष्टदेवता माधवराव या महाविष्णु हैं।

सोलन जिला के धर्मपुर विकास खंड के अंतर्गत बनासर का किला हमारी एक सांस्कृति धरोहर है। कहते हैं कि इसे शिवभक्त बाणासुर ने बनाया था। उसका राज्य उपरि हिमाचल तक फैला हुआ था। लोकश्रुति के अनुसार 17वीं शताब्दी में नेपाल के राजा ने हमला करके इसे अपने कब्जे में कर लिया था। उस सेना का मुख्य सिपाही अमरसिंह थापा था और उसने सोलन के आस–पास और भी अनेक किले बनवाए थे।

वैज्ञानिक तरीके से विश्व नियामक परमात्मा का नाम लेने से वह दवाई का काम करता है। धर्मशास्त्रों के अनुसार यह हर शारीरिक व मानसिक कष्ट को दूर करता है। यह सब न केवल हमारे पूर्वजों के अनुभवों पर आधारित है बल्कि पारंपरिक सनातन मर्यादा भी है। अमेरिका और इंगलैंड सहित दुनिया के अनेक देश इस तथ्य को सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं कि धर्मग्रन्थों में प्रतिपादित बीजमंत्रों की शक्तियां गुप्त और अनंत होती हैं। अपनी सीमाओं में बंधा चिकित्सा विज्ञान परमसत्ता की इस कृपाशक्ति को नहीं जान सकता। वास्तव में हमारे शरीर धारण करने का प्रयोजन जनकल्याण है। अनेक परिवारों में चली आ रही अनुभूत उपासना विधि में से अनेक ऐसे लाभ दायक सूत्र मिल सकते हैं, जिससे आम आदमी की समस्याएं भी हल हो सकती हैं। हमें अपने घर की पारंपरिक औषधियों का भी सम्मान

करना चाहिए।

हमारे युगों की व्यवस्था तीन गुणों पर आधारित है। महायुग की सत्वगुणावस्था सत्ययुग, रजोगुणावस्था त्रेतायुग, रज–तम अवस्था द्वापर और पूर्णतामसिक अवस्था कलियुग कहलाती है। इससे सृष्टि के भी तीन आयाम हैं–उद्भव, विकास और समाप्ति। हमारी लोकव्यवस्था भी इन्हीं पर आधारित है। ऊपर से नीचे क्रमशः सत्वगुणमय ब्रह्मलोक, राजसिक मृत्युलोक (पृथ्वी) और तामसिक पाताल लोक। ब्रह्मा जी ने ध्वनिविज्ञान मूलक प्रणव मंत्र की रचना, विष्णु ने उसे रूपरेखात्मक यंत्र और शिव ने उसे प्रयोगात्मक तंत्र रूप दिया।

इस प्रकार ये तीनों देवता उत्पत्ति, पोषण और नाश के प्रतीक बने। तंत्र का मुख्य लक्ष्य संहार या नाश के देवता शिव को प्रसन्न करना है।

प्रदेश के परशुरामतीर्थ रेणुका में दिन–रात पूजा–अर्चना चलती रहती है। परशुराम झील रेणुका झील से 100 मीटर उत्तर की ओर है। यहां के वन, मंदिर और आश्रम दर्शनीय हैं। भगवान् परशुराम सबसे छोटे और पांचवें भाई थे। ये विष्णु के अवतार हैं। त्रेता में अभिमानी सहस्रबाहु के अत्याचारों से ऋषि–मुनि व जनता पीड़ित थे। जमदग्नि और रेणुका ने विष्णु को प्रसन्न करके परशुराम को पुत्र रूप में पाया था। सहस्रबाहु अपने साथियों सहित जमदग्नि के

आतिथ्य से प्रसन्न होकर इतना ललचाया कि उनकी सर्वकामना पूरक कामधेनु को पाने के लिए उसने उन्हीं पर आक्रमण कर दिया। राजा स्वयं व उसके हजारों सैनिक मारे गए। राजा के पुत्रोंने चुपके से जमदग्नि का सिर काट कर महिष्मती पहुंचा दिया। इससे क्रोधित होकर परशुराम ने महिष्मती का ही विध्वंस कर दिया।

तमोगुणजन्य भौतिक पदार्थ प्रधान तंत्रशास्त्र का संबन्ध संहार के अधिष्ठातृ देवता भगवान् शिव से है। यह रहस्यमय शक्तियों पर विजय पाने का विज्ञान है। तमो गुण से जुड़े इस विज्ञान में भय और खतरों का सामना करना समान्य सी बात है। इस प्रक्रिया में सृष्टि की डरावनी प्रेतादि योनियों का सामना करना पड़ता है। इसका संबन्ध परमाणुमयी सावित्री शक्ति से है। इस साधना को वाममार्ग भी कहते हैं। सत्वगुण विरोधी इस विज्ञान की एकदम उल्टी प्रक्रिया है। इसके साधक को भयानक योनियों के आक्रमणों का सामना करना पड़ता है। इसकी साधना भी शमशान् जैसे भयानक स्थानों पर होती है। इसकी कष्ट साध्य प्रक्रिया केवल गुरू के मार्गदर्शन में होती है। वेदप्रमाण के अनुसार एकमात्र सत्वगुणी परमात्मा (शिव) से साधक को वे सभी सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं, जो तमोगुणी साधक को कभी भी प्राप्त नहीं होती।

मां भगवती साधना की साक्षात् स्वरूप हैं। ये

अपने भक्तों के इलावा अन्यों का भी सम्यक् पोषण करती हैं। नवरात्र संपूर्ण स्त्रीजाति को समाज में प्रतिष्ठित करने का त्योहार है। दुर्गा जगत् की समस्त शक्तियों का एकत्रित रूप है। इन दिनों में पड़वा और अष्टमी के व्रतों का विशेष माहात्म्य है। हमारे यहां पड़वा को जौ बोकर कलश के स्थापन–पूजन की परंपरा है। तंत्र–मंत्र और यंत्र का संपूर्ण मिश्रित ग्रन्थ दुर्गा सप्तशती है। इसके पाठ में शापोद्धार अनिवार्यतम है, जिसके रचयिता ब्रह्मा, वशिष्ठ और विश्वामित्र हैं। सप्तशती के पाठ में श्रद्धा और सुन्दर आचरण दोनों का होना अनिवार्य है।

प्रायः हर गांव में पूजित काली माता काल या समय या जीवन की नियंत्रिका हैं। काल या ज्योतिष के ज्ञान के लिए इनको इष्टदेवी माना जाता है। इनकी उपासना से न केवल काल अपितु कालातीत सनातन आत्मज्ञान का भी लाभ होता है। इनका काला शरीर इनके शाश्वत आदि स्वरूप का ज्ञापक है। ये समय के पूर्व और पश्चात् भी विद्यमान रहती हैं। इनकी वस्त्रहीनता इनकी माया से मुक्तता की प्रतीक है। अपने उपासक को भी ये माया से मुक्त कर देती हैं। ये सत्य की सहजावस्था में रहती हैं। इनके गले के मुंड उतने ही हैं, जितने कि आत्मज्ञापक संस्कृत भाषा के मूल अक्षर। इनके दांतों की सफेदी इनकी आंतरिक निर्मलता या निष्पक्षता है। इनके तीन नेत्र तीन काल हैं। इनका

श्मशानवास इनके पंचभूतात्मक आवागमन का केन्द्रबिन्दु है। माँ अभिमानियों के लिए संहारक लेकिन सत्य के शोधार्थियों के लिए करूणापूर्ण हैं।

जगन्माता माँ भगवती सीता की वीरता अपने आप में अनोखी थी। उनके पिता जनक ने शिव भक्ति करके शिव से धनुष प्राप्त किया था। सीता जी हर रोज उनके पूजा स्थान की सफाई किया करती थी। एक दिन जनक ने देखा कि सीता एक हाथ से शिव का दिया धनुष उठाकर दूसरे हाथ से सफाई कर रही है। सीता जी की इस अनोखी बहादुरी को देखकर पिता को उनके स्वयंवर के लिए यह शरत रखनी पड़ी कि जो शिवजी के धनुष को उठाएगा केवल उसके साथ सीता का विवाह किया जाएगा। उस समय इस शर्त को केवल भगवान् राम पूरा कर पाए थे। अतः सीता जी उनकी अर्धांगिनी बनी। ठीक भी है, समाने शोभते प्रीतिः के अनुसार विवाह केवल समान शक्ति या योग्यता वालों के साथ ही हो सकता है। उस दैवी विवाह के मंगलमय गीत आज भी हमारे विवाह समारोहों में गाए जाने की परंपरा है। समान गुणों के आधार पर विवाह की व्यवस्था करना एक श्रेष्ठतम परंपरा है, उसका सम्मान करना समय की जरूरत है।

सोलन और सामान्य ज्ञान (आधारभूत तथ्य और विचार)

सोलन में चिकित्सा एवं परिवार नियोजन संबंधी सेवाएं :–

डा. मुक्ता रस्तोगी। (प्रगतिशील महिला)।

सोलन में राजनीतिक के क्षेत्र में सेवाएं :–

मीरा आनन्द (भा.ज.पा.)। (प्रगतिशील महिला)।

सोलन में एल.आर. संस्थान में निर्देशक :–

प्रतिमा शर्मा। (प्रगतिशील महिला)।

सोलन में डी.एस.पी. प्रोबेशनर :–

श्वेता ठाकुर। (प्रगतिशील महिला)।

सोलन में स्पेशल ओलंपिक में गोल्ड मेडल :–

बबीता। (प्रगतिशील महिला)।

सोलन में समाज एवं मानवता की सेवा :–

सविता अग्रवाल। (प्रगतिशील महिला)।

सोलन में म्युजिक स्कूल संचालक :–

नमिता शर्मा (प्रगतिशील महिला)।

सोलन में महिला उत्थान में योगदान :–

विमला शर्मा। (प्रगतिशील महिला)।

हमारे प्रदेश के सौन्दर्य और स्वास्थ्य को अवैध खनन

निरंतर बिगाड़ रहा है।

हमारे भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों और संबंधों को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

प्रदेश की स्पिति घाटी के समदो बार्डर क्षेत्र में किसी तरह की तारबंदी न होना देश के लिए शुभ नहीं है।

कवि प्रदीप के अनुसार प्रेम आजकल दिखाए जा रहे विपरीतलिंगी प्रेम तक ही सीमित नहीं होता, उसके आयाम बहुत हैं।

प्राचीन पारंपरिक लोकतांत्रिक गांव मलाणा (कुल्लु) के लोग प्रायः अपने देवता के सिवा किसी अन्य की बात नहीं मानते हैं।

अगर निजी स्कूल शिक्षा के लिए अधिक लाभदायक हैं, तो इसकी सुविधा भी हर–गरीब अमीर को मिलनी चाहिए।

सर्वोपयोगी उद्देश्य 'सर्वजनहिताय' के लिए समस्त व्यक्तियों और समुदायों को अपने श्रम का दान करना चाहिए।

सोलन में स्थापित बलिदानी महापुरूषों के बुतों की सफाई और सुरक्षा का प्रबंध नगरपालिका प्रशासन के हाथ में दिया जाना चाहिए।

राजगढ़ में बनी पहाड़ी संस्कृति से संबंधित हास्य फिल्म 'कलियुगी महाभारत' एक प्रशंसनीय प्रयास है।

केला अनिद्रा, कब्ज, प्रदर, नकसीर और अल्सर में फायदेमंद है।

देवभूमि सोलन की मूल दैवी संपदाओं में ऑरगेनिक खेती, कर्मकांड और अध्यात्म विज्ञान प्रमुख हैं।

वेदान्तदर्शन का सरल और सर्वोत्तम भाष्य गीता है।

हमारे यहां विदेशी सेव के आयात पर शुल्क न होने से देशी सेब का उत्पादन हतोत्साहित हो रहा है।

रिटेल की अपेक्शा रक्षा और उद्योग के क्षेत्र में एफ.डी.आई. की छूट देश के लिए हितकारी हो सकती है।

सामरिक दृष्टि से भारत–चीन सीमा तक भारतीय रेल मार्ग का बनाया जाना अति अनिवार्य है।

भारतीय सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ निर्माता निर्देशक अभिनेता गुरूदत्त की सर्वोत्तम फिल्म 'साहब, बीबी और गुलाम' है।

इतिहासकारों के अनुसार जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने अपने लिए धर्माधारित देश बनाने के लिए देश में दंगे करवाए थे।

सर्वजीवहितकारी आत्मा पर विश्वास करने का नाम ही आस्तिकता है।

पं. संतराम बी.ए. अपनी इच्छा से साहित्य साधना को धर्म मानते थे।

क्या जीवबलि की परंपरा देवता की इच्छा पर निर्भर है?

वैष्णव देवी आदि शक्ति पीठों की अर्जित आमदनी वहां के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पाटी (बसाल) के ब्राह्मणों का कुलेष्ट–मल्हाई।

बीशाग्राम मूलक ब्राह्मणों की इष्टदेवी–हिरठी।

बाईस दूधाधारी देवताओं का मंदिर–गुठाण।

वचा या बछ औषधि–ज्वर व भूतबाधा का निवारक।

कलियुग के माता–पिता–अहिंसा और क्रोध

(गुप्तांग पकड़कर स्त्री, मद्य, जुए और धन का लालच)।

राज्यनीति की अपेक्षा आदरणीय–राष्ट्रनीति।

हिमाचल प्रदेश की महती आवश्यकता–सोलन में वेदविद्या का विश्वविद्यालय।

गिरिपार क्षेत्र की बूढ़ी दिवाली के पर्व के दिन राजा बलि ने वामन भगवान् को पृथ्वी का दान दिया था।

पुराणों के अनुसार तमोगुण प्रधान कलियुग में आदमी की बुद्धि अनायास ही निंदित कर्मों की ओर प्रवृत्त होती है, उससे बचना चाहिए।

शिक्षक का परम धर्म शिक्षा देना है।

पं. मदनमोहन मालवीय के अनुसार दर्शन शास्त्र का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं अपितु उसे बदलना है।

शिक्षण की सबसे सशक्त, सस्ती, सुन्दर और ईकोफ्रेंडली सामग्री श्यामपट्ट, रंगीन चाकें, स्लेट, पट्टी

और कलम हैं।

कांगड़ा का राजा संसार चंद हिमाचल के अन्य राजाओं के प्रति शत्रुता का भाव रखता था।

संस्कृत भाषा के परंपरागत अध्ययनाध्यापन, शोध और विकास के लिए सोलन सर्वाधिक उपयुक्त भूमि है।

संस्कृत साहित्य में सभी वर्गों और समुदायों के लोगों के लिए विविध विषयों का वैज्ञानिक चिंतन मौजूद है।

राजा बलि के शासन काल में आसुरी संपत्ति की बढ़ोतरी हो जाने से दैत्य अपनी मनमानी करने लग गए थे।

हमारी पौराणिक कथाएं हमें अपने नित्य आत्मतत्त्व का अनुभव कराने में हमारी मदद करती हैं।

उत्तम चिकित्सक मरीजों के दुःख को अपना दुःख समझकर सेवा भाव से ही उन की आधी बीमारी नष्ट कर देते हैं।

महान् अन्ना हजारे के अनुसार विदेशी कंपनियां हमारे जमीन और जल को छीनकर हमारे देश में प्रदूषण पैदा कर रही हैं।

पहाड़ी लोकगायकी में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त श्री हेतराम तनवर की सुपौत्री कृतिका तनवर संगीत को नये आयाम देने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं।

मंदाग्नि के कारण पेट के साधारण दर्द में वैद्यनाथ शूलवज्रिणी वटी अच्छे परिणाम दे सकती है।

हमारी पावन संस्कृति विश्व को परस्पर प्रेम, भाईचारे और परधर्म के सम्मान का पाठ पढ़ाती है।

भारतीय संस्कृति का बीज तत्त्व अनेकत्व में एकत्व की अनुभूति करने में निहित है।

सत्य के प्रति श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होना संभव है।

समस्त देवताओं को किया गया प्रणाम एक ही महादेव (परमेश्वर) को प्राप्त होता है।

ब्रह्मज्ञान का तात्पर्य सभी वस्तुओं के अंदर मौजूद एक ही तत्त्व का अनुभव करना है।

संसार के सभी साधनों का लक्ष्य एममात्र अद्वैत की अनुभूति कराना है।

घर में नित्य भूतयज्ञ करने का अभिप्राय समस्त प्राणियों के निमित्त किया जाने वाला उपकार है।

जो शक्तिमान् इस संसार रूप ब्रह्मचक्र (चक्के) को धुमाता रहता है वही सत्य, शिव और सुन्दर है।

चरैवेति अर्थात् हम निरंतर सन्मार्ग पर चलते रहें।

हमारी संस्कृति का मूल प्रतीक सदा जल से निर्लिप्त रहने वाला कमल का फूल है।

घंटे की ध्वनि ने दैत्यों के तेज को नष्ट किया था और करता है।

पितरों की पत्नी का नाम स्वधा है।

स्थापित कलश में रखा गया पवित्र शमीपत्र रोगनाशक

माना जाता है।

स्वाहा माता को अग्नि देवता की धर्म पत्नी बताया गया है।

मेना (हिमालय की पत्नी) और धन्या (दशरथ की पत्नी) प्रजापति दक्ष की अयोनिजा या मानस कन्याएं थी।

हमारे तीर्थों के पुरोहित परंपरा से सम्माननीय होते हैं।

कार्तिक मास की पूर्णिमा को त्रिपुरासुरवध और मत्स्यावतार हुआ था।

सुंदर सत्य से भी अधिक सुंदर उसकी ओर जाने वाला रास्ता होता है।

आषाढ़ शुक्ल एकादशी के दिन हमारे शुभ कर्मों के साक्षी भगवान् विष्णु द्वापर में शंखासुर का वध करके चार महीनों के लिए सो गए थे।

क्रोध और हिंसा के परस्पर संभोग से कलियुग का जन्म हुआ था।

नेत्रविकार, मसूढ़ा दर्द और दाद में लाभदायक–गुलाबजल।

टांसिल, कफरोग और बुढ़ापे के कष्टों में लाभदायक–शहद।

हमारी हर असफलता हमारे लिए हमेशा एक नयी प्रेरणा देकर जाती है।

दूसरों की सद्भावनाओं का आदर करने वाला मनुष्य सदा श्रेष्ठ होता है।

विकास–अपनी अनुकूल संभावनाओं का सही उपयोग करना।

भूरेश्वर महादेव–सौतेली माँ के अत्याचारों से त्रस्त दो भाई–बहनों की शरण स्थली।

छट पूजा पति की लंबी आयु, पुत्र की प्राप्ति और परिवार की सुख–समृद्धि के लिए की जाती है।

प्रमुख एअर चीफ मार्शल ब्राउन के अनुसार अगर एअर फोर्स का इस्तेमाल किया गया होता तो चीन के साथ 1962 की लड़ाई का नतीजा अलग ही होता।

वृक्ष रूप देवता यक्ष कहलाते हैं।

पिशाच–वैदिक कालीन कच्चा मांस खाने वाले राक्षस जो हिमालय के उत्तर में रहते थे।

एशिया का सर्वोच्च पुल कंददौर प्रदेश की सबसे बड़ी झील गोविंद सागर पर बना है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार पवित्र और दृढ़ इच्छा सर्वशक्तिमान होती है।

गौ या कृष्ण का मन्दिर हमारी संस्कृति का एक आदर्श प्रतीक है।

बुझी हुई बाती सुलगाएं–अटल बिहारी वाजपेयी।

हो तुम्हारा हृदय और संकल्प अविरोधी सदा–डा. शमी शर्मा।

बघाटी बोली हमारे पूरे दैनिक कार्य व्यवहार की वाहक है।

हमारे यहां त्योहारों के दिनों में गाए–बैलों को भी व्यंजनों का भाग खिलाने की परंपरा है।

संपूर्ण स्वास्थ्यप्रद आटा–मल्टी ग्रेन (प्रबंधक श्री महेन्द्र ठाकुर, गांव–कून)।

बिहार और पिछड़े क्षेत्रों की भलाई का एकमात्र उपाय–आर्थिक आधार पर आरक्षण।

हमारा हर काम परोपकार की परिधि में संपन्न होना चाहिए।

गणेश (बुद्धि) के पूजन के बिना लक्ष्मी (धन) का पूजन व्यर्थ है।

घर में स्थायी संपत्ति की प्राप्ति के लिए धनतेरस के दिन देवताओं के खजानची कुबेर देवता का पूजन किया जाता है।

ब्राह्मण सम्मेलन के उपलक्ष्य में शोभायात्रा, गणेशपूजन, परशुराम पूजन, गायत्री हवन, पूर्णाहुति और विचार विनिमय करने की परंपरा है।

श्रेष्ठ आशीष–सारोग्यं विद्यावान्/विद्यावती/सौभाग्यवती भव।

पहाड़ी गाए का कृत्रिम गर्भाधान–नैनो तकनीक।

हमारे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए सर्वाधिक सुविधाजनक स्थल–मंदिर का परिसर।

पाकिस्तान को पैदा करने वाली भाषा–उर्दू (अरबी

लिपि)।

भारत के मुस्लिम शासकों की पराधीनता के कुल वर्ष–756

अग्रवालों की शाखाएं–गर्ग, बिंदल, जिंदल, मित्तल, कंसल, गोयल, सिंहल और बंसल आदि।

नाखुश कर्मचारी कंपनी का फायदा या नुकसान नहीं देखते, समय पूरा करते हैं।

अच्छी सोच वाले व्यक्ति के लिए कोई भी काम असंभव नहीं होता।

हम परोपकारपूर्ण योजनाओं में हमेशा यथाशक्ति अपना योगदान देते रहें।

15 साल की उम्र में विवेकानंद ने मेरे जीवन में प्रवेश किया................. सब कुछ उलट पलट गया–सुभाष चन्द्र बोस।

आधुनिक राष्ट्रीय धार्मिक आंदोलन के धर्मगुरू–स्वामी विवेकानन्द (संसार को भारत की पहचान बताने वाले)।

कर्म करते हुए ही भाग्य पर भरोसा करना संभव है।

वास्तुदोष निवारक–गोपूजन और सेवा।

रावण के सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पठनीय पुस्तक–वयं रक्षामः (आ. चतुरसेन)।

कर्त्तव्य कर्म में मन रमा रहे–विश्वनाथ।

रामेश्वरम् में प्रथम पूजनीय–हनुमान जी द्वारा लाया

गया शिवलिंग।

मंत्रसाधना के विकसित रूप क्रमशः–यंत्र और तंत्र।

ज्ञान प्राप्ति का साधन–चेतना का शोधन।

लक्ष्मी का निवास स्थान–माता–पिता, तुलसी, शालिग्राम, दुर्गा, शिवलिंग, शिवकथा, शंखध्वनि और सामाजिक समारोह।

उत्तम सुख निरोगी काया।

विष्णु प्रभाकर की कालजयी रचना–आवारा मसीहा।

त्रिदोष शामक–गिलोय या गुल्जे।

पुरूषाकार काल, समय या जीवन का रचनाकार आत्मा–सूर्य।

पुरूषाकार काल का मन–चन्द्रमा।

पुरूषाकार काल की शक्ति–मंगल।

पुरूषाकार काल की वाणी–बुध।

पुरूषाकार काल का चैतन्य विज्ञान–बृहस्पति।

पुरूषाकार काल का भौतिक या आणविक विज्ञान–शुक्र।

पुरूषाकार काल का न्यायाधीश–शनि।

जन्मना प्राप्त देव ऋण को चुकाने का उपाय–देवपूजनानुष्ठान।

जन्मना ऋषिऋण को चुकाने का उपाय–ऋषियों के ज्ञान का प्रचार–प्रसार।

जन्मना पितृऋण को चुकाने का उपाय–पितरों का

तर्पण और श्राद्ध।

यमराज के निकटतम प्राणी–कुत्ता और कौआ।

श्राद्ध–अपने पूर्वजों से प्राप्त सुख के लिए उन के प्रति कृतज्ञताज्ञापन।

आदर्श पत्रकारिता के 6 ककार–क्या, कहां, कब, कौन, क्यों और कैसे।

गणतंत्र के प्रथम आराध्य–गणस्वामी गणेश।

हमारी जिंदगी हमारे लिए हमेशा मनचाहा नहीं ला सकती।

नकारात्मक काम–किसी को नुकसान पहुंचाना।

सकारात्मक काम–किसी की मदद करना।

पार्वती–गौरी, उमा, जगद्धात्री, जगत् प्रतिष्ठा, शांतिरूपिणी और शिवा।

शिव–हर,महेश्वर, शंभु, शूलपाणि, पिनाक धृक्, महादेव और पशुपति।

जगन्नाथ पुरी में सोलन वासियों के पुरोहित–कलियुग नारायण, इष्टेट महल्ला–हरचंडी साही, डाकघर–पुरी, जिला पुरी, पिन 752 001, ओडिशा।

नकारात्मक सोच का एक संभावित कारण–प्रतिकूल विंशोत्तरी।

शिव के आठ रूप–भव, पशुपति, महादेव, ईशान, शर्व, रूद्र, उग्र और अशनि।